CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

16.3

मानव-भाषा

: प्रणेता :

स्वामी सत्यभक्त

सत्याश्रम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्ग संख्या.................. प्राप्ति-संख्या.....................

ग्रन्थ-कार्ड

श्री गणेश वर्णी दि० जैन (शोध) संस्थान

ग्रन्थागार

नरिया, वाराणसी-५

ग्रन्थ नाम मानव भाषा

लेखक स्वामी सत्य भक्त

की सत्यलोक यात्रा] ॥।) हिन्दू साइयों से

अग्निपरीक्षा-[अन्धश्रद्धा- हिंदूमुसलिम मेल

नाशक कहानियाँ] ॥।) हिंदू मुसलिम इत्तहाद [उर्दू]

(शेष पृष्ठ १९६ पर)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मानवभाषा

(मनुष्यमात्र के लिये सरल और नियमित नई भाषा)

: निर्माता :

स्वामी सत्यभक्त

(संस्थापक-सत्यसमाज)

: प्रकाशक :

सत्याश्रम वर्धा (मध्यप्रदेश)

अपरैल ११९५० इतिहास संवत्

मूल्य दो रुपया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशक—
चुन्नीलाल कोटेचा
मंत्री–सत्याश्रम वर्धा

: सूचना :

जो सज्जन पुस्तक का गहराई से अध्ययन करना चाहते हों वे पहिले 'शुद्धि अशुद्धि' और 'पूर्ति' के अनुसार पुस्तक को शुद्ध करलें। पृ. १८८ से १९५ तक शुद्धि अशुद्धि और पूर्ति दी हुई है।

मुद्रक—सदाशिव गोमासे
मैनेजर–सत्येश्वर प्रि. प्रेस
सत्याश्रम वर्धा (म. प्र.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रास्ताविक

सत्यसमाज के चौबीस जीवन सूत्रों में एक सूत्र यह भी है कि मनुष्यमात्र की एक भाषा होना चाहिये जिससे सब मनुष्यों की एक जाति बनने में सुभीता हो। वह भाषा कैसी हो, उसमें आजकल की भाषाओं के क्या क्या दोष न हों और क्या क्या सरलता हो इसका विवेचन सत्यामृत व्यवहार कांड में किया गया है। पर इसके साथ सवाल यह था कि वह भाषा बने कैसे ?

इसका सब से उत्तम उपाय यह था कि संसार की सब सरकारें संयुक्तराज्य परिषत् में यह प्रश्न उठातीं और इस काम के लिये समिति बनवातीं, जो अनेक देशों के भाषाशास्त्रियों के सम्मेलन से एक सरल और नियमित मानवभाषा का निर्माण करतीं। फिर उस भाषा का प्रचार सभी सरकारें करने लगतीं।

पर इसप्रकार की आज कोई सरकार नहीं है। सरकारें खुद भाषा की एकता के सिद्धांत में विश्वास नहीं करतीं। हरएक सरकार समझती है कि होश्यारी से काम करने से विश्वशान्ति की समस्या हल हो जायगी। जब कि असल बात यह है कि मनुष्यमात्र में एक जातीयता तथा एक राष्ट्रीयता के सिद्धांत को व्यवहार में लाये बिना युद्ध, राष्ट्रीय-संघर्ष आदि नहीं रुक सकते। संघर्ष की तैयारी के लिये कुछ समय तक शांति रह सकती है पर शांति से अशान्ति की तैयारी का नाम शान्ति नहीं है। यह तभी सम्भव है जब मनुष्यमात्र की एक जाति हो। और एक जाति बनने में सबसे बड़ी भारी बाधा भाषाओं का भेद है, जो कि सरल और नियमित मानवभाषा के निर्माण के बिना दूर नहीं होसकता।

पर यदि लोगों के मन में यह विश्वास हो कि भाषा बनाने से बनती नहीं है, और आज की किसी भाषा को मानवभाषा बनाया नहीं जासकता तो जब तक कोई भाषा लोगों के सामने उपस्थित न की जाय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तब तक वे इस बात पर विश्वास करना तो दूर, ध्यान भी नहीं देसकते। और ऐसी भाषा बनाने का काम इतना बड़ा, बहुसमय-साध्य, बहुश्रम-साध्य, बहुधनसाध्य, और बहुविद्वज्जन-सहायतासाध्य था कि इसकी योजना कैसे की जाय यह सूझ नहीं पड़ता था। सोचता था कि मुझ अकेले से क्या होगा और मेरे पास समय भी कहां था। हर माह एक मासिक पत्र अपने सन्देशों से भरना पड़ता है, प्रतिदिन चार पांच घंटा पत्रव्यवहार आदि में खर्च करना पड़ता है, आश्रम के छोटे बड़े सब कामों की देखरेख रखना पड़ती है, और प्रचार का भ्रमण भी एक के बाद एक होता रहता है, ग्रंथनिर्माण और प्रकाशन का काम भी कम नहीं है, आगंतुकों की शंका समाधान तथा चर्चा के लिये भी समय देना पड़ता है इसलिये वर्षों तक ऐसे नीरस कठिन उपेक्षणीय और विशालकार्य को हाथ लगाने की हिम्मत न पड़ी। पर यह बात रही सदा खटकती ही। अन्त में कुछ वर्ष पहिले एक दिन यही विचार किया कि इसके लिये किसी दूसरे की या बड़े साधनों की बाट देखना फजूल है जैसे बने वैसे मुझे ही यह कार्य शुरु करना चाहिये। इसलिये किसी तरह पंद्रह दिन का समय ऐसा निकाला कि जब मैं करीब चार पांच घंटे प्रतिदिन इस काम में दे सकूं। और इसका परिणाम यह हुआ कि मानवभाषा का व्याकरण करीब करीब तैयार होगया।

पर अकेले व्याकरणसे क्या होता? अगर धातुकोष और शब्दकोष न दिया जाय तो व्याकरण के नियम अजमाये कहां जायँ? मानवभाषा का खयाल भी लोगोंको किस तरह आये। पर धातुकोष शब्दकोष निर्माण काफी समय तथा काफी सतर्कता और श्रम चाहता था। पर समय का अभाव था इसलिये काम रुकगया और सम्भवतः एक वर्ष रुका रहा।

फिर सोचा कि पुस्तक को किसी तरह प्रेसमें देदेना चाहिये। जब अधूरी पुस्तक छपजायगी तब उसे पूरी करने का दबाव पड़ेगा और किसी तरह समय निकल ही आयगा। पहिले भी कई ग्रंथ मैं इसी ढंग से लिख चुका था। इस तरह पुस्तक प्रेसमें देदीगई। कुछ भाग छपभी गया। पर समय न मिला। क्योंकि यह कार्य प्रतिदिन दिनका आधेसे अधिक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समय चाहता था और वह मेरे लिये निकालना बहुत कठिन था। खैर। एकाध वर्ष तक वह कार्य रुका पड़ा रहा। इसके बाद फिर कुछ समय निकाला। एकाध बार कार्य करने पर फिर रुका। इस प्रकार चार बार हुआ और इसमें कई वर्ष निकल गये। पुस्तक का कागज भी बदलता रहा और पुराना टाइप भी घिसजाने से खराब होगया इसलिये दूसरे नये टाइपमें बाकी पुस्तक छपी।

लम्बा समय बीत जाने से उसमें अदल बदलभी काफी हुई। छपे हुए कुछ पृष्ठ तो अलग कर देना पड़े और उनके स्थानमें नये छपाना पड़े। कुछ परिवर्तनों और परिवर्धनों को शुद्धि अशुद्धि और पूर्ति में देकर जोड़ना पड़ा। किसी तरह पुस्तक पूरी हुई।

पर यह पुस्तक पूरी मानवभाषा नहीं है किन्तु उसका छोटासा नमूना है। जितनी धातुएँ दी हैं उससे तिगुनी चौगुनी धातुएँ चाहिये और शब्द भंडार तो पचास गुणा। पर यह सब प्रारम्भ में हो नहीं सकता था इसलिये कुछ खास खास शब्द देदिये हैं तथा धातु भी।

शब्दनिर्माण में मानवभाषा के सिद्धांतों के पालन करने की कोशिश तो पूरी की गई है पर नजरचूक से तथा पूरा समय न देपाने से थोड़ी बहुत त्रुटियाँ रहगई होंगी, उन सब का सुधार तो दूसरी आवृत्ति में होसकेगा, जब मैं स्वयं इस पुस्तक को गौर से बार बार पढ़ डालूंगा और कुछ रचनाएँ भी बनाडालूंगा।

पिछले भाग में दीहुई गद्यपद्य रचना बनाते समय जिन त्रुटियोंका पता लगा वे सुधारी गईं या पूर्त्ति कीगई पर उसीसे इस बात का पता लगा कि इस विषयमें अभी असीम काम करना है। यथाशक्य उसे करने का या करते रहने का विचार है।

मानवभाषा सब भाषाओं से सरल और नियमित है इसका यह मतलब नहीं कि जिसने इसे सीखा नहीं है वह सुनते ही समझ जायगा। प्रारम्भ में एक शब्द भी समझ में न आयगा। हिन्दी अंग्रेजी उर्दू संस्कृत के परिचित शब्द भी नये व्याकरण के रूप में आने के कारण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जल्दी समझमें न आयँगे। एक बार परिचित होजाने पर और कुछ अभ्यास होजाने पर ही समझमें आयेंगे। हां! दूसरी भाषाओं की अपेक्षा वह परिचय शीघ्र होसकेगा।

एक अंग्रेज को हिन्दी सीखने में जो कठिनाई है और एक हिन्दीवाले को अंग्रेजी सीखने में जो कठिनाई है वह दोनों को मानव भाषा सीखने में नहीं है। यह होसकता है कि एक गुजराती हिन्दी को मानवभाषा से भी जल्दी सीखले और अंग्रेज फ्रेंच को जल्दी सीखले, पर इससे हिन्दी या फ्रेंच मनुष्य मात्रकी दृष्टिसे सरल नहीं होजाती। मानवभाषा का निर्माण मनुष्य मात्रकी दृष्टि से किया गया है। परिचय के कारण या मातृभाषा से मिलती जुलती होने के कारण यदि कोई भाषा सरल मालूम होती है तो उसे सरल न समझना चाहिये, सरलता के लिये देखना चाहिये कि उसका व्याकरण कितना नियमित है, धारणा शक्ति पर कितना कम जोर पड़ता है और संयुक्ताक्षरों की कितनी कमी है। इसप्रकार एक बिलकुल अपरिचित और दूर की भाषा की अपेक्षा मानव-भाषा कितनी जल्दी सीखी जासकती है। पुस्तक देखने से पता लगेगा कि इस दृष्टि से मानवभाषा बहुत सरल है। और वह काफी जल्दी सीखी जासकती है।

पुस्तक देखने से यह भी पता लगेगा कि मानवभाषा में अर्थ की व्यञ्जना कितनी सूक्ष्म और स्पष्ट है। आजकी भाषाओं में कर्तृवाच्य कर्मवाच्य भाववाच्य पाये जाते हैं पर मानव भाषा में करणवाच्य सम्प्र-दानवाच्य अपादानवाच्य आदि भी पाये जाते हैं। लिंग व्यवस्था सरल स्पष्ट और नियमित तो है ही, साथ ही उसके द्वारा सरलता से ऐसे व्यंग्य भी किये जासकते हैं जो आजकी भाषाओं में सुलभ नहीं हैं।

अभी इस भाषा की सिर्फ संक्षिप्त रूपरेखा ही रक्खी गई है, इसका कोई साहित्य नहीं है, पर धीरे धीरे इसका साहित्य निर्मित होगा, खुद मैं भी इस भाषा में थोड़ा थोड़ा साहित्य निर्माण करने का विचार रखता हूं। तब इसकी खूबियों पर अच्छा प्रकाश पड़ सकेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फिर भी मेरा यह दावा नहीं है कि मानवभाषा के रूपमें यही भाषा चले, इससे सरल और अच्छी भाषा बने तो मैं उसका स्वागत करूंगा। और यह मानवभाषा, इससे भी अच्छी मानवभाषा की भूमिका के रूप में इतिहास की चीज बनकर रहजायगी। पर उसकी बाट देखते हुए बैठना नहीं है। अधिक से अधिक इसका साहित्य निर्माण करना है और अधिक से अधिक इसका प्रचार करना है।

इस समय यह हिन्दी भाषा के जरिये ही तैयार की गई है किन्तु आगे अंग्रेजी आदि की आवृत्ति भी तैयार करना है। उसमें हिन्दी की अपेक्षा अंग्रेजी आदि की आलोचना अधिक की जायगी। और तब तक इसका रूप और निखर जायगा तथा समृद्ध भी होजायगा।

आज तो ऐसे पाठकों की कमी न होगी जो इस प्रयत्न को एक तरह का पागलपन या शेखचिल्ली का स्वप्न समझेंगे। पर आज नहीं तो सौ पचास वर्ष बाद लोग गम्भीरता से इसकी आवश्यकता का अनुभव करेंगे। उस समय यह मानवभाषा मानवभाषा मानी जाय या नहीं, पर एक न एक नई मानवभाषा का प्रचार अवश्य किया जायगा।

मेरा विश्वास है कि अगर कोई शिक्षित व्यक्ति एक माह भी अच्छी तरह इसके पीछे खर्च करदे तो वह इस भाषा का साहित्य समझने लगेगा और काम चलाऊ बोलने लगेगा भले ही उसकी मातृभाषा कोई भी हो।

इस भाषा को सीखने के लिये एक शिक्षित व्यक्ति को गुरु की आवश्यकता नहीं है इसलिये अपने आप इसका थोड़ा थोड़ा अभ्यास कर लेना चाहिये। फिर भी अगर आवश्यकता हुई तो इस काम के लिये शिविर योजना भी की जायगी। जो लोग मनुष्यमात्र में एक जातीयता के सिद्धांत में विश्वास करते हैं, चाहते हैं कि राष्ट्र राष्ट्र जाति जाति के द्वंद दूर हों उन्हें एक मानवभाषाके प्रचारकी कोशिश अवश्य करना चाहिये।

मैंने सत्येश्वर गीता में मानवभाषा अध्याय में इस विषय में जो कुछ लिखा है उसका कुछ अंश यहां उद्धृत किया जाता है इससे भी पाठक मानवभाषा की आवश्यकता का अनुभव कर सकेंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गीत-७९

मानव तू क्यों बना गमार।
कर जगभर के लिये एक भाषा का आविष्कार।
मानव क्यों तू बना गमार॥ २१२० ॥
गुफा छोड़कर महल बनाये।
वल्कल छोड़ वस्त्र पहिनाये॥
फिर ऊबड़ खाबड़ भाषा का उठा रहा क्यों भार।
मानव क्यों तू बना गमार॥ २१२१ ॥
भाषा लिपि न जन्म से पाई।
मानव ने थी कभी बनाई॥
युग युग में बदला पर जगकी मिटी नहीं बेगार।
मानव क्यों तू बना गमार॥ २१२२ ॥
अब यह वैज्ञानिक युग आया।
जगत एक बाजार बनाया॥
सब से मिलना जुलना है अब कर भाषा-विस्तार।
मानव क्यों तू बना गमार॥ २१२३ ॥
मानव मानव सब हमजोली।
सरल शुद्ध नियमित हो बोली॥
मानवभाषा एक बने फिर एक बने संसार।
मानव क्यों तू बना गमार॥ २१२४ ॥

गीत-८०

मानव, मानवभाषा बोल।
भाषा का घमंड मत कर तू सब का हिया टटोल।
मानव मानवभाषा बोल॥ २१२५ ॥
भाषाओं का बोझ उठाये।
कहां कहां तू आये जाये॥
एक सरल मानवभाषा से दुनियाभर में डोल।
मानव, मानवभाषा बोल॥ २१२६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुनियाभर में आना जाना।
सब को मनकी बात बताना॥
मानवभाषा से भावों का मन मनमें रस घोल।
मानव मानवभाषा बोल ॥ २१२७ ॥
ऊबड़खाबड़ ये भाषाएँ।
कैसे जगको एक बनायें॥
सरल शुद्ध नियमित भाषा से घट घट के पट खोल।
मानव मानवभाषा बोल ॥ २१२८ ॥

गीत-८२

कैसी माया में भरमाया।
टुकड़े टुकड़े जगत बनाया॥
जन्म समय मानव के शिशुका गला एकसा होता।
एक सरीखा स्वर होता है एक सरीखा रोता॥
विधि ने बोली एक बनाई एक बनाई काया।
कैसी माया में भरमाया ॥ २१३२ ॥
सब भाषाओं में स्वर व्यञ्जन एक सरीखे आये।
आगे पीछे जोड़ तोड़कर नाना शब्द बनाये॥
संकेतों के भेदभाव ने भाषाभेद कराया।
कैसी माया में भरमाया ॥ २१३३ ॥
जब मानव थे जुदे जुदे तब जुदी जुदी थी बोली।
अब सब का बाजार एक है एक जगत की टोली॥
पर अब तक मानव ने भाषा-भेद नहीं विसराया।
कैसी माया में भरमाया ॥ २१३४ ॥
एक सरीखे स्वर व्यञ्जन सब रोना हँसना गाना।
संकेतों में परिवर्तन कर बोली एक बनाना॥
मानव भाषा एक बने तब मिटे भेद की माया।
कैसी माया में भरमाया ॥ २१३५ ॥

सत्याश्रम वर्धा (मध्यप्रदेश)
३० फरवरी १९५० इ. सं.
} सत्यभक्त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय-सूची

विषय	पृ.
मानवभाषा की जरूरत	८
आज की भाषाएँ	१३
लिंगों की गड़बड़ी	,,
कारक दोष	१५
पुरुषरूप दोष	१७
क्रिया दोष	१७
अन्य दोष	१८
मानवभाषा	१६
१ परिपूर्ण वर्णमाला	,,
२ भाषानिर्माण की सूचनाएँ	२०
३ सन्धि नियम	,,
४ लिंगनिर्णय	,,
५ संज्ञा शब्द	२२
६ विभक्ति चिह्न	२३
७ सर्वनाम	२५
८ विशेषण	२६
९ क्रिया	२८
१० क्रियाविशेषण	४०
११ अव्यय	४८
१२ उपसर्ग	५२
१३ कृदन्त	,,
१४ तद्धित	५४
१५ समास	५५
१६ गिनती (गिनो)	५७
१७ कौटुम्बिक शब्द	६१
१८ शब्द रचना	६८
शब्दकोष	
भोजन शाला (इटोकुरम)	७१
घर [रीहेत]	७५
वस्त्राभूषण (घर)	७६
शरीर [मूम]	८०
प्राणी [जीव]	८३
विश्व [शोवस]	८६
वस्ती [लंत्रास]	८७
यान (यान)	,,
बाजार (याश)	८८
मापतौल (मिपो सेगो)	८९
छापाखाना (प्रिंटोग्राज)	,,
कारखाना (मुंकरीह)	१०
आफिस (आज)	९१
शासनतंत्र (रोजोतंत)	,,
सभा (उंगु)	९२
उत्सव (होनन्दो)	९३
संगीत [टब्रो]	९४
संस्था [शंजु]	,,
शास्त्र [ईन]	,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय	पृ.
धर्म [धर्मो]	९५
दर्शन (लिंको)	९७
न्याय (इंकोधानो)	,,
व्याकरण (इकोधान)	९९
काव्य [भायेत]	१००
छन्द गीत [तिम चांम]	१०१
वैज्ञानिक तत्त्व	१०३
चिकित्सा (थिचो)	१०५
वाक्य रचना [पूनो]	१०६

विषय	पृ.
धातुकोष	
(मानवभाषा से हिन्दी)	११६
हिन्दी भाषा से मानवभाषा	१४६
अनुवाद (आचो)	१७९
पद्य (तीमो)	१८१
गीत	१८६
शुद्धि अशुद्धि	१८८
पूर्त्ति	१९१
सत्यभक्त साहित्य	१९६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समर्पण

मनुष्य जाति के हाथों में

मनुष्यो ! तुम सब की एक जाति है फिर भी तुम्हारे लिये यह कितने शर्म की बात है कि तुम सब की एक बोली नहीं है।

मनुष्यो ! तुमने छोटी से छोटी असुविधा को दूर करने के लिये एक से एक बढ़कर आविष्कार किये हैं। कल का आविष्कार आज के लिये पुराना होजाता है पर भाषा के मामले में तुम पुरानी से पुरानी ऊबड़ खाबड़ भाषाओं से चिपटे हो, यह तुम्हारी वैज्ञानिकता का दिवालियापन नहीं तो क्या है ?

मनुष्यो ! तुमने दुनियाभर में आने जाने के लिये यातायात के एक से एक बढ़कर साधन बनाये हैं पर एक दिल के पास दूसरे दिल को जाने के लिये जो सब से बढ़िया साधन एक भाषा है उसे तुम नहीं बना पाये यह तुम्हारी बौद्धिक कायरता नहीं तो क्या है ?

क्या इन बातों के रहते तुम बुद्धिमान प्राणी मनुष्य कहे जासकते हो ? जरा इन बातों पर विचार करो। आशा है अपनी आदमियत की रक्षा के लिये तुम्हें एक भाषा की जरूरत महसूस होगी। तब तुम समझोगे कि यह पुस्तक तुम्हारी जरूरत को पूरा कर सकती है इसीलिये तुम्हारे हाथों में यह मानवभाषा समर्पित करता हूँ।

हितैषी
सत्यभक्त

सत्याश्रम वर्धा
१७-६-४७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

— मानवभाषा प्रणेता —

❀ स्वामी सत्यभक्त ❀

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मानवभाषा की जरूरत

आज पहाड़ और समुद्र की सीमाएँ टूट चुकी हैं यातायात के बढ़े हुए साधनों से प्रायः एक दिन में मनुष्य पृथ्वी का चक्कर लगा सकता है, दुनिया के सब देशों का सब देशों से राजनैतिक और आर्थिक सम्बन्ध स्थापित होगया है, सब राष्ट्रों में शांति बनाये रखने और मेल मिलाप बढ़ाने के लिये राष्ट्रसंघ सुरक्षापरिषद् सरीखी अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएँ सब सरकारों के सहयोग से बनरही हैं इतना होनेपर भी मनुष्य के लिये यह शर्म की बात है कि सब मनुष्यों की एक मानवभाषा नहीं है। मनुष्य मनुष्य में सहयोग और एकता का सब से मुख्य और व्यापक साधन भाषा है भाषा के एक होनेपर ही मनुष्य मनुष्य के पास आता है उसमें एक जातीयता और एक राष्ट्रीयता की भावना पैदा होती है, जो कि विश्वशांति और मानवता के विकास के लिये जरूरी है।

मनुष्य वैज्ञानिक दृष्टि से कितना भी तरक्की कर जाय परन्तु जब तक मनुष्य मात्र में और राष्ट्र राष्ट्र में एक जातीयता या एक राष्ट्रीयता का भाव नहीं आता तब तक मनुष्य की शक्तियाँ आपस में लड़लड़कर बर्बाद होती रहेंगी। महायुद्ध होते रहेंगे, एक राष्ट्र दूसरे को लूटने की कोशिश करता रहेगा इस तरह वैज्ञानिक विकास मनुष्य का भक्षक साबित होता रहेगा, इससे बचने के लिये मनुष्यमात्र की एक जाति और एक राष्ट्र बनाना पड़ेगा, सब में सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करना पड़ेगा। इसके बिना हमारी गुजर नहीं, हम जीवित नहीं रह सकते।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पर यह काम तब तक नहीं हो सकता या अच्छी तरह नहीं होसकता जब तक मनुष्यमात्र की कोई एक भाषा न हो। यों भी मनुष्यमात्र की एक भाषा की जरूरत तो है ही। आजकल के आर्थिक राजनैतिक सम्बन्ध और यातायात की सुलभता के कारण आना जाना खूब बढ़ गया है पर एक भाषा के बिना आने जाने का ठीक ठीक उपयोग नहीं होने पाता। मैं जापान चीन रूस जर्मनी फ्रांस आदि देशों में भ्रमण करना चाहता हूँ पर उन देशों की जनता के निकट परिचय में आने के लिये मुझे उनकी भाषा आनी चाहिये पर मैं सैकड़ों भाषाएँ कैसे सीख सकता हूँ ? मुझे तथा दूसरे लोगों को सुभीता तभी हो सकता है जब मैं उनकी और वे मेरी भाषा समझें, इस कारण से भी मनुष्यमात्र की एक भाषा होना चाहिये।

कोशिश की जाती है कि अमुक राष्ट्र की भाषा को विश्वभाषा बनाया जाय। अंग्रेजों का साम्राज्य तथा नस्ल बहुत फैलजाने से अंग्रेजी भाषा विश्वभाषा बनने का दावा कर रही है वह अमेरिका आस्ट्रेलिया में काफी फैली है एशिया आफ्रिका में भी उसके पैर जमे हैं, यूरोप में इंग्लैण्ड तो उसका घर है ही, पर यह फैलाव कृत्रिम है, साम्राज्यवाद दुनिया से उठेगा ही और उठना चाहिये भी, तब अंग्रेजी का स्थान सिर्फ इंग्लैण्ड और उत्तर अमेरिका में रह जायगा, यूरोप में तो आज भी फ्रेंच स्पेनिश का बोलबाला है, हिन्दुस्तान में हिन्दी या हिन्दुस्तानी ही फैल रही है इस प्रकार अंग्रेजी को विश्वभाषा का स्थान नहीं मिल सकता। न और भी कोई भाषा विश्वभाषा या मानवभाषा बनने का दावा कर सकती है। बात यह है कि संसार की सभी भाषाएँ ऊबड़खूबड़, अनियमित, और उच्चारण में कठिन हैं। उनका व्याकरण सीखने में वर्षों लगजाते हैं अच्छी तरह पांचसात वर्ष खर्च किये बिना कोई किसी भाषा में अच्छी तरह नहीं बोल पाता है, ऐसी कठिन और अनियमित भाषाओं को मानवभाषा बनाने का विचार करना ही मनुष्यता का दिवाला निकालना है।

यह निश्चित है कि एक राष्ट्र की भाषा को दूसरे राष्ट्र के सिरपर लादने से मानवभाषा का निर्माण न होगा। मानवभाषा तो हमें नये सिरे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

से बिलकुल नई बनाना पड़ेगी। जिसका व्याकरण छोटे से छोटा हो, नियमभंग अपवाद न हों या नाममात्र के हों, शब्द सरल और छोटे हों, और संसार की प्रायः सभी भाषाओं से जिसमें मदद लीगई हो ऐसी ही भाषा मानव भाषा बनसकती है। जिसे हर एक पढ़ालिखा आदमी एकाध माह में सीखकर काम चलाने लगे और जिसका सम्पूर्ण व्याकरण एक दो दिन से अधिक समय न ले। ये गुण आज संसार का किसी भाषा में नहीं हैं इसलिये आज की किसी भाषा को मानवभाषा बनाने की बात करना व्यर्थ है।

हम हर एक चीज का नया से नया माडल पसन्द करते हैं, परिश्रम बचाने के लिये मशीनों में तथा और चीजों में आये दिन सुधार करते हैं, कल की चीज आज हमें पसन्द नहीं आती, पर आश्चर्य की बात है कि भाषा के मामले में हम पुरानी से पुरानी और बेहूदी से बेहूदी भाषा से चिपके रहते हैं, असुविधाओं को दूर हटाने की कोशिश नहीं करते, एक अंग्रेज क्निफे (Knife) लिखकर नाइफ पढ़ने में जरा भी शरमिन्दा नहीं होता, यही हाल हर एक भाषाभाषी का है। वह अपनी भाषा की बेहूदगी से बुरी तरह पागल की तरह चिपटा हुआ है, उसके सुधार करने की बात ही उसके ध्यान में नहीं आती, बल्कि ध्यान दिलाने पर वह सभ्यता संस्कृति आदि की दुहाई देकर लड़ने लगता है। अपनी भाषा सीखने में उसे कम कठिनाई नहीं उठाना पड़ी है पर वह बेशर्मी से वही कठिनाई दूसरों पर लादना चाहता है और पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी सन्तान पर लादे रखना चाहता है। इसे झूठे घमण्ड के कारण पैदा हुए पागलपन के सिवाय और क्या कहा जासकता है? उचित तो यह है कि जैसे मनुष्य ने पुराने जंगली जमाने के औजारों साधनों के स्थानपर नये नये औजार और साधन बनालिये हैं उसी प्रकार पुरानी अविकासित कठिन अनियमित भाषाओं के स्थानपर नई विकसित सरल नियमित भाषा का निर्माण करे, और उसके द्वारा मनुष्यमात्र की सामाजिक राष्ट्रीय एकता की नींव डाले।

लोगों में एक भ्रम घर कर गया है। वे सोचते हैं कि भाषा बनाने से नहीं बनती वह स्वाभाविक है। इसीलिये व्याकरण को भाषा का गुलाम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कहा जाता है भाषा को व्याकरण का गुलाम नहीं। यह जंगली युग की विचारधारा का अवशेष भाषा सुधार और एक भाषा निर्माण में बाधक बना हुआ है। जिस समय मनुष्य गुफाओं में रहता था उस समय यही सोचता था कि घर तो बनाने से नहीं बनता वह प्राकृतिक है, नदी नाले बनाने से नहीं बनते वे प्राकृतिक हैं, खाद्यसामग्री पैदा करने से पैदा नहीं होती वह प्राकृतिक है, पर विकसित मनुष्य ने इन सब मूढ़ताओं को दूर हटा दिया। गुफाओं की जगह उसने एक से एक बढ़िया इमारतें बनाई नदी नालों से अधिक सुन्दर और व्यवस्थित नहरें निकालकर खेती का कायाकल्प कर दिया, स्वेज और पनामा की नहरें निकालकर नये समुद्र मार्ग तक बना डाले, खाद्यसामग्री के लिये प्राकृतिक फलों पर निर्भर रहकर उसने खेती और बगीचों से दुनिया ही बदलदी, हर बात में मनुष्य ने श्रम और बुद्धि से काम लेकर दुनिया का कायाकल्प किया है, ऐसे मनुष्य के लिये यह शर्म की बात होगी कि वह बेहूदी भाषाओं से चिपटा रहे और बुद्धिसाध्य व्यवस्थित मानवभाषा का निर्माण न करे।

यों धीरे धीरे भाषा के बारे में थोड़ा बहुत वह सुधार करता आया है। पुरानी संस्कृत भाषा के स्थान में उसने कम जटिल और सरल प्राकृत भाषाओंका उपयोग किया और उससे कम जटिल आजकी हिन्दी मराठी आदि का उपयोग कर रहा है इसलिये उसका व्याकरण भी बदलता रहा है संस्कृत में एक धातु के एक सौ अस्सी रूप बनते थे और एक धातु के रूपों से दूसरी धातु के रूप बनाने के तरीके दूसरे होते थे अब आज हिन्दी गुजराती मराठी में यह व्यर्थ का बोझ बहुत कुछ दूर होगया है, इस प्रकार धीरे धीरे मनुष्य भाषासुधार करता तो आरहा है पर यह इतना मन्द गति से होरहा है और दुनिया की भाषा-सम्बन्धी वंश परम्परायें इतनी जुदी जुदी हैं कि अब इनसे काम नहीं चल सकता। अब पुरानी इमारत की मरम्मत से काम नहीं चल सकता अब तो नई इमारत ही बनाना पड़ेगी, बुद्धिपूर्वक बिलकुल नई मानवभाषा का निर्माण करना पड़ेगा। ऐसी भाषाएँ बनने भी लगी हैं और करीब २०० बन चुकी हैं और उनमें तीन जिन्दा भी सुनीजाती हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस पुस्तक में ऐसी ही एक मानवभाषा का नमूना पेश किया गया है। मेरा यह दावा नहीं है कि जो नमूना मैंने बनाया है वही मानवभाषा बने। मैंने यह नमूना तो इसलिये बनाया है कि मानवभाषा के निर्माण की तरफ लोगों का ध्यान जाय और इस प्रयत्न की उपयोगिता सम्भवनीयता या व्यावहारिकता को लोग समझें। अच्छा तो यह होगा कि संसार के भाषाशास्त्रियों की एक परिषत् बनाई जाय उसके सामने ऐसे ऐसे अनेक नमूने पेश किये जायँ और उन सबके आधार से सब से सरल और सब से अधिक परिपूर्ण एक मानवभाषा का निर्माण किया जाय यही मानवभाषा सब देशों के शिक्षण क्रम में अनिवार्य कर दी जाय। जब तक जिसकी इच्छा हो तब तक वहां अपने देश की या प्रांत की भाषाएँ चालू रहें पर यह मानवभाषा—जो थोड़े ही दिनों में कम से कम परिश्रम में सीखो जासकती है—दूसरी भाषा के रूप में जरूर चालू हो। इसके जरिये विश्व के किसी मानव से कौटुम्बिक और सामाजिक सम्बन्ध स्थापित किया जायगा। मानवभाषा आज की भाषाओं पर किसी तरह की जबर्दस्ती न करेगी, प्रांतीय या राष्ट्रीय भाषाएँ निर्बाध रूप में अपना काम करें मानवभाषा को कोई आपत्ति नहीं पर अन्तर्राष्ट्रीय तथा अन्तरप्रांतीय व्यवहार के लिये मानवभाषा का अधिक से अधिक उपयोग होगा। अपनी मातृभाषा या राष्ट्रभाषा के साथ मानवभाषा का जानना हर एक शिक्षित व्यक्ति को अनिवार्य होना चाहिये।

हां! कुछ पीढ़ियों के बाद मानवभाषा का साहित्य समृद्ध होसकता है, सरलता के कारण इसका व्यवहार बहुत ज्यादा बढ़ सकता है ऐसी हालत में आशा की जासकती है कि आज की जटिल भाषाओं का बोझ मनुष्य स्वेच्छा से उतार फेंकें। जब हर एक क्षेत्र में मनुष्य वैज्ञानिक दृष्टिकोण से काम कर रहा है तो भाषा के क्षेत्र में भी उसे करना चाहिये। इसी ध्येय की पूर्ति के लिये मानवभाषा का यह नमूना पेश किया जाता है। आशा है मनुष्य मात्र में सहयोग बढ़ाने के लिये, दुनिया को एकराष्ट्र एक कौम बनाने के लिये इससे मदद मिलेगी।

मानवभाषा का यह नमूना पाठकों को कुछ अटपटा सा मालूम होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्योंकि आदमी जिस भाषा को बाल्यावस्था से सीखलेता है वह जटिल से जटिल और कर्णकटु क्यों न हो उसे वह सरल और मीठी मालूम होती है और उससे भिन्न नई भाषा में अटपटापन मालूम होता है। वह सरलता की कसौटी यह बनाता है कि जो अपनी भाषा से मिलती जुलती हो। मानवभाषा संसार की किसी खास भाषा के आधार से नहीं बनाई गई है इसलिये किसी को वह अपने से मिलती जुलती न मालूम होगी इस दृष्टिसे मानवभाषा की सरलता की परीक्षा न करना चाहिये। यद्यपि इसमें हिन्दी उर्दू संस्कृत अरबी फारसी के भी सरल शब्द लिये गये हैं तथा संसार की अन्य भाषाओं के शब्द भी लिये जायँगे फिरभी सभी को इसमें नयापन दिखेगा इसलिये हर एक को यह समझकर ही चलना चाहिये कि यह एकदम नई भाषा है। इसकी सरलता इस बातमें है कि इसके व्याकरण के नियम परिपूर्ण होनेपर भी थोड़ेसे थोड़े हैं अपवाद रहित हैं, तथा वर्णमाला के क्रमसे सरलता से याद रक्खे जासकते हैं। शब्दोंमें लम्बापन कम है संयुक्ताक्षर से शुरुआत न होने से तथा बीचमें भी संयुक्ताक्षर बहुत कम होने से उच्चारणमें सरलता है। संसार की किसी भी नई भाषा को सीखने की अपेक्षा इस भाषा को सीखने में परिश्रम और समय कमसे कम लगता है। शिक्षित व्यक्ति एक दिनमें ही इसका सारा व्याकरण याद कर सकता है।

होसकता है कि इससेभी सरल सुन्दर भाषा बनाई जासके, पर इसको देखकर मानवभाषा की राह में हम काफी आगे बढ़सकेंगे और इसकी जरूरत समझ सकेंगे तथा इसे व्यावहारिक भी मान सकेंगे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आज की भाषाएँ

आजकी भाषाएँ कितनी जटिल अनियमित तथा कंगाल हैं इसके ऊपर गौर करने से हमें मनुष्य की रूढ़िप्रियता पर तरस आता है कि वह इस वैज्ञानिक युग में भी कैसे इन भाषाओं से चिपटा हुआ है। यद्यपि इस छोटी सी पुस्तक में संसार की सब भाषाओंकी समीक्षा नहीं की जासकती पर किसी एक भाषा की ही समीक्षा करने से पता लगसकता है कि संस्कृति की अन्धता के कारण मनुष्य कैसी बेहूदी भाषाओं से चिपटा हुआ है। चूंकि यह पुस्तक हिंदी भाषा में लिखी जारही है इसलिये हिंदी की ही आलोचना यहां की जाती है। मौके मौके पर दूसरी भाषाओं की ओर भी संकेत कर दिया जायगा। और जिन भाषाओं की तरफ संकेत न किया जायगा उन भाषाओं को जाननेवाले भी उन दोषों को पढ़कर अपनी अपनी भाषा के दोष समझ सकेंगे।

१— लिंगोंकी गड़बड़ी

१-बहुतसी भाषाओंमें लिंगों की संख्या अपूर्ण है। हिंदीमें स्त्रीलिंग पुल्लिंग सिर्फ दो ही लिंग हैं। जड़ पदार्थ वाची शब्दों को भी स्त्री या पुरुष बनाना पड़ता है जो कि बड़ा कठिन, निराधारसा और अव्यवस्थित होता है।

२-जिन शब्दों से स्त्री पुरुष या नर मादा दोनों का बोध होता हैं उन्हें भी पुलिंग या स्त्रिलिंग या नपुंसक लिंग कहदिया जाता है। मनुष्य शब्द से नर नारी दोनों का बोध होता है पर मनुष्य शब्द पुल्लिंग है। कोयल शब्द से नर कोयल और मादा कोयल समझे जाते हैं पर कोयल शब्द स्त्रीलिंग है।

३-शब्द और अर्थ के लिंगों में कहीं कहीं बिलकुल उलटापन है। कलत्र शब्द संस्कृतमें नपुंसक लिंग है और दार शब्द पुल्लिंग है जब कि उनका अर्थ स्त्री है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४–भाववाचक संज्ञाओं को भी स्त्री या पुरुष बनादिया जाता है। मनुष्यत्व [त्व] हिन्दीमें पुल्लिंग (संस्कृत में नपुंसक लिंग) मनुष्यता स्त्रीलिंग।

५–जड़ पदार्थों को भी स्त्री या पुरुष बना दिया जाता है। मिट्टी स्त्रीलिंग पानी पुल्लिंग। हिन्दीमें सूर्य चन्द्र पुल्लिंग अंग्रेजीमें सूर्य पुल्लिंग, चन्द्र स्त्रीलिंग। ईंट दाल रोटी स्त्रीलिंग, पत्थर भात लड्डू पुल्लिंग। जब कि इनमें स्त्री या पुरुष का कोई चिन्ह नहीं होता।

निःसन्देह किसी युगमें इन शब्दोंके अर्थमें स्त्री या पुरुष के किसी गुण की समानता के कारण इन्हें स्त्री या पुरुष कहदिया गया। जैसे तेजस्वी होनेसे सूर्य पुल्लिंग, कोमल तथा शान्तिप्रद होनेसे चन्द्र स्त्रीलिंग, छोटी होनेसे तलैया स्त्रीलिंग बड़ा होने से तालाब पुल्लिंग आदि, पर यह समानता इतनी अनिश्चित और लुप्त है कि इसका पता नहीं लगाया जासकता, साथ ही विरोधी समानताएँ भी दिखती हैं जैसे–चन्द्र तारों से बड़ा दिखाई देता है इसमे उसे तारापति कहते हैं इसलिये उसे पुल्लिंग कहाजाय या कोमल होनेसे स्त्रीलिंग। छोटे छोटे दिखाई देने से तारों को स्त्रीलिंग कहाजाय या विज्ञान की मान्यता के अनुसार इन्हें बड़े बड़े सूर्य मानकर पुल्लिंग? ये सब झंझटें हैं। छोटेपन को स्त्रीत्व का प्रतीक और बड़ेपन को पुरुषत्व का प्रतीक मानना भी क्या अब उचित है?

६–शब्दों का रूप देखकर यह पता नहीं लगता कि यह पुल्लिंग या स्त्रीलिंग है। पानी और भात ईकारान्त और अकारान्त होनेपर पुल्लिंग है और रोटी और दाल स्त्रीलिंग हैं। जब कि इस विषय का कोई एक नियम होना चाहिये।

७–अनेक शब्दों के स्त्रीलिंग रूप और पुल्लिंग रूप बिलकुल विषम होते हैं। जैसे गाय बैल, स्त्री पुरुष, मादा नर, औरत मर्द, लेडी जेन्टिलमेन, आदि। वास्तव में सामान्य शब्द किसी एक नियम के आधार पर स्त्रीलिंग पुल्लिंग बनना चाहिये।

८–स्त्रीत्व वाची और पतीत्व वाची रूपों में बड़ी गड़बड़ी है। साला साली, बहिनभाई हैं जब कि मामा मामी पति पत्नी हैं। राज्य करने वाली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नारी को भी रानी कहते हैं और राज्य न करनेवाली किन्तु राजा की पत्नी कहलाने वाली को भी रानी कहते हैं। मास्टरी करने वाली भी मास्टरिन, और मास्टरी न करनेवाली किन्तु मास्टरकी पत्नी कहलानेवाली भी मास्टरिन। इस तरह बड़ी गड़बड़ी है।

६—अनेक शब्द अपने रूप के कारण एक ही शब्द के स्त्रीलिंगी पुल्लिंगी रूप मालूम होते हैं पर वास्तवमें वे जुदे जुदे होते हैं यहां तक कि लिंग भी बिलकुल उल्टा होता है जैसे माला माली। ऐसा लगता है कि माला शब्द पुल्लिंग है और उसीका स्त्रीलिंग रूप माली है जबकि दोनों के लिंग उल्टे हैं और अर्थ भी अलग अलग है। कहीं कहीं लिंगभ्रम नहीं होता पर अर्थभ्रम होता है। जैसे अंगूठा अंगूठी, छाता छाती, आदि।

२—कारक दोष

१—कारकों की संख्या अधूरी है। 'मैं तुम्हें प्रवास केलिये पचास रुपये देता हूँ' इस वाक्य में 'तुम्हें' और 'पचास रुपये' दोनों कर्म हैं फिर भी अलग हैं पर दोनों केलिये अलग अलग कारक नहीं हैं। 'तुम्हें' को अगर सम्प्रदान कहकर चौथी विभक्ति कहा जाय तो 'प्रवास केलिये' को क्या कहाजाय ? प्रयोजन और सम्प्रदान को अलग अलग कारकों की जरूरत है पर नहीं हैं। रूसी भाषा में अपादान है ही नहीं। सम्बन्ध या अधिकरण से उसका काम चलाते हैं।

२—विभक्ति प्रत्यय और उनके लगाने के नियम अव्यवस्थित हैं।
कहीं प्रथमा में कोई चिन्ह नहीं लगाते, जैसे 'घर'।
कहीं 'ए' या 'एँ' लगाते हैं जैसे 'लड़के' बातें।
कहीं 'याँ' लगाते हैं जैसे लड़कियाँ।
संस्कृत आदि भाषाओंमें तो और भी गड़बड़ियाँ हैं।
अब जरूरत इस बातकी है कि शब्द कैसा भी हो उसमें विभक्ति प्रत्यय एक सरीखा लगना चाहिये।

३—विभक्ति प्रत्यय अनेक विभक्तियों में कभी कभी मिल जाते हैं जैसे कर्म और सम्प्रदान दोनों में 'को' आता है। करण और अपादान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोनों में 'से' आता है। मैं जहाज से आया इसका मतलब समझना कठिन है। मैं जहाज देखने गया था इसलिये वहां से चला आरहा हूँ या जहाज द्वारा कहीं से आरहा हूँ। जहाज करण है या अपादान पता नहीं लगता। संस्कृतमें यह गड़बड़ी और भी ज्यादा है। वनानि प्रथमा और द्वितीया दोनों का बहुवचन है। रमे, सम्बोधन का एक वचन और प्रथमा का तथा द्वितीया का द्विवचन है। रामाभ्याम् तृतीया चतुर्थी पंचमी तीनोंका द्विवचन है।

४–कहीं प्रत्यय लगाना ठीक समझा जाता है कहीं प्रत्यय न लगाना ठीक समझा जाता है। मैं खाता हूँ, मैं खाऊंगा, मैंने खाया। यहां पहिले दो वाक्यों में 'ने' नहीं है अगर लगाया जाय तो गलत समझा जायगा। तीसरेमें 'ने' लगाना जरूरी है, न लगाया जाय तो गलत होजायगा। इस प्रकार के अपवाद क्यों होना चाहिये ?

५–विभक्ति लगाने के नियम भी काफी गड़बड़ हैं यह निर्णय करना कठिन होजाता है कि कब कौनसी विभक्ति लगाना। संस्कृतमें नमः के योग में चतुर्थी, आदि बहुतसे अपवाद हैं। दिनमें सोना मना है के बदलेमें दिनको सोना मना है, मैं वहां जाना है न होकर मुझको वहां जाना है, आदि गड़बड़ियाँ बहुत हैं। कहीं कहीं कर्म आदिमें भी विभक्ति चिन्ह लुप्त होते हैं। मैं लकड़ी तोड़ता हूँ, मैं लकड़ी मारता हूँ, इन वाक्योंमें से पहिले में लकड़ी कर्म है दूसरे में करण, पर विभक्ति चिन्ह है ही नहीं।

६–कहीं कहीं विभक्तिप्रत्ययों का अभाव है। हिन्दीमें सम्बन्ध विभक्तिका कोई चिन्ह ही नहीं। उसका काम तद्धित प्रत्ययों से चलाना पड़ता है इसलिये उसका उसको तुम्हारी आदि रूप बनते हैं। रूसी भाषा में भी कहीं कहीं इसी तरह काम चलाते हैं वहां भी सम्बन्ध विभक्ति में तद्धित प्रयोगों की तरह विशेषणरूप बनाये जाते है जो विशेष्य के लिंग के अनुसार अलग अलग होते हैं।

जैसे–वाश (तुम्हारा) वाशा [तुम्हारी] वाश्ये [नपुंसक लिंगमें तुम्हारा]

७–विभक्ति चिन्ह इस क्रम से नहीं हैं कि उनको याद करनेमें को

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुभीता हो। ने को से केलिये आदिमें स्वर या व्यंजन का कोई क्रम नहीं। इसी तरह अंग्रेजी के टू, बाइ, फार, फ्रोम, आफ आदि में भी कोई क्रम नहीं। यही हाल अन्यभाषाओं का है।

३—पुरुष-रूप दोष

१—उत्तम मध्यम अन्य पुरुष के रूप किसी क्रम से नहीं है, न स्वर मिलते हैं न व्यञ्जन, न उनका कोई क्रम, न एक वचनसे बहुवचन बनाने की एकरूपता। देखिये—

	उत्तम पुरुष		मध्यम पुरुष		अन्यपुरुष	
	एक.	बहु.	एक.	बहु.	एक.	बहु.
हिन्दी	मैं	हम	तू	तुम	वह	वे
अंग्रेजी	आइ	वी	दाउ	यू	ही, शी, इट्	दे
रूसी	या	मुइ	टुइ	वुइ	ऑन, ऑना ऑनॉ	ऑनी

संस्कृत अहम् आवाम् वयम् त्वम् युवाम् यूयम् सः तौ ते [पुं.]
द्वि. व. (द्वि. व.) सा ते ताः [स्त्री.]
तत् ते तानि[नपुं.]

२—किसी किसी पुरुष में लिंगभेद नहीं है किसी में है। रूसी और संस्कृत के अन्य पुरुष में पुल्लिंग स्त्रीलिंग नपुंसक लिंग के रूप अलग अलग हैं बाकी में एक हैं। इनमें अनेक रूप मिल भी गये हैं।

३—पुरुषवाची सर्वनामों की कारक रचना अनियमित है। तुमको तुमने आदि बोलेंगे पर तुम की तुमका आदि नहीं। अंग्रेजी में टु आई नहीं टुमी, आफ आई नहीं माइ, आफ ही नहीं हिज आदि अनियमित प्रयोग हैं।

४—क्रियादोष

१—संस्कृत आदि भाषाओं में तो क्रियाओं के इतने अधिक रूप बनते हैं और एक क्रिया के रूपों के तरीके दूसरी क्रिया के रूपों के तरीके से काफी भिन्न होने से वर्षों क्रियारूपों के समझने में लग जाते हैं। आज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की भाषाएँ यद्यपि इतनी जटिल नहीं हैं फिर भी उनमें काफी गड़बड़ी है।

२—हिन्दी में तो क्रिया में लिंग भी होता है जो अनावश्यक है।

३—सब क्रियाओं के रूप एक ढंग से नहीं बनते। खाना से खाया, तो जाना से गया, और होना से हुआ। नियमानुसार बनाने के लिये खाया जाया होया होना चाहिये था। पर नहीं होता।

४—विभिन्न कालों के लिये संयुक्त क्रियाओं की बहुत जरूरत पड़ती है। जैसे वर्तमान रूप 'जाता है' में सिर्फ जाना क्रिया से काम न चला, 'है' और मिलाना पड़ा। पर भूतकाल में नहीं मिलाया गया वहाँ 'गया' ही रहा। 'जारहा हूँ' आदि में जाने के साथ 'रहना और होना क्रियाएँ मिलाना पड़ीं, अंग्रेजी में भी 'हैव' आदि क्रियाएँ मिलाना पड़ती हैं।

संस्कृत की अपेक्षा सरल होनेपर भी क्रियाओं के रूपों में इतनी जटिलता और कठिनता है कि मातृभाषा वालों को भी उसके सब रूपों के समझने में दिक्कत जाती है।

७—अन्यदोष

यहां खास बातों को लेकर प्रचलित भाषाओं के दोष बताये गये हैं। पर कृदन्त तद्धित आदि की जटिल और विविध रूपों की आलोचना में काफी विस्तार होगा। आजकल की भाषाओं में शब्दों के रूप जितने क्लिष्ट होते हैं लम्बे होते हैं संयुक्ताक्षरों से भरे होते हैं, प्रारम्भ में ही संयुक्ताक्षर होते हैं, इन सब की विवेचना करने की जरूरत नहीं है। मानव-भाषा ऐसी बनाना है जिसमें ये दोष न हों। यहाँ प्रचलित भाषाओं की विशेष आलोचना नहीं की जाती। मानव भाषा के प्रकरणों को देखकर हर पाठक को अन्य भाषाओं के व्याकरण आदि से तुलना कर लेना चाहिये। तब समझ में आजायगा कि मानव भाषा के व्याकरण धातुकोष रिश्तेदारी के शब्द आदि में क्या विशेषता है। उसमें कितनी बुद्धिसंगतता है जिससे रटने पर अधिक जोर न पड़े।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मानवभाषा

१—परिपूर्ण वर्णमाला

स्वर—अ आ इ ई उ ऊ ए ए ऐ ऐ ओ ओ औ औ

अल्पप्राण—क ग च ज ट ड त द प ब

महाप्राण—ख घ छ झ ठ ढ थ ध फ भ

फुटकर—ह ळ श य व र ल न म ÷ (अनुस्वार)

विशेषोच्चरित— ऋ क़ ख़ ग़ ज़ ड़ ढ़ फ़ ल़ व़

लहरीवर्ण— ज़~ न~ म~ र~ ल~ स~ श~

अ- हर एक स्वर अनुनासिक और निरनुनासिक दो तरह का होता है।

आ— लहरीवर्ण एक तरह के अर्धस्वर हैं जो स्वर की तरह पूरे जा सकते हैं। ऋ लृ भी लहरी वर्ण में गिन लिये गये हैं। जानकार आदमी इनका उच्चारण करके इन्हें अलग अलग बता सकता है।

इ—ङ ञ ण आदि वर्ण अनावश्यक हैं। ङ का काम अनुस्वार करता है। ञ को यँ से, ण को ड़ँ से अलग नहीं समझा जासकता।

ई—श से ष को अलग नहीं समझा जासकता।

उ— ए ऐ ओ औ को ह्रस्व और दीर्घ दो तरह समझना चाहिये।

ऊ— विशेषोच्चरित वर्णों का प्रयोग मानव भाषा के शब्दों में न होगा। दूसरी भाषाओं के व्यक्तिवाचक नाम जब मानवभाषा में लिखे जायँगे तब उनका उपयोग होगा।

ए— लहरीवर्णों का प्रयोग शब्दों में न होगा सिर्फ किसी आवाज के दर्शन में होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२—भाषानिर्माण की सूचनाएँ

अ—मानव भाषा के निर्माण में संसार की प्रायः सभी भाषाओं या मुख्य मुख्य भाषाओं के शब्दों को अपनाया जायगा।

आ— साधारण बोलचाल के शब्द छोटे और सरल होंगे। संयुक्ताक्षरों का प्रयोग कम से कम किया जायगा। य र व को छोड़कर अन्य वर्णों के साथ मिला हुआ संयुक्ताक्षर शब्द के प्रारम्भ में न लाया जायगा।

इ— शब्द का अन्तिम स्वर ऐसा बनाया जायगा। जिससे शब्द के रूप (अव्यय क्रियापद संज्ञा) लिंग का पता जल्दी लगजाय।

ई— शब्दों के निर्माण में इस बात का खयाल रक्खा जायगा कि कोई प्रत्यय या विभक्तियों सरीखा वर्ण किसी शब्द के अन्त में न आये।

३— सन्धि नियम

दो शब्दों को मिलाकर एक शब्द बनाने में [समास करने में], दो क्रियाओं को मिलाकर एक क्रिया बनाने में, प्रत्यय आदि जोड़ने में सन्धि होती है। दो पदों में सन्धि नहीं होती।

सन्धि के नियम ये हैं।

अ—ह्रस्व अ के आगे कोई स्वर आजाये तो ह्रस्व अ लुप्त हो जाता है। शेष व्यञ्जन आगे के स्वर में मिलजाता है।

आ—इ उ के आगे समान स्वर आनेपर दोनों के स्थान पर उसका दीर्घ रूप होजाता है।

इ—ह्रस्व अ को छोड़कर किसी भी स्वर के आगे विषम स्वर आये तो सन्धि नहीं होती।

ई—य में इ या ई की मात्रा मिले तो य विकल्प से लुप्त होजाता है सिर्फ इ या ई रहजाती है।

उ— ए ओ ऐ औ के साथ अनुस्वार हो तो अनुनासिक होजाता है।

४—लिंग निर्णय

१—मानवभाषा में शब्द लिंग की दृष्टि से चार भागों में विभक्त होंगे १—उभय लिंगी २—पुल्लिंगी ३ स्त्रीलिंगी ४—अलिंगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अ--नर मादा का भेद न करने पर प्राणिवाची मूलशब्द उभयलिंगी होंगे।

आ--नर द्योतक शब्दरूप पुल्लिंगी होंगे।

इ--मादा द्योतक शब्दरूप स्त्रीलिंगी होंगे।

ई-जड़ पदार्थ द्योतक शब्द, तथा भाववाचक संज्ञाएँ अलिंगी होंगी।

जड़ पदार्थ द्योतक ऐसी संज्ञाएँ जिन्हें हमने कल्पना आदि से सजीवता का रूप देदिया हो तो उन्हें भी लिंग मिल जायगा। जैसे लक्ष्मी धन को कहते हैं पर अगर हमने उसे रूपक बनाकर देवी मानलिया तो उसको सजीवसृष्टिमें गिना जायगा और स्त्रीलिंग माना जायगा।

उ--विशेषण का लिंग विशेष्यके अनुसार होगा।

ऊ--क्रियापद में लिंग न होगा।

२--अ--उभयलिंगी संज्ञाशब्द और विशेषण शब्द अकारान्तही होगा।

आ--पुल्लिंगी शब्द आकारान्त बनादिया जायगा।

इ--स्त्रीलिंगी शब्द ईकारान्त बनादिया जायगा।

ई--भाववाचक संज्ञाओं को छोड़कर बाकी संज्ञाशब्द अलिंगी होनेपर उकारान्त बना दिये जायेंगे।

पुल्लिंग स्त्रीलिंग रूपों का अर्थ यह नहीं है कि उनमें पतिपत्नी भाव है। नारीत्व बात अलग है पत्नीत्व बात अलग है। साला शब्द का स्त्रीलिंगी रूप साली है पर साले की पत्नी साली नहीं है। मानवभाषा में इन दोनों का भेद साफ रक्खा गया है।

अ--जहां सिर्फ स्त्रीत्व का बोध करना हो वहां शब्द ईकारान्त कर दिया जायगा।

आ--जहां पत्नीत्व का बोध करना हो वहां शब्द के अन्त में नी लगा दिया जायगा। जैसे--

मगा=भाई, मगी=बहिन, मगनी=भौजाई।

राजा=राजा, राजी=राज्यकरनेवाली रानी, राजनी=राजा की पत्नी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इ-- जहां पति का बोध करना हो वहां ना लगा दिया जायगा, जैसे-- राजना= राज्य करने वाली रानी का पति। इस प्रकार माता बात एक है पिता की पत्नि बात दूसरी। माता को ममी कहेंगे पिता की पत्नी को ममनी। ममी का अर्थ पिता की पत्नी नहीं है। साधारणतः ममनी का अर्थ विमाता होगा।

नोट— यद्यपि रानी के पति को राजीना, और राजा की पत्नी को राजानी कहना चाहिये पर राजीना को राजना, और राजानी को राजनी कहने में कोई अड़चन नहीं है। क्यों कि राज का अर्थ राजा रानी दोनों होता है। पर पत्नी किसी पुरुष की ही होगी पति किसी स्त्री का ही होगा इसलिये राजनी में राज का अर्थ राजा, और राजना में राज का अर्थ रानी होगा। राजनी= राजा की पत्नी, राजना= रानी का पति। इस प्रकार रिश्तेदारोंके अन्य शब्दों में भी विचार करना चाहिये।

५-संज्ञाशब्द

अ--किसी विचारगत वस्तुके नाम को संज्ञा कहते हैं। विचारगत वस्तु जगत में हो भी सकती है और नहीं भी होसकती, पर दोनों हालतों में संज्ञा बनसकती है। लोक में ऐसे देवी देवों के नाम प्रचलित हैं जिनका अस्तित्व है हो नहीं, फिर भी उनके नाम संज्ञा कहे जायँगे। चन्द्रमा में समुद्रों के नाम रखलिये गये पर बाद में वहां समुद्र निकले ही नहीं। ईथर आदि तत्व अनिश्चित हैं फिरभी उनकी संज्ञा है। इसलिये यह जरूरी नहीं है कि कोई चीज हो ही, हमने जिसकी कल्पना करली और उसका नाम रखलिया, फिर चाहे वह हो या न हो उसका नाम संज्ञा कहलाने लगा।

आ--संज्ञाओं के भेद पदार्थ विज्ञान की दृष्टिसे नहीं होते, वे संज्ञा शब्दों के रूपों की दृष्टिसे होते हैं संज्ञा शब्दोंके तीन भेद हैं १—व्यक्ति वाचक २--जातिवाचक ३--भाववाचक।

१--व्यक्तिवाचक संज्ञा--सजीव निर्जीव-.कल्पित अकल्पित किसी खास वस्तुके नामको कहते हैं जैसे-- गंगा यमुना बम्बई कलकत्ता, लक्ष्मी सरस्वती विष्णु राम कृष्ण सीता आदि। व्यक्ति वाचक संज्ञाओंमें ये विशेषताएं पाई जाती हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१) भाषाओं के बदलने पर भी उनका अनुवाद नहीं होता। किसीका नाम विद्या हो तो अंग्रेजी में उसे नालेज के नामसे नहीं पुकारेंगे। उसका नाम वहां भी विद्या ही लिखा जायगा।

अपभ्रंश होकर उच्चारण कुछ बदलजाय या एक व्यक्ति के अनेक नाम होजायँ तो यह बात दूसरी है।

(२) व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का बहुवचन नहीं होता, क्योंकि वह किसी एक ही व्यक्ति की संज्ञा है। हां! कभी कभी व्यक्ति वाचक संज्ञा किसी विशेष पद योग्यता आदि की सूचक होजाती है तब उसमें बहु-वचन होता है। पर ऐसे अवसर पर वह एक तरह की जातिवाचक संज्ञा बनजाती है। 'भारत ने हजारों सीताएँ पैदा की हैं'। यहां सीता संज्ञा, व्यक्तिवाचक से जातिवाचक बनगई है। पर जहां व्यक्तिवाचक संज्ञा व्यक्तिवाचक ही रहती है वहां उसमें बहुवचन नहीं होता।

[३] मानवभाषा में लिंग के अनुसार शब्दों के रूप आकारान्त ईकारान्त आदि होते हैं पर यह नियम व्यक्तिवाचक संज्ञाओं को लागू नहीं होता। क्योंकि हर व्यक्ति का नाम मानवभाषा के नियम के अनुसार ही रक्खा जाये ऐसा नियम तो है नहीं, और मानवभाषा में उसका उल्लेख तो करना ही पड़ेगा तब उसे ज्यों का त्यों ही लाना पड़ेगा, उसका अनुवाद तो किया नहीं जासकता।

२-समानता के आधार पर किसी वस्तुसमूह के नाम को जाति-वाचक संज्ञा कहते हैं। इसमें लिंग व्यवस्था के अनुसार आकारान्त ईकारान्त आदि रूप बनते हैं।

३-भाववाचक संज्ञा उसे कहते हैं जो किसी वस्तुके धर्म का या क्रिया का नाम हो। यह संज्ञा ओकारान्त ही होती है और अलिंगी मानी जाती है। जैसे-जयो-जीतना=विजय। मित्रो-मित्रता।

६-विभक्ति चिन्ह

मानवभाषा में दस विभक्तियाँ हैं और एकवचन और बहुवचन ऐसे दो वचन हैं। अल्पप्राण दस व्यंजन क्रम से दस विभक्तियों के एकवचन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के चिन्ह हैं और महाप्राण दस व्यंजन क्रम से दस विभक्तियों के बहुवचन के चिन्ह हैं। हर एक विभक्ति चिन्ह एकारान्त ही होता है।

विभक्ति नम्बर	नाम	एकवचन	बहुवचन
पहिली	कर्ता	के	खे
दूसरी	कर्म	गे	घे
तीसरी	उपकर्म	चे	छे
चौथी	करण	जे	झे
पांचवी	प्रयोजन	टे	ठे
छट्ठी	वियोग	डे	ढे
सातवीं	अयन	ते	थे
आठवीं	आधार	दे	धे
नवमी	सम्बन्ध	पे	फे
दसवीं	सम्बोधन	बे	भे

कर्ता—जो क्रिया का करनेवाला है। 'राधा रोटी खाती है' इस वाक्य में 'राधा' कर्ता है।

कर्म—क्रिया का मुख्य विषय हो—जैसे ऊपर के वाक्य में 'खाना' क्रिया का मुख्य विषय है 'रोटी'।

उपकर्म—क्रिया का जो गौण विषय हो अथवा कर्म का भी विषय हो। जैसे राधा श्याम को रोटी खिलाती है। इस वाक्य में रोटी मुख्य कर्म, श्याम गौण कर्म। सम्प्रदान का भी प्रयोग इसी विभक्ति में होगा।

करण—जिसके द्वारा कोई क्रिया की जाय। जैसे चाकू से काटता हूँ। इस वाक्य में चाकू।

प्रयोजन=जिसके लिये क्रिया की जाय। जैसे पढ़ने के लिये तुम्हें रुपये देता हूँ, इस वाक्य में, पढ़ने के लिये।

वियोग—क्रिया के द्वारा जिस चीज से कर्ता अलग या उससे भिन्न मालूम हो। श्याम नगर से आया, अथवा आम से तरबूज बड़ा है। इन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाक्यों में नगर और ग्राम।

लयन–जिसके भीतर कर्ता क्रिया कर रहा हो। वह घर में बैठा है। इस वाक्य में घर में।

आधार–जिसको आधार बनाकर कर्ता क्रिया कर रहा हो। वह छतपर टहल रहा है, इस वाक्य में छतपर।

सम्बन्ध–जिससे कर्ता का सम्बन्ध मालूम हो।

सम्बोधन-क्रिया के लिये कर्ता को बुलाया जाय।

७–सर्वनाम

[१] संज्ञाके स्थानपर आनेवाले या उसे सूचित करनेवाले शब्द को सर्वनाम कहते हैं। मैं तू वह कौन आदि।

[२]–संज्ञा शब्दों के समान सर्वनाम में भी लिंग व्यवस्था होगी। अम, अमा, अमी आदि, सर्वनाम हैं।

[३] पुरुषवाची सर्वनाम मैं तू वह आदि चर्चा में कुटुम्बी की तरह हैं इसलिये म के आधार से इनके रूप बनेंगे। और उत्तम मध्यम अन्य पुरुष केलिये क्रमसे अ इ उ स्वर जोड़े जायेंगे। इस प्रकार अम इम उम शब्द बनजायेंगे फिर लिंग के अनुसार इनके अमा अमी आदि रूप बन जायेंगे बाद में विभक्तिवचन चिन्ह लगाये जायेंगे।

	सामान्यलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	अलिंग
उत्तम पुरुष	अम	अमा	अमी	अमु
मध्यम ,,	इम	इमा	इमी	इमु
अन्य ,,	उम	उमा	उमी	उमु
,, ,,	ऊम	ऊमा	ऊमी	ऊमु
,, ,,	ओम	ओमा	ओमी	ओमु

अन्यपुरुष दो तरह का होता है। निकटवर्ती दूरवर्ती यह और वह। जहां निकट दूर का भेद न करना हो वहां 'उम' शब्द का प्रयोग करना चाहिये जहां भेद करना हो तो निकटवर्ती यह केलिये 'ऊम' दूरवर्ती वह केलिये ओम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४) अन्य सर्वनाम निम्नलिखित होंगे

अर्थ	सामान्यलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	अलिंग
कौन क्या	कुम	कुमा	कुमी	कुमु
कितने	गुम	गुमा	गुमी	गुमु
जो	चुम	चुमा	चुमी	चुमु
सो	जुम	जुमा	जुमी	जुमु
युगल	टुम	टुमा	टुमी	टुमु
बहुत	डुम	डुमा	डुमी	डुमु
सब	पुम	पुमा	पुमी	पुमु
अन्य	बुम	बुमा	बुमी	बुमु
दोमें से एक	हुम	हुमा	हुमी	हुमु
बहुतमें से एक	सुम	सुमा	सुमी	सुमु

[५]–सर्वनामों को अगर विशेष आदर सूचक बनाना हो तो उनके पीछे एक 'म' और जोड़ देना चाहिये। अमम, इमम, उमम आदि।

इममा–आप (श्रीमानजी) इममी—आप श्रीमतीजी

गुममा–कोई श्रीमान

उममा–वे श्रीमानजी। उममी—वे श्रीमतीजी

इमम इममा इममी आदि को उच्चारण की सरलता केलिये इम्म इम्मा इम्मी आदि भी कहा जासकता है।

८–विशेषण

(१) संज्ञा की विशेषता बतानेवाले शब्द को विशेषण कहते हैं। जिसकी विशेषता बताई जाय उसे विशेष्य कहते हैं।

(२) विशेषण चार तरह के होते हैं—अ--संख्यावाचक आ--गुणवाचक, इ--सार्वनामिक, ई--सांज्ञिक।

अ--संख्यावाचक विशेषण से किसी गिनती का पता लगता है। जैसे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पच्चीस आदमी, यहां पच्चीस संख्यावाचक विशेषण है। संख्यावाचक विशेषण दो तरह का होता है-संख्या-परिमाणवाचक और संख्यास्थान वाचक।

संख्यापरिमाण वाचक से इस बात का पता लगता है कि कोई चीज कितनी है जैसे पच्चीस आदमी।

संख्या स्थान वाचक से पता लगता है कि संख्या की दृष्टि से उस चीज का स्थान क्या है जैसे पच्चीसवां आदमी।

(३) गुणवाचक विशेषण से विशेष्य के किसी अच्छे बुरे आदि स्वभाव धर्म आदि का परिचय मिलता है। अच्छी लड़की, छोटा बालक आदि।

[४] सर्वनाम शब्द जब किसी संज्ञा शब्द के साथ आकर उसकी विशेषता बताने लगता है तब सार्वनामिक विशेषण बनजाता है। यह आदमी, वह मकान, सब चीजें, कोई स्त्री, आदि में यह वह सब कोई आदि सार्वनामिक विशेषण हैं।

[५] जब एक संज्ञा शब्द किसी दूसरे संज्ञा शब्द की विशेषता बताने के लिये लाया जाता है तब विशेषता बताने वाला संज्ञाशब्द विशेषण बनजाता है। जैसे—सीता मैया, या मैया सीता। पहिले वाक्य में सीता मैया का विशेषण है दूसरे वाक्य में मैया सीता का विशेषण हैं। इसी तरह सम्राट अशोक आदि में सांज्ञिक विशेषण समझना चाहिये।

[६] विशेषण विशेष्य जब साथ साथ आते हैं तब उनमें समास होता है, उस हालत में विशेषण को विभक्ति चिन्ह नहीं लगाना पड़ता। जैसे अच्छी लड़की के लिये। यहां अच्छी में विभक्ति चिन्ह नहीं लगाया गया। संस्कृतमें विशेषण को भी विभक्ति लगाते हैं।

[७] जब विशेष्य लुप्त हो और विशेषण का ही प्रयोग हो तो विशेषण के साथ भी विभक्ति चिन्ह आता है। जैसे—कितने लड़कों के लिये किताबें चाहिये? पच्चीस के लिये। यहां पच्चीस विशेषण के साथ विभक्ति चिन्ह आगया।

[८] विशेष्य के साथ होनेपर विशेषण को लिंग चिन्ह लगाना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

या न लगाना वक्ता की इच्छा पर निर्भर है।

(६) संख्यापरिमाण वाचक विशेषण को लिंग चिन्ह नहीं लगता संख्यास्थान वाचक को लगसकता है। पच्चीस स्त्रियाँ, पच्चीस पुरुष, दोनों में विशेषण के साथ लिंग चिन्ह नहीं है। पर पच्चीसवां पुरुष, पच्चीसवीं स्त्री यहां लिंग चिन्ह है। मानवभाषा में संख्यास्थानवाचक विशेषण में लिंग चिन्ह देना न देना बोलनेवाले की इच्छा पर निर्भर है।

९–क्रिया

[१] जिससे कर्ता के किसी कार्य के होने का पता लगे उसे क्रिया पद कहते हैं। होना भी एक क्रिया ही है। क्रिया पद के मूलरूप को धातु कहते हैं धातु में प्रत्यय लगाने से पता लगता है कि वह क्रिया किस काल में होरही है।

[२] मानवभाषामें सब धातुएँ अकारान्त ही होती हैं और उनमें लिंगभेद या वचनभेद से कोई अन्तर नहीं होता। क्योंकि लिंग वचन और पुरुष कर्ता में होसकते हैं क्रियामें नहीं कर्तापद के रूपसे ही हमें लिंग पुरुष और वचन का पता लगसकता है। क्रियापद पर यह बोझ बढ़ाने की कोई जरूरत नहीं है।

(३)–क्रिया के मूल काल तीन हैं–वर्तमान, भूत, भविष्य। मानवभाषामें काल सूचक प्रत्यय 'ल' है। इसके वर्तमान रूप केलिये 'ल', भूत रूप केलिये 'लू' और भविष्यरूप केलिये 'ले' रूप बनजाता है।

प्रत्येक काल सात सात तरह का है और उस तरह को बनाने केलिये ल लू या ले प्रत्ययके पहिले क्रम से सात स्वर लगा दिये जाते हैं। इस प्रकार इक्कीस कालों के रूप सरलता से याद किये जासकते हैं। धातुके अन्तमें प्रत्यय लगाने से ठीक काल का पता लगेगा। सन्धि नियम के अनुसार धातुके अन्त का अकार लुप्त होजायगा और व्यंजन प्रत्ययके स्वरमें मिल जायगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१	सामान्यवर्तमान	अल	सामान्यभूत	अलू	सामान्यभविष्य	अले
२	वर्तमान वर्तमान	इल	वर्तमानभूत	इलू	वर्तमानभविष्य	इले
३	स्वभाव वर्तमान	ईल	स्वभावभूत	ईलू	स्वभावभविष्य	ईले
४	भूतवर्तमान	उल	भूतभूत	उलू	भूतभविष्य	उले
५	पूर्णभूत वर्तमान	ऊल	पूर्णभूतभूत	ऊलू	पूर्णभूतभविष्य	ऊले
६	भविष्य वर्तमान	एल	भविष्यभूत	एलू	भविष्यभविष्य	एले
७	विधिवर्तमान	ओल	विधिभूत	ओलू	विधिभविष्य	ओले

४ खाद [खाना] धातु के रूप बनाकर हिन्दीमें उनका अर्थ लिखने से इन इक्कीस कालों का ठीक ठीक उपयोग ध्यानमें आजायगा।

वर्तमान

१–सामान्य वर्तमान–	उम खादल	वह खाता है
२–वर्तमान ,,	,, खादिल	वह खारहा है
३–स्वभाव ,,	,, खादील	वह खायाकरता है
४–भूत ,,	,, खादुल	उसने खाया है
५–पूर्णभूत ,,	,, खादूल	वह खाचुका है
६–भविष्य ,,	,, खादेल	वह खानेवाला है, उसे खाना है
७–विधि ,,	,, खादोल	वह खाये

भूत

१–सामान्य भूत–	उम खादलू	उसने खाया
२–वर्तमान ,,	,, खादिलू	वह खारहा था
३–स्वभाव ,,	,, खादीलू	वह खाया करता था
४–भूत ,,	,, खादुलू	उसने खाया था
५–पूर्णभूत ,,	,, खादूलू	वह खा चुका था
६–भविष्य ,,	,, खादेलू	वह खानेवाला था
७–विधि ,,	,, खादोलू	वह खाता

भविष्य

सामान्य भविष्य	उम खादले	वह खायगा
वर्तमान ,,	,, खादिले	वह खारहा होगा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३ स्वभाव ,,	,,	खादीले	वह खाया करे
४ भूत ,,	,,	खादुले	उसने खाया हो
५ पूर्ण भूत ,,	,,	खादूले	वह खा चुके
६ भविष्य ,,	,,	खादेले	वह खानेवाला हो
७ विधि ,,	,,	खादोले	वह खानेवाला है

इन इक्कीस कालों को देखकर बहुत से पाठकों को बहुतसे भ्रम होंगे आजकल के काल नामों का अभाव और उनके स्थान का अभाव किसीको खटकेगा, किसी को नये काल अनावश्यक मालूम होंगे, किसी को यह भ्रम होगा कि यहां भूतको भविष्य मानलिया गया है क्योंकि भविष्य के इतने भेद आजकल प्रचलित नहीं हैं। इन सब भ्रमों के निवारण केलिये यहां कुछ सूचनाएँ दीजाती हैं। [क] संस्कृतमें आज्ञार्थक, आशीर्वादात्मक, तथा विध्यर्थक, ऐसे तीन काल अलग अलग माने गये हैं। पर यह निश्चित है कि आशीर्वादात्मक विध्यात्मक ही है। यों संस्कृतमें भी विधि और आशीर्वाद को एक ही लिङ लकार का भेद माना गया है। हिन्दी आदि में यह भेद उड़गया है क्योंकि संस्कृत युग के बराबर इस युगमें आशीर्वाद का महत्व नहीं रहगया है। इसलिये यहां आशीर्वादात्मक काल तो नहीं ही रक्खा गया, पर आज्ञार्थक को भी विध्यर्थक में गिन लिया गया है। सच तो यह है कि विध्यर्थक का मध्यम पुरुषमें जो अर्थ होता है उसी अर्थमें आज्ञार्थक क्रिया मानी जाती है। यही कारण है कि आज्ञार्थक के प्रथम पुरुष और अन्य पुरुष के रूप नहीं बनते और विध्यर्थक मध्यम पुरुषमें खीच तानकर बनाया जाता है। इसलिये यहां तीनोंके स्थानपर सिर्फ विध्यर्थक ही रक्खा गया है।

[ख] कहीं कहीं सम्भाव्य संदिग्ध प्रश्नार्थक आदि को भी कालमें गिन लिया जाता है जैसे वह आता होगा, क्या मैं आऊं, आदि। असल में ये सब भाव केवल क्रियापदों से व्यक्त नहीं किये जासकते। प्रश्नार्थक वाक्य केलिये 'क्या' आदि शब्दों की सहायता लेना चाहिये, लीजाती है, 'सम्भाव्य' 'संदिग्ध' अर्थ में 'होगा' का प्रयोग तो एक तरह से गलत ही है। वर्तमान और भूत की तरह भविष्य निश्चित नहीं होता इसलिये भविष्य काल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्रियारूप को संदिग्ध आदि अर्थों में ले लिया गया है, पर भविष्य को संदेहार्थक मान लेना ठीक नहीं। पर हिन्दीमें ऐसा मानलिया गया है। आजकी भाषाएँ व्यवस्थित विचार के साथ तो बनाई नहीं गई हैं ये तो मानव समुदायों का ऊबड़खाबड़ संग्रह है इसलिये ऐसी गल्तियाँ होना स्वाभाविक है। होना यह चाहिये कि सम्भाव्य आदि को ठीक शब्दोंमें व्यक्त करें ? जैसे—

वह आता होगा	सम्भवतः वह आता है, सम्भवतः वह आनेवाला है।
तू जाता हो	यदि तू जाता है
वह खड़ा हो	यदि वह खड़ा है

उपर्युक्त वाक्य रचना ठीक शब्दोंमें ठीक अर्थ को प्रगट करती है। मानवभाषामें इसी ढंगसे अर्थ प्रगट किया जायगा। 'यदि' 'सम्भवतः' आदि शब्दोंका उपयोग किया जायगा।

(ग) हेतुहेतुमद्भूत भी यहां नहीं रक्खा गया। मैं आता तो तू आता, मैं आऊंगा तो तू आयगा, मैं पहुँचू तो वह पहुंचे, आदि वाक्य प्रयोग में विधि या सामान्य भूत आदि का प्रयोग करना ही उचित है 'यदि' 'तो' आदि अव्यय आवश्यक हैं।

[घ] भविष्यकाल के भेद यहां बढ़ादिये गये हैं। बहुतसे प्रयोग तो हिन्दीमें भूत या वर्तमानमें माने जाते हैं उन्हें संदिग्ध या सम्भाव्य वर्तमान कहा जाता है। यहां उनका विधान भविष्य अर्थमें ही किया गया है। निम्नलिखित वाक्य प्रयोगों से उनका भविष्य रूप ध्यानमें आजायगा—

जब मैं पहुँचूंगा तब वह भोजन करहा होगा	वर्तमान	भविष्य
अब मैं जरूर दवा खाया करूंगा	स्वभाव	,,
जब वह चलागया होगा तभी जाऊंगा	भूत	,,
जब वह खाचुकेगा तब पान खिलाऊंगा	पूर्ण भूत	,,
जब मैं पहुँचूंगा तब तो वह पहुँचनेवाला होगा	भविष्य	,,
जब वह आनेवाला होगा तभी मैं जाऊंगा	,,	,,
वह आनेवाला हो तो मैं आऊं	विधि	,,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

[४] कालों का नामकरण-ऊपर जो क्रियाओंके तीन कालोंके २१ भे
किये गये हैं उनके नामों का अर्थ यह है।

इकीस कालों के नामों में सात के पीछे वर्तमान शब्द पड़ा हुआ
उन्हें वर्तमान काल के रूप समझना और सात के पीछे भूत शब्द
हुआलिये उन्हें भूत के रूप समझना और सात के पीछे भविष्य शब्द है
इसलिये उन्हें भविष्य के रूप समझना। किन्तु नाम का जो पूर्वा
है वह उस उस काल की विशेषता बताता है—इस प्रकार उनके अर्थ
हो जाते हैं—

१—सामान्य वर्तमान—यह रूप वर्तमान वर्तमान और स्वभाव व
आन दोनों अर्थोंमें चल सकता है। किसी आदमीको चलता हुआ देखकर
कह देते हैं कि वह जाता है और कोई किसी के यहां जाया करता है इ
लिये भी हम कह देते हैं वह उसके यहां जाता है, दोनों ही वर्तमानों
इसका उपयोग होने से इसे सामान्य वर्तमान कह दिया। इतना ही नहीं, खाया
खाचुका है खानेवाला है आदि अर्थों में भी साधारणतः सामान्य वर्तमान
का प्रयोग कर दिया जाता है। जहां कालों के विशेष भेद नहीं बत
जाते वहां सामान्य वर्तमान ही वर्तमान के प्रतिनिधि रूप में उपस्थि
कर दिया जाता है।

२—वर्तमानवर्तमान—यह पूरी तरह वर्तमान है। दूसरे वर्तमानों
उस क्रिया का थोड़ी देर को अभाव भी हो सकता है या वह समाप्त
होसकती है पर इसमें वह क्रिया बराबर चालू रहती है इसलिये इसे वर्त
मान में भी वर्तमान अर्थात् वर्तमानवर्तमान कहा।

३ स्वभाववर्तमान—उस क्रिया के चालू रहने का परिचय नह
मिलता किन्तु कर्ता में उस कार्य के करने का स्वभाव है इसलिये वह स
समयपर वह कार्य किया करता है इतना परिचय मिलता है। वह कि
वर्तमान में चालू रहती भी है और नहीं भी रहती।

४ भूतवर्तमान—वर्तमान क्रिया भूत बन रही है पर भूत और वर्त
के बीच की रेखा मोटी नहीं होपाई, क्रिया अभी अभी समाप्त हुई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५ पूर्णभूत वर्तमान–क्रिया तो समाप्त हो चुकी है, भूतवर्तमान की अपेक्षा पूर्णभूतवर्तमानमें भूत वर्तमानकी रेखा भी कुछ मोटी होगई है पर इतनी मोटी नहीं कि वर्तमान से सम्बन्ध बिलकुल टूट गया हो।

६ भविष्य वर्तमान–क्रिया होनेवाली है अर्थात् निकट भविष्य में है पर उसका संकल्प विचार तैयारी आदि वर्तमान है इसलिये यह भविष्य वर्तमान है।

७ विधि वर्तमान–क्रिया हो या न हो उसकी प्रेरणा निर्देश जरूरत आदि मौजूद है इसलिये यह विधि वर्तमान है। भविष्य वर्तमान में क्रिया होना निश्चित रूप में कहा जाता है पर विधि वर्तमान में यह निश्चय नहीं रहता सिर्फ उसकी विधि सम्भावना सूचना प्रेरणा आदि वर्तमान रहती है।

इसी प्रकार अन्य कालों का अर्थ समझ लेना चाहिये—

८ सामान्यभूत–क्रिया के भूतकाल का साधारण रूप।

९ वर्तमानभूत–भूतकाल में क्रिया की होती हुई–चालू-वर्तमान अवस्था बताई जाती है।

१० स्वभावभूत–भूतकाल में उस क्रिया करने का स्वभाव बताया जाता है।

११ भूतभूत–भूतकाल में क्रिया की उस अवस्था का वर्णन किया जाता है जिसमें क्रिया अपना वर्तमान रूप छोड़ रही थी।

१२ पूर्णभूतभूत–भूतकालमें क्रिया के उसरूप का वर्णन किया जाता है जिसमें क्रिया अपना वर्तमान रूप छोड़ चुकी थी।

१३ भविष्यभूत–भूतकालमें क्रिया की उस अवस्था का वर्णन किया जाता है जिसमें क्रिया भविष्यके द्वार पर खड़ी थी, अर्थात् होने वाली थी।

१४ विधिभूत–भूत काल में क्रिया चाहे हुई न हो पर उसकी विधि जरूरत प्रेरणा निर्देश आदि मौजूद था।

१५–सामान्य भविष्य –क्रिया के भविष्य काल का साधारण रूप

१६ वर्तमान भविष्य–भविष्यकालमें क्रिया की चालू अवस्था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७ स्वभाव भविष्य- भविष्यकालमें क्रिया करने की आदत या स्व
व का परिचय

१८ भूतभविष्य- भविष्य कालमें क्रिया का वह रूप जो भूत व
शुरू करदेगा।

१९ पूर्णभूत भविष्य-भविष्य कालमें क्रिया का वह रूप जिसने
बनने की क्रिया पूरी तरह शुरु करदी होगी।

२० भविष्य भविष्य-भविष्य कालमें क्रिया का वह रूप जिसमें क्रि
शुरु नहीं हुई है पर होने केलिये संकल्प आदि रूप में तैयार है।

२१ विधि भविष्य-भविष्य कालमें किसी काम के करने की प्रे
आदेश आदि।

(६) धातुके प्रेरणादिक रूपोंकी आलोचना—

(अ) हर एक वाक्य में दो चीजें मुख्य हैं एक तो क्रिया, और एक क्रिया का करनेवाला। जैसे 'श्याम खाता है' में हमें कर्ता और दिखाई देते हैं। पर कभी कभी क्रिया का ऐसा रूप बनता है जब कर्ता नहीं रहता कर्म बनजाता है और कर्ता दूसरा ही बनजाता है। राम श्याम को रोटी खिलाता है। इस वाक्य में क्रिया तो खाने की है पर खाने का कर्ता श्याम, कर्म बनगया है और राम कर्ता। इस प्रका वाक्य कर्ता को भी कर्म बनाने वाला है इसलिये इसे कर्तृकर्मक कह हैं। अथवा इसमें कर्ताका भी कर्ता है इसलिये इसे कर्तृकर्तृक कहसक्ते

कर्तृकर्तृक वाक्य में दूसरा कर्ता पहिले कर्ता के कार्यमें निकट स देता है। जैसे राम श्याम को खिलाता है इस वाक्य से पता लगता राम श्याम को परोस रहा है या खाने के साधन खुद ही जुटा रहा है पर जब यह कहा जाता है कि 'राम श्याम को रोटी खिलवारहा है। वाक्य से पता लगता है कि राम खुद तो नहीं खिला रहा है पर कि आदमीको खिलाने की प्रेरणा कर रहा है जो श्यामको खिला रहा है प्रकार वाक्यमें खाने की क्रिया के कर्म-रोटी-के उत्तरोत्तर तीन कर्ता है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पहिला कर्ता श्याम, दूसरा कर्ता परोसने वाला जो श्याम को रोटी खिला रहा है इसलिये श्याम का भी कर्ता है, तीसरा कर्ता राम, जो परोसनेवाले को प्रेरणा करनेवाला है इसलिये परोसने वाले का भी कर्ता है। इसलिये हिन्दीमें दो तरह की प्रेरणाओं का उपयोग होता है। जैसे राम रसोइया से श्यामको रोटी खिलवा रहा है। सम्भवतः दूसरी भाषाओंमें ऐसे प्रयोग नहीं होते। बात भी ठीक है इससे भाषाकी जटिलता बढ़ती है। बात यह है कि रसोइया श्यामको रोटी खिलारहा है इस वाक्यमें पहिला कर्ता श्याम कर्म बनगया और रसोइया नया प्रेरक कर्ता आगया। पर दूसरे वाक्यमें प्रेरक का प्रेरक कर्ता राम तो कर्ता बनगया पर रसोइया कर्ता न बनकर करण बना। इसलिये सुविधाजनक यही है कि एक ही प्रेरक कर्ता माना जाय इसके बीचमें किसी तीसरे की जरूरत हो तो करण से काम निकाला जाय। मानवभाषा में इसी तरीके का उपयोग किया जायगा।

[आ] कुछ प्रयोग ऐसे होते हैं जिनमें कर्ता उड़ जाता है या करण बनजाता है किन्तु कर्म कर्ता बनजाता है। जैसे—रोटी खाई जाती है। यहां कर्म कर्ता बनगया, इसलिये खाई जाती है क्रिया कर्मकर्तृक कहलाई। प्रेरणा में कर्ता कर्म बनता था इसमें कर्म कर्ता बनता है।

(इ) कहीं कहीं करण भी कर्ता बनता है जैसे डंडा मारा जाता है जूते मारे जाते हैं लकड़ी मारी जाती है, यहां डंडा आदि 'मारना' क्रिया के करण हैं पर क्रिया उनके अनुसार लिंग वचन लेरही है। इसलिये यह क्रिया करणकर्तृक कहलाई। पर हिन्दीमें यह नामोल्लेख मेरे देखने में नहीं आया।

[ई] कहीं अधिकरण कर्तृक के भी अवसर आते हैं। जैसे 'पानीपत कई बार लड़ा गया' अर्थात् पानीपत में कई बार लड़ाई हुई। पानीपत अधिकरण है पर क्रिया उसके अनुरूप है इसलिये वह कर्ता बनगया।

[उ] भाषा के प्रयोगों की कमी से अन्य बहुतसे प्रयोग नहीं होपाते। जैसे तुम्हें रुपया दिया गया है मिट्टी नहीं। यहां वक्ता कर्म [रुपया] को कर्ता बनाकर उसपर जोर देरहा है इसी तरह यदि वह सम्प्रदान पर जोर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देना चाहे 'तुम रुपये दिये गये हो दूसरा कोई नहीं' तो भाषा में इसकी गुंजायश नहीं, जब कि जरूरत है।

ऊ—कभी कभी क्रिया अपादानकर्तृक होती है। 'झाड़ फल गिराता है' इस वाक्य में क्रिया झाड़ के अनुरूप है जब कि वास्तव में झाड़ क्रिया का अपादान ही है। श्याम फल गिराता है इसमें क्रिया जैसे प्रेरक है वैसे झाड़ से फल गिरने में नहीं। पर दोनों के रूप एक से हैं इसलिये प्रेरकता का भ्रम होता है। वास्तव में जब कर्म करण सम्प्रदान अपादान अधिकरण में वक्ता जब कोई विशेषता मुख्यता बताना चाहता है अथवा आप से आप फल गिरने के समान जब अपादान आदि में कोई विशेषता देखता है तब उन्हें वह कर्ता बना देता है। जब कोई कहता है "फजूल क्यों पिटते हो" तब इसका अर्थ यह होता है कि पिटनेवाला अपराधी होने से इस क्रिया में मुख्य भाग ले रहा है। यही बात करण-कर्तृक अपादान-कर्तृक आदि में भी होती है पर हिन्दी आदि अधिकांश भाषाओं में इनका ठीक रूप में नामोल्लेख नहीं होता।

क्रियाओं के इन सब प्रयोगों को ध्यान में रखना काफी कठिन होता है। कहीं कहीं अनेक अर्थों में एक से प्रयोग होनेपर कठिनाई और बढ़ जाती है। डण्डा मारा गया, सांप मारा गया, दोनों प्रयोग एक से हैं पर डण्डा में करणता है सांप में कर्मता। मानव भाषा में एक ऐसा सरल सूत्र बनादिया गया है जिससे सरलता से सब प्रयोग ध्यान में रह सकते हैं और अर्थसंकर भी नहीं हो सकता।

ऋ—वाच्य और प्रयोग—

साधारण वाक्य में एक कर्ता रहता है और क्रिया उससे सम्बन्ध रखती है। पर प्रेरणा में एक नया कर्ता होजाता है और पुराना कर्ता कर्म बनजाता है इस बात को द्योतित करने के लिये क्रिया में कर्ता कारक के एक वचन का चिन्ह उपसर्ग के समान लगा दिया है। अगर <u>खाद</u> का अर्थ खाना है तो <u>केखाद</u> का अर्थ खिलाना। इसी प्रकार जहां कर्म को कर्ता बनादिया जाय वहां कर्म विभक्ति चिन्ह क्रिया में उपसर्ग के समान लगा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिया गया है गेखाद का अर्थ खायाजाना। इसी प्रकार करणकर्तृक आदि में भी समझना चाहिये। कुछ वाक्यप्रयोग से यह बात समझ में आजायगी।

प्रेरणार्थक में	के	वह खिलाता है = उसके केखादल
कर्मकारक	गे	फल खाया जाता है = फलुके गेखादल
उपकर्मकर्तृक	चे	तुम फल खिलाये जाते हो = उसके फलुगे चेखादल
करणकर्तृक	जे	तुम्हें डंडा मारा जाता है = डंडुके तुमगे जेमारल
प्रयोजन कर्तृक	टे	घर अपने लिये समान जोड़ता है = रहके सामानुगे टेजोड़ल
वियोग कर्तृक	डे	झाड़ फल गिराता है = झाड़ुके फलुगे डेगिरल
शयन कर्तृक	ते	पानीपर लड़ता है = पानीपतुके तेलिडल
आधार कर्तृक	दे	छत लड़ता है (छतपर लड़ाई होती है) = छतुके देलिडल

'सम्बन्ध छोड़ दिया गया क्योंकि उसका सम्बन्ध क्रिया से न होकर दूसरे किसी संज्ञा शब्द से होता है। सम्बोधन का भी क्रिया से सम्बन्ध नहीं है।

हिन्दी में प्रयोजन कर्तृक आदि के उदाहरण ठीक नहीं दिये जा सकते क्योंकि हिन्दी में ये प्रयोग होते ही नहीं।

निःसन्देह ऐसे प्रयोग मुहावरेदार ऊंची भाषा के प्रयोग होंगे। जनसाधारण इन प्रयोगों के बदले मोटे प्रयोग करेंगे वे 'झाड़ुके फलुगे डेगिरल' के बदले 'फलुके झाड़ुडे गिरल' ही बोलेंगे। फल झाड़ से गिरता है।

७ स्वतन्त्र प्रेरक धातुएँ

खाना से खिलाना आदि के समान प्रेरणा अर्थ में धातु के रूप बदलकर काम चलाया जासकता है जरूरत होनेपर इस रीति का उपयोग भी करना चाहिये फिर भी साहित्य समृद्धि तथा सुगमता की दृष्टि से यह ठीक है कि सब के लिये अलग अलग धातुएँ हों। अंग्रेजी में 'विकम'

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धातु अलग है और उसीकी प्रेरणार्थक 'मेक' अलग। इसी तरह डाइ और किल आदि भी। मानव भाषा में ऐसी धातुएँ भी बनाई या ली जायँगी।

इसके सिवाय हिन्दीकी इस बातका भी थोड़ा अनुकरण किया जायगा कि प्रेरक धातुओं के रूप मिलते जुलते रहें। जैसे पिसना और पीसना। मानवभाषामें पिस और पीस सरीखी धातुएँ बताई जायँगी। पर गिरना और गिराना ऐसी दो धातुएँ न बनेगी क्योंकि हरएक धातु अकारान्त रखनेका नियम है। हां गिरना गिरानाके बदलेमें 'गिर' और गेर धातुएँ बनसकती हैं।

नियम यह कि मूल धातु का पहिला स्वर इ या उ हो तो प्रेरक या कर्तृकर्मक रूपमें इ का ए, उ का ओ होजायगा गिर–गेर, चुप–चोप, आदि।

प्रेरक धातुओं की जरूरत इसलिये काफी है कि भाषा कठिन न होजाय। गिर एक धातु है उससे तीन वाक्य बनाये–गिरता है, गिराता है, गिराया जाता है, [गिरल, केगिरल, गेकेगिरल] गिर में 'के' लगाकर उसका प्रेरणात्मक रूप बनाया और उसका कर्मकर्तृक रूप बनाने केलिये 'गे' लगाना पड़ा। गेकेगिरल लम्बा रूप बना। यदि केगिर की जगह 'गेर' धातु गिराने के अर्थ में हो तो 'गेगेरल' से ही काम चल जाय और उसका अर्थ 'गिराया जाता है' होजाय। यों प्रेरक धातु न मिलने पर इस तरह कारक रूप उपसर्ग लगाकर काम चलाया ही जासकता है।

[९] अत्यन्तार्थक

जब कोई काम विशेषमात्रा में या तीव्रता से होरहा हो तो उस अर्थमें धातुके प्रथम स्वरको इस प्रकार बदलना चाहिये। इ–ई, उ–ऊ, ए–ऐ, ओ–औ। इग–बोलना, ईग–जोर से बोलना या बहुत बोलना।

[१०] असमापिका क्रियाएँ

अभी तक जो क्रियापद बताये गये हैं उनसे किसी क्रिया के बारेमें पूरी बात का पता लगजाता है, एक तरह से उस विषय की जिज्ञासा शान्त होजाती है, पर कुछ प्रयोग ऐसे होते हैं जिनसे जिज्ञासा बनी रहती है। जैसे–जाकर खाकर जाना आना आदि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसे रूपों को बनाने केलिये धातुके वर्तमानवर्तमान रूपके अन्त में लगने वाले ल लू ले आदि प्रत्यय निकालदेना चाहिये। जब हम कहते हैं वह खाता खाता दौड़ता है, तब मालूम होता है कि खाने की क्रिया तो चालू है ही पर साथही दौड़ता भी है। इस तरह खाने की क्रिया वर्तमानवर्तमान है। इसलिये क्रिया के वर्तमानवर्तमान रूपमें से ल निकालकर जो रूप बचे उसे इस तरह उपयोग में लाना चाहिये। जैसे खाताखाता दौड़ता है अर्थात् खाता हुआ दौड़ता है—खादि दौदिल। एक तरह से यहविशेषण ही हुआ पर विशेषण से इसमें यह फर्क है कि विशेषण में विशेष्य के अनुसार लिंग वचन लग सकते हैं इसमें नहीं लग सकते।

जाकर खाकर आदि में यह मालूम होता है कि एक क्रिया पूरी हुई है पर दूसरी क्रिया और है। जो क्रिया पूरी हुई है उसमें पूर्णभूत का रूप देकर समापिका का चिन्ह ल निकाल देना चाहिये। जैसे खादूलू आदि पूर्ण भूत के रूप हैं उनमें से लू निकालकर खादू रहा यह असमापिका क्रिया का रूप होगया। जैसे-वह खाकर दौड़ा = उम खादू दौदलू

जहां क्रियाका अर्थ ही लेना है उसका कोई काल नहीं, वहां वह एक तरह को विधि है उसके विधि के रूप में से ल निकालकर एक तरह की भाववाचक संज्ञ बना लेना चाहिये। जैसे-खादो = खाना। गिरो = गिरना आदि।

[११] संयुक्त क्रिया

हिंदीमें संयुक्त क्रिया का बहुत रिवाज है। जाता है खाता है आदिमें हैं तो लगताही है पर और भी बहुतसे प्रयोग हैं—सुनपड़ा, पी डाला, मार दिया, खाने लगा, देखनापड़ा, करना होगा, आदि।

पर मानवभाषा में हिंदीके बराबर संयुक्तक्रियाओं की जरूरत नहीं है। पहिले जो समापिका असमापिका क्रियायें बनाई गई हैं उनसे सब काम चलता है फिर भी थोड़ीसी संयुक्त क्रिया बनना आवश्यक या सुविधा जनक है इसलिये उन्हीं का उल्लेख किया जाता है।

कैन—सकना	अम कैन खादल—मैं खासकता हूँ।
लैन—अनुमति	अम लैन खादल—मुझे खाने दो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पैन—विवशता	अम पैन खादल—मुझे खानापड़ता।
शैन—कर्तव्य	अम शैन खादल-मुझे खाना चाहिये
खैन-बार बार	उम खैन खादल—वह बार बार खाता।

[१२]-नाम धातु

कुछ संज्ञाएँ अपने ही अर्थ में क्रिया पद के रूपमें प्रयुक्त होती हैं जैसे जूते मारने को जुतलयाना, बातें करने को बतयाना आदि। इसप्रकार की क्रियाएँ मुहावरों पर अवलम्बित हैं। मानव भाषा में इसप्रकारके जो मुहावरे बनेंगे वे निम्न लिखित नियम के अनुसार बनेंगे।

(१) किसी भी संज्ञा शब्द को अगर नामधातु बनाना हो तो उसके आगे य, जोड़ देना चाहिये। जैसे मम को अगर नामधातु बनाना हो तो ममय धातु बन जायगी।

(२) नामधातु बनजाने पर साधारण धातुओं की तरह उसमें 'ल' 'लू' 'ले' आदि प्रत्यय लगाना चाहिये। जैसे उम्मा ममयल—वे माताकी तरह व्यवहार करते हैं।

११—क्रिया विशेषण

जिन शब्दों से क्रिया की कुछ विशेषता मालूम होती है उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं। 'जल्दी चलता है' इस वाक्य में जल्दी शब्द से चलने की कुछ विशेषता मालूम होती है इसलिये जल्दी शब्द क्रियाविशेषण है। क्रियाविशेषण होते तो अनेक तरह के हैं पर यहां शब्द रूपों की दृष्टिसे छः भेद किये जाते हैं। १ कालवाची, २ स्थानवाची, ३ दिशावाची, ४ वर्णनात्मक, ५ प्रकीर्णक, ६ परागत।

(१)—कालवाची क्रियाविशेषण—

जिस विशेषण से क्रिया की काल सम्बन्धी विशेषता [जल्दी धीरे साथ तब जब आदि] मालूम हो उसे कालवाची क्रियाविशेषण कहते हैं। उसके बनाने और याद रखने के सरल तरीके ये हैं—

अ—कालवाची क्रियाविशेषण के अंत में किसी भी स्वर और अनुस्वार के साथ 'ज' होगा। क्यों कि पहिले क्रियापदों में बताया जा चुका है

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कि ल लू ले आदि काल के सूचक हैं।

आ-हर एक क्रियाविशेषण के अंतमें अनुस्वार जरूर होता है। अनुस्वार रखने से कालवाची संज्ञा शब्द भी क्रिया विशेषण बनजाता है। जैसे इलों-मिनिटभर, एक मिनिट।

इ-कल परसों आदि शब्दों को बनाने का सरल तरीका यह है। कल का अर्थ है एक दिन बाद, परसों का अर्थ है दो दिनबाद। कोन-एक, गोन-दो, आदि शब्दों का पूर्वार्ध लेकर भविष्य काल सूचक 'ले' लगाने से ये शब्द बनते हैं। इनपर अनुस्वार रखनेसे क्रियाविशेषण बनते हैं। भूतकाल चिन्ह 'लू' लगाने से बीते हुए कल परसों आदि के बोधक शब्द बनते हैं।

कोलें-एक दिन बाद (कल)	कोलूं-एक दिन पहिले [कल]
गोलें—दो दिन बाद [परसों]	गोलूं—दो दिन पहिल (परसों)
चोलें—तीन दिन बाद [नरसों]	चोलूं—तीन ,, ,, नरसों
जोलें—चार दिन बाद [अतरसों]	जोलूं—चार ,, ,, अतरसों

कोलं-आज [ला वर्तमान चिन्ह हैं इसलिये वर्तमान दिन]

ई-जहां दिन का बोध न करना हो सिर्फ आगेपीछे काल का बोध करना हो वहां भूत भविष्य आदि सूचक अक्षरों के साथ 'ल' लगादेना चाहिये।

लूलं—पहिले। लेलं=बाद पीछे। लिलं=साथ।

लूलेलं-आगे पीछे (समयकी दृष्टि से आसपास)

उ-विभक्ति चिन्होंसे भी कालवाची क्रियाविशेषण समझे जाते हैं। सेलं-समय के भीतर। डेलं-समय चूककर। पेलं जल्दी, ढेलं-धीरे धीरे।

ऊ-मिनिट घंटा आदि कालपरिमाण सूचक शब्द भाववाचक संज्ञा की तरह 'लो' वाले बनेंगे इनका पहिला अक्षर सुविधानुसार वर्णक्रमसे लगाया जायगा। अंतमें अनुस्वार रखने से क्रियाविशेषण बनजायगा।

अलो—सेकिण्ड.		गेलो सप्ताह
इलो-मिनिट।	किलो-दिन.	चेलो-पक्ष.
उलो-घंटा।	कुलो-रात।	जेलो-महीना।
ऊलोपोरिस्पु	केलो-रातदिन।	टेलो-ऋतु।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ढेलो–वर्ष। ढेलो–रुववत्

फिलों रुकलू–दिनभर रुका। ढेलों राजलू–वर्षभर राज्यकिया।

ए–अनुस्वार निकालदेने पर ये शब्द अव्यय की तरह प्रयुक्त न होकर संज्ञाकी तरह प्रयुक्त होने लगते हैं और फिर विभक्ति प्रत्यय लगने लगते हैं।

कोलेटे —कलकेलिये। कोलेपे – कलका। डलोते – घंटे में।

(ऐ) दिन रात आदि सूचक शब्दों के पीछे भूत भविष्य वर्तमान सूचक लू ले ल लगने से शाम सुबह आदि शब्द बनते हैं। अनुस्वार क्रियाविशेषण सूचक है।

फिलोलें – प्रातःकाल। फिलोलं - दुपहर। फिलोलूं - सन्ध्या। कुलोलं अध्यरात्रि। डेलोले–वर्षका प्रारम्भ। आदि।

ओ–दशाब्दी शताब्दी आदि बनाने केलिये संख्यावाची शब्दों का पूर्वार्ध लगाकर वर्षवाची डेलो शब्द लगादेना चाहिये। जैसे बोल का अर्थ दस, डेलो का अर्थ वर्ष, बोडेलो–दशाब्दी। फोडेलो शताब्दी। ओडेलो –सहस्राब्दी। होडेलो–लक्षाब्दी।

औ–सर्वनाम शब्दों के साथ कालचिन्ह ल लगाने से सर्वनाम के अर्थ के अनुकूल कालवाची क्रियाविशेषण बनते हैं। साधारणतः सर्वनाम का पूर्वार्ध ही लगाना चाहिये। पूरा सर्वनाम लगाने से उस अर्थमें ऐसा जोर आजायगा या परिवर्तन होजायगा जोकि हिन्दीमें 'ही' लगाने से आता है। उदाहरणोंसे यह बात साफ होजायगी।

ऊम- यह	ऊलं-इससमय [अब]	ऊमलं-इसीसमय [अभी]
ओम- वह	ओलं-उससमय [तब]	ओमलं-उसीसमय [तभी]
कुम-कौन	कुलं-कब	कुमलं-कभी
गुम-कितना [कति]	गुलं-कितने (बजे)	गुमलं-कितने ही बजे
चुम- जो	चुलं-जब	चुमलं-जभी
जुम-सो	जुलं-तब	जुमलं-तभी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

टुम युगल	टुलं दोसमय	टुमलं दोनों समय
डुम बहुत	डुलं बहुत समय	डुमलं बहुतही समय
पुम सब	पुलं सब समय (सदा)	पुमलं सदैव
बुम अन्य	बुलं और समय	बुमलं औरही समय
रुम अन्यतर	रुलं दोमें से एक समय	रुमलं दोमेंसे एकही समय
हुम अन्यतम	हुलं बहुतमेंसे किसीसमय	हुमलं बहुतमेंसे एकही समय

२–स्थानवाची क्रियाविशेषण

स--स्थानवाची अक्षर 'स' है। स के योग से स्थानवाची शब्द बनते हैं और अनुस्वार रखने से क्रियाविशेषण। 'ल' लगाने से जैसे सार्वकालिक कालवाची क्रियाविशेषण बनते हैं 'स' लगाने से वैसे सार्वकालिक स्थानवाची क्रियाविशेषण बनते है--नियम कालवाची क्रिया विशेषण के अनुसार है।

सिसं–समतल।	खिसं—साथ साथ।	सेखिसं—दायें।
सूसं नीचे।	लूसं पीछे।	सूखिसं बायें
सेसं ऊपर।	लेस आगे।	सिखिसं बीचमें।

ऊसं इसजगह	ऊमसं इसी जगह
ओसं उस जगह	ओमसं उसी जगह
कुसं किस जगह	कमसं किसी जगह
गुसं कितनी जगह	गुमसं कितनीभी जगह
चुसं जिस जगह	चुमसं जिसी जगह
तुसं तिस जगह	तुमसं तिसी [उसी] जगह
टुसं दो जगह	टुमसं दोनों जगह
डुसं बहुत जगह	डुमसं बहुतही जगह
पुसं सब जगह	पुमसं सभी जगह
बुसं दूसरी जगह	बुमसं दूसरीही जगह
रुसं दोमें सेकिसी जगह	रुमसं दोमें से एकही जगह
हुसं बहुतमें से किसी जगह	हुमसं बहुतमें से किसी एकभी जगह

आठ दिशाएँ

पूर्व-ईसं, पश्चिम-ऊसं, उत्तर-एसं, दक्षिण-ओसं
ईशान..ईसेसं, आग्नेय..ईसोसं, नैऋत्य–ऊसोसं, –वायव्य–ऊसेसं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आ-स्थानपरिमाणवाची शब्द । अनुस्वार लगनेपर यही क्रियाविशेषण । निम्नलिखित-परिमाण लम्बाई के सूचक हैं ।

असो—एक एलिक्ट्रोन बराबर जगह			
आसो	हाईड्रोजन के एक परमाणु	बराबर	जगह
इसो	सब से बड़े परमाणु	,,	,,
ईसो	दो बड़े परमाणुओं से बने हुए अणु	,,	,,
ड़सो	यंत्र द्वारा दृश्य सब से छोटे कण	,,	,,
ऊसो	आंखसे दृश्य सब से छोटे कण	,,	,,
एसो	अंगुल के दसवें भाग	,,	,,
ओसो	एक अन्गुल	,,	,,
केसो	एक बालिश्त अथवा बारह अंगुल	,,	,,
गेसो	एक हाथ अथवा दो बालिश्त	,,	,,
चेसो	दस गेसो=दस हाथ= ५ गज	,,	,,
जेसो	दस चेसो अर्थात् ५० ,,	,,	,,
टेसो	दस जेसो का एक टेसो ५०० ,,	,,	,,
डेसो	दस टेसो का एक डेसो ५००० ,,	,,	,,

गेसों विकलू--हाथभर चला । टेसों इवलू -५०० गज चला ।

[इ] कारक चिन्होंके सम्पर्क से भी स्थानवाची क्रियाविशेषण बनाये जाते हैं । जैसे 'ते' वचन विभक्ति का चिन्ह हैं तो 'तेसं' का अर्थ हुआ भीतर । डेसं–बाहर । पेसं निकट । ढेसं-दूर ।

३- दिशावाची क्रिया विशेषण—

[अ] दिशावाची शब्द और क्रियाविशेषण उसी तरह बनते हैं जिस प्रकार स्थानवाची शब्द और क्रियाविशेषण बनते हैं । अन्तर इतना है कि स्थानवाची में 'स' लगता है दिशावाची में 'स' के पहिले 'र' भी लगता है ।

सूरसं—नीचेकी ओर । लेरसं—आगेकी ओर । लिलिरसं—बीचकी ओर । सेरसं—ऊपरकी ओर । ऐलिरसं—दायीं ओर । सिरसं—समानताकी ओर ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लूरसं—पीछेकी ओर। सूलिरसं—बायीं ओर। ईरसं पूर्व की ओर।
ऊरसं—इसओर। ऊमरसं-इसी ओर। ओरसं—उस ओर। ओमरसं—उसी ओर
पुरसं—सब ओर। पुमरसं—सभी ओर। दुरसं—दो ओर। दुमरसं—दोनों ओर।

स्थानवाची क्रियाविशेषणों को देखकर, स के पहिले र जोड़कर इसी तरह और भी बना लेना चाहिये।

[अ] संज्ञा शब्दों के अन्त में भी 'रसं' लगाने से दिशावाची क्रियाविशेषण बनजाते हैं।

ममीरसं—माता की ओर। इत्यादि।

[इ] कारक चिन्हों से दिशावाची भी क्रियाविशेषण बनते हैं—
तेरसं—भीतर की ओर। डेरसं-बाहर की ओर। पेरसं—निकटता की ओर।
देरसं—दूरी की ओर।

[ई] कालवाची स्थानवाची दिशावाची क्रियाविशेषण के आगे अगर विभक्ति चिन्ह लगादिये जायँ तो भाववाचक संज्ञा की तरह उनका उपयोग होगा। जैसे लूरसंडे लेरसं विकल—पीछे की ओर से आगे की ओर चलता है। कुसंडे—कहां से। गुसंटे—कितनी जगह के लिये।

४— ध्वन्यात्मक क्रियाविशेषण

ध्वनि के अनुकरण में बनाये गये क्रियाविशेषण अनुस्वार रखकर बनाये जाते हैं—

सरसरं, भरभरं, धड़धड़ं, गटागटं, सड़ासड़ं, फटाफटं, आदि।
सर्पा सरसरं विकल—सांप सरसर करता हुआ चलता है।

५— प्रकीर्णक क्रियाविशेषण—

संज्ञा सर्वनाम विशेषण मूल धातु शब्द भी अनुस्वार लगाने से क्रियाविशेषण बनजाते हैं। आवश्यकता होनेपर उन शब्दों के पहिले विभक्ति चिन्ह या उपसर्ग भी लगाये जासकते हैं।

अम--मैं, अमं -स्वयं। सत--अच्छा, सतं--अच्छी तरह। दल--बुरा, दलं--बुरी तरह। इन्द ज्ञानेन्द्रिय, इंदं--प्रत्यक्ष रीति से।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अम ऊमगे इंदं जानल—मैं उसे प्रत्यक्ष (साफसाफ) जानता हूँ ।
तुम अमं जानल—तुम स्वयं जानते हो ।
मजखे सतं खादुल -- पुत्रपुत्रियों ने अच्छी तरह खाया है ।
पाद-पैर, जेपादं=पैरों से-पैदल । अथवा पादं-पैदल ।
टुम-युगल, टुमं-जोड़ीसे । अथवा विभक्ति चिन्ह लगाकर जेटुमं-जोड़ीसे कहा जासकता है । जहां अर्थ स्पष्ट न होता हो वहां पहिले विभक्ति चिन्ह लगाना चाहिये अन्यथा विभक्ति चिन्ह लगाने की जरूरत नहीं ।

जैसे 'किलों खादलू' का अर्थ दिनभर खाया और दिनमें खाया दोनों होसकते हैं ऐसी हालतमें अगर विभक्ति चिन्ह न लगेगा तो उसका अर्थ 'दिनभर खाया' होगा और विभक्ति चिन्ह लगाया जायगा 'तेकिलों खादलू' कहा जायगा तो उसका अर्थ 'दिनमें खाया' होगा । इसी तरह सब जगह समझना चाहिये । विभक्ति चिन्ह के समान उपसर्ग भी जोड़े जासकते हैं। डुम-बहुत, डुमं—बहुलतासे । पुम—सब, पुमं-सबके सब । हुम—अत्यतम, हुमं—एक एक कर । कोन-एक, कोनं-पहिले । अस—होना, असं—जैसा है वैसा-ठीक, अम असं इकल-मैं ठीक बोलता हूँ । मिथ—झूठ बोलना- मिथं झूठ । शिकं—आधे ।

तद्धित आदि प्रयोगोंके बाद भी अव्यय बनते हैं -
धुमूरं—जैसा, जुमूरं-वैसा । बुमूरं-अन्यथा । कुमूरं-कैसा

धातुओं से संज्ञा और विशेषण सरलता से बनते हैं ऊपर अनुस्वार रखने से क्रियाविशेषण बनाने में कठिनता नहीं है । मानवभाषा का साहित्य ज्यों ज्यों समृद्ध होता जायगा त्यों त्यों इसनियम के अनुसार क्रियाविशेषण बनते जायँगे । तथा वे क्रिया विशेषण निराधार न होंगे-संज्ञा सर्वनाम विशेषण और धातुओं से बिलकुल मिलते जुलते होंगे, विभक्ति आदि के चिन्हों से उनके अर्थमें पूरी सफाई रहेगी इसलिये उनका अर्थ समझने में दिक्कत न होगी ।

६-परागत क्रियाविशेषण

अ-उपर्युक्त पांच तरह के क्रियाविशेषणों के सिवाय ऐसे क्रिया विशेषण भी होंगे जो ऊपर के पांच तरह के नियमों के आधार से नहीं बने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं वे सीधे दूसरी भाषाओं से लिये गये हैं। या किसी नियम के बिना कल्पित किये गये हैं। हां! ऐसे शब्द उच्चारण में सरल होना चाहिये तथा दूसरे शब्दों के रूपों से टकराते हुए न होना चाहिये। अगर ऐसे शब्द टकराते हुए तो उनको ह्रस्व करके अनुस्वार रखदिया जायगा। अनुस्वार हर एक क्रियाविशेषण तथा अन्य अव्ययोंके (उद्गारक छोड़कर) अन्तमें आना जरूरी है। दूसरी भाषाओंसे लियेगये कुछ क्रियाविशेषण ये हैं। मुधं वृथा निरर्थक। जरूरं-जरूर अवश्य। शायदं--कदाचित्। कुछं--थोड़ा थोड़ा। अलं--काफी। तकं--तक। चं--भी। पं--ही। रं--सिर्फ।

आ--परागत क्रियाविशेषणों या अव्ययों को अव्ययसूचक अनुस्वार निकालकर आवश्यकता होनेपर उस अर्थ के अनुकूल विशेषण तथा क्रियापद भी बनाया जासकता है।

जरूरं (क्रियाविशेषण) जरूर।

जरूर (विशेषण) जरूर जरूरी चीज, जरूरा-जरूरी पुरुष, जरूरी-जरूरी स्त्री।

जरूरल (क्रियापद) जरूरी होता है।

इसप्रकार अन्य अव्ययों के भी रूपांतर किये जासकते हैं।

मानवभाषा में अव्यय, क्रियापद, औ विभक्तिपदों के अंतिमरूप निश्चित हैं उनके अनुसार परिवर्तन करनेपर संज्ञाको विशेषण क्रियाविशेषण क्रियापद बनाना, विशेषण को संज्ञा, क्रियाविशेषण क्रियापद बनाना, सर्वनाम को विशेषण, अव्यय बनाना, अव्यय को विशेषण क्रियापद बनाना धातु को संज्ञा, विशेषण अव्यय बनाना काफी सरल है।

इ--उपर्युक्त छः प्रकार के क्रियाविशेषणों के विवेचन में बहुतसे क्रिया विशेषणों के नाम आगये हैं तथा बताये हुए नियमों के अनुसार सरलता से बनाये जासकते हैं फिरभी कुछ क्रियाविशेषणों को लिस्ट यहां दीजाती है जो बोलचालमें बहुत काम आते हैं पर पहिले दिये नहीं गये। इनमें कुछ परागत हैं कुछ पुकीर्णक हैं।

नूगं-नुगं-मत, नहीं, न। झप्पं-सहसा, अचानक। पारं-पार। आरपारं-इसपार से उस पार तक। मामूलं-साधारणतः। निपटं-बिलकुल। पूरं-पूरी तरह। शीरं-प्रारम्भ। अन्तं-पूरा। इतिं-समाप्त खलास या मिटना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११ अव्यय

क्रियाविशेषण के समान हर एक भाषा में कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनमें लिंगवचन कारक आदि का भेद नहीं रहता, उन्हें अव्यय कहते हैं। क्रिया विशेषण भी एक तरह के अव्यय हैं पर समझने के सुभीते केलिये उन्हें अलग गिनाया गया है। उनके सिवाय बाकी अव्ययों को एक प्रकरण में रखदिया है।

बाकी अव्यय भी तीन तरह के होते हैं। १ सम्बन्धबोधक २ अवलम्बक ३ उद्गारक।

१ सम्बन्धबोधक अव्यय--जिन अव्ययों का सम्बन्ध किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द से होता है उसे सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं। जैसे-- उनके साथ। यहां साथ अव्यय का सम्बन्ध 'उसके' सर्वनाम से हैं इसलिये 'साथ' सम्बन्धबोधक अव्यय कहलाया।

ऐसा भी होसकता है कि कोई अव्यय सम्बन्धबोधक भी हो और क्रियाविशेषण भी हो। संज्ञा या सर्वनामके साथ सम्बन्ध रखने से वह सम्बन्धबोधक और क्रिया की विशेषता बताने से क्रियाविशेषण। जैसे-पहाड़ के ऊपर गया। यहां 'ऊपर' अव्यय का सम्बन्ध पहाड़ के साथ है इसलिये यह सम्बन्ध बोधक कहलाया। ऊपर जाने से जाना क्रिया की विशेषता मालूम हुई इसलिये क्रियाविशेषण कहलाया। लेकिन सभी सम्बन्धबोधक अव्यय क्रियाविशेषण नहीं होते। जैसे -तुम्हारे माफिक आदमी मैंने नहीं देखा। यहां माफिक अव्यय का सम्बन्ध तुम्हारे से है, क्रिया से नहीं। इसलिये इसे क्रियाविशेषण न कहेंगे।

सम्बन्धबोधक अव्यय के साथ संज्ञा और सर्वनाम को मानवभाषा में सम्बन्ध विभक्ति ही लगती है। दूसरी भाषाओंमें इसविषयमें ऐसा निश्चित नियम नहीं है। किसी सम्बन्ध बोधक अव्यय के योग में कर्म, किसी के योगमें करण सम्प्रदान अपादान सम्बन्ध आदि कोई विभक्ति लगती है। मानवभाषा में यह गड़बड़ी नहीं है।

जो सम्बन्धबोधक अव्यय क्रियाविशेषणों में बता दिये गये हैं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उन्हें छोड़कर अन्य सम्बन्ध बोधक अव्ययोंमें से कुछ यहां बता दिये जाते हैं। ये अव्यय भी अनुस्वारान्त होते हैं।

संगं साथ। नंगं-विना। जेगं-द्वारा। फ़ुरं-बदले। तुदं-मारे (उसके मारे मैं बैठ नहीं सका - उसपे तुदं अम कैन तुगं सिटलु) सारं अनुसार। जेगं = कारण। दुशं विरुद्ध। मीमं अनुकूल। मीसं परस्पर। नीमं निमित्त। टेगं वास्ते। साकं सहित। समं तरह। गेगं बाबत। डेगं अपेक्षा। मोचं सिवा। ओडं योग्य।

२- अवलम्बक अव्यय—

उसे कहते हैं जो दो शब्दों या दो वाक्यों को परस्पर अवलम्बन देता है: मिलाना, विभाजन करना, कार्य कारण सम्बन्ध बनाना, पहिली बात में संशोधन करना आदि अवलम्बक अव्यय का काम है। ये कई तरह के होते हैं। जैसे—

[अ] संयोजक-जो दो शब्द या दो वाक्य जोड़े। जैसे—

अं और [राजा अं. राजनी = राजा और रानी]

मं तथा [राजा अं राजनी मं राजमजाखे = राजा और रानी तथा राजकुमारियाँ]

अं और मं का अर्थ एक है पर पहिलीबार 'अं' आता है और दूसरी बार मं।

[अ] विभाजक--जो एक शब्द या वाक्यको दूसरे शब्द या वाक्य से अलग करे।

यं या (अम यं हुम = मैं या तू (पहिलीबार)

वं- अथवा [अम यं हुम वं बुम = मैं या तू अथवा अन्य [दूसरी बार]

नुगं—नहीं [अमटे, नुगं हुमटे--मेरेलिये, नकि तुम्हारे लिये।

नुकं—नहीं तो [अम लुकल नुकं ओम हिडोल, मैंने देख लया नहीं तो वह छिपजाता।

इ-पक्षांतर बोधक—जिससे पहिले कही गई बातके विरोधमें या दूसरे पक्षमें कुछ बात कही जाय। जैसे—

किंतुं-किंतु लेकिन, अगर। ओमी ममी असक्त किंतुं नुगं सबल।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

[वह माता है मगर प्यार नहीं करती ।

कातुं—वल्कि । [इम उमगे शैंन नुगं दुशल कातुं लवल—तुम्हें उसके साथ वैर नहीं करना चाहिये वल्कि प्यार करना चाहिये ।

ई–प्रयोजनदर्शक–जिससे प्रयोजन परिणाम या फल मालूम हो ।

टेटं–इसलिये । उम मिथलू टेटं अम नुगं लवल–उसने झूठ बोला इसलिये मैं प्यार नहीं करता ।

उ–कारणदर्शक–जिससे कारण मालूम हो ।

जेजं–क्योंकि । अम उमगे नुगं लवल जेजं उम मिथल = मैं उससे प्यार नहीं करता क्योंकि वह झूठ बोलता है ।

ऊ–कर्मदर्शक–जिससे पहिले वाक्य का विषय मालूम हो ।

गं–कि । उम किहलू गं अम थिचेल – उसने कहा कि मैं अपना इलाज करानेवाला हूँ ।

ए–युगल—जहां दो अव्यय एक दूसरे के ऊपर अवलम्बित रहें और अर्थपूर्त्ति केलिये दोनों का आना अनिवार्य हो । जैसे हिंदीमें, यदि–तो, यद्यपि–तथापि, ।

चं–ते = यदि तो ।

चं अमखे उवोलू तं जयोलू–यदि हम इकट्ठे हुए होते तो जीत जाते ।

चकं– तकं—यद्यपि तथापि । चकं अम उमगे डुमं जेगलू तकं उम नुगं जिगंलू– यद्यपि मैंने उसे बहुत जगाया तोभी वह जगा नहीं ।

ऐ–अर्थबोधक—किसी शब्द या वाक्य का अर्थ स्पष्ट करने केलिये जिस अव्यय का उपयोग किया जाता हो । जैसे—

अर्थ—अर्थात् मानो । मनं—मानो । दसं—जैसे ।

३ – उद्गारक अव्यय उसे कहते हैं जो सुख दुःख हर्ष के आश्चर्य प्रेम पुकार आदि की भावनाओं के द्योतक होते हैं । ये अव्यय एक तरह से मनुष्य के स्वाभाविक उद्गार हैं इसलिये इनकेलिये यह नियम बनाना ठीक नहीं कि ये अनुस्वारान्त ही होंगे । हां ! कुछ उद्गारक प्रचलित भाषाओं के अनुसार होते हैं उनमें अवश्य अनुस्वार डाला जा सकता है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हर्षसूचक– अहा ! अहाहा ! हिप् हिप् हुर्रे !
शोकसूचक– हाय !
वेदनासूचक– उफ् ! उह् ! आह् !
आश्चर्यसूचक– ओह् ! ओहो !
अनुमोदनसूचक– सतं !
उपेक्षा सूचक– ऊँह् !
प्रशंसा सूचक– वाह् !
घृणासूचक– थू थू ! छिस् !
स्वीकारता सूचक– वरं ! ओं !
अभिमान सूचक– हुं !
तिरस्कार सूचक– हुट् ! होट् !
संबोधन सूचक– मिम्मो ! (भक्तिमय सम्बोधन)
मिन्नू ! (प्यार का सम्बोधन)
निन्नू ! (वात्सल्य का संबोधन)
हे ! हो ! (आदरणीय संबोधन)
ए ! ओ ! ऐ ! (सामान्य संबोधन]
रे ! [छोटे केलिये संबोधन]
ढे ! [तिरस्कार सूचक संबोधन)
निषेधसूचक– नुनू [नहीं] नुनूनू [नहीं नहीं, बिलकुल नहीं)
अभिवादनादि सूचक– निर्म–भुकना, साधारणतः । बड़ों के लिये ।
मानं– आदर (नेता आदि महान के लिये)
सेवं– माता पितादि गुरुजनों के लिये ।
लवं–प्यार, छोटे बड़े बराबरी वाले आदि सबके लिये ।
सिनलवं—दाम्पत्यप्रेम [दम्पति या जिनका दम्पति बनना निश्चित हो गया है उनमें परस्पर के लिये । अभिन्न प्रेम]
मिसलवं–मित्र प्रेम (मित्रों के लिये)
मगलवं– भाइयों या भाईतुल्य मित्रों के लिये ।
मजलवं—सन्तानोपम व्यक्तियों केलिये
हशं, षोशं–(अपने से छोटों केलिये)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१२ उपसर्ग

किसी शब्द के अर्थ में अनुकूल या प्रतिकूल कोई विशेषता लाने के लिये उस शब्द के पहिले कोई अक्षर लगाया जाता है उसे उपसर्ग कहते हैं। उपसर्ग साधारणतः एक ही अक्षर (स्वरसहितव्यंजन] का होता है। स्वतंत्र रूपमें इनका उपयोग कभी नहीं होता। खास खास उपसर्ग यहां बतादिये जाते हैं।

शो--सर्वोच्चता, सो--उच्चता, ओ—अधिकता, हो—विशालता
शे--विशेषता, रे—नीचता, ये—न्यूनता, वे—अल्पता
से—सहयोग, रो—विरोध, रु-रू-बुरा, सु सू-भला
लो—अन्तमर्यादा, ले—आदि मर्यादा, नो—निषेध, ने--निर्गमन
सि—बराबर ठीक

शोशूग-सब से बड़ा बहादुर। सोशूग-बड़ा बहादुर। ओधनिर-बड़ा धनवान। होदेश-विशाल देश। शेमिस-विशेष मित्र। रेमिस-नीचमित्र। येनिपल-कम नापता है। वेपिलल-कम पीता है। सेविकल-साथ चलता है। रोविकल-उलटा चलता है। रुनिचल-बुरा नचता है। सुकुरल-भला करता है। लोयूरोपं-यूरप के अन्ततक, उस किनारे तक। लेयूरपं यूरप के इस किनारे तक। नोमिस-अमित्र। नेलिज-निर्लज्जतासे। सिपेंटल बराबर छापता है।

पहिले वाच्य और प्रयोगके प्रकरण में विभक्ति चिन्हों को उपसर्ग के समान काम में लाया गया है। वे भी उपसर्ग हैं।

१३—कृदन्त

(अ) भाववाचक संज्ञा—

धातुमें ओ लगाने से भाववाचक संज्ञा बनती है जैसे—खाद=खादो =भोजन। मर—मरो=मौत।

[आ] स्वभावार्थक विशेषण—

धातुके बाद एर लगाने से स्वभाव अर्थमें विशेषण बनता है।

खादेर खाद+एर-भोजनकी क्रिया करना जिसका स्वभाव है अर्थात्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खादाड़ ।

गुवेर–जिसे बार बार टट्टी लगती है ।

हसेर–हँसना जिसका स्वभाव है, हसोड़ ।

[इ] कारकार्थक विशेषण—

धातुके आगे विभक्ति प्रत्यय लगाकर उसके आगे 'र' लगाने से जो विशेषण बनता है उस का अर्थ होता है क्रिया के प्रति उस कारक रूप बननेवाला जैसे —

खादकेर–जो खाता है वह ।

खादगेर–जिसे लोग खाते हैं–खाद्य,

गिवचेर–जिसे लोग देते हैं, देने का उपक्रम, दानपात्र

मारजेर–जिससे मारते हैं डंडा वगैरह

खादटेर–जिसकेलिये लोग खाते है भूख बुझाना या स्वाद, खादटेर क्या है भूखबुझाना या स्वाद ?

गिरडेर–जहां से लोग गिरते हैं । शिखर वगैरह ।

वसनेर–जिसमें लोग बसते हैं–घर ।

चढ़ेर – जिसपर लोग चढ़ते हैं पहाड़ वगैरह ।

विभक्तिके साथ काल और जोड़ना हो तो कारक चिन्हके बाद क्रियाका कालचिन्ह जोड़कर फिर र जोड़ना चाहिये ।

खादगेर – जो खाया जाता है । खादगेलुर–खाया गया । लु भूत चिन्ह जोड़ा गया

(ई) विभक्ति के व्यञ्जन स्वर को उलटकर पहिले स्वर और पीछे व्यञ्जन करके लगाने से उसी विभक्ति के अर्थ को लेकर संज्ञा बनती है ।

गुत्र + ते । ते = त ए – का उलटा एत । गुत्र + एत = गुत्रेत संडासी गुत्र – हगना, ते – लयन विभक्ति का चिन्ह । जिसमें हगा जाय वह । लिंग चिन्ह लगनेपर गुत्रेतु । इसी प्रकार लिखेतु – कागज, आदि

[र] धातु अपने मूल रूप से भी संज्ञा या विशेषण बन सकती है । उस समय उस से बड़ी चीज समझी जाती है जिससे उसका मुख्य और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशेष सम्बध है। लिंग के अनुसार उसमें अंतिम स्वर होगा।

थूक–थूकना, थूकु- थूक। वप– बोना, वपु– बीज।

उग– उगना, उगु–अंकुर। झिर— झरना, झिरु— झरना।

लंग– लगड़ाना, लंगा– लँगड़ा। दर– दलना, दरु— दाल।

औक—उल्टी करना, औकु = उल्टीमें निकली वस्तु।

लप—गप लड़ाना, लपु– गप्प।

ऊ- क्रिया को कर्म बनाना

दो क्रियाएँ मिलाकर भी एक क्रिया बनती है। ऐसी हालतमें पहिली क्रिया दूसरी क्रिया का कर्म बनजाती है। खाद+इश=खादिश —खाने की इच्छाकरना। खादिशल–खाने की इच्छा करता है।

१४-तद्धित

[अ] किसीभी संज्ञा शब्द के पीछे 'कर' लगानेसे उसके करने वाले का बोध होता है।

गंथुकर–पुस्तक बनाने वाला।

[आ] संज्ञा के आगे विभक्ति चिन्ह लगाकर 'र' लगानेसे उस कारकके अनुसार अर्थवाला विशेषण बनता है।

जापानतेर–जापानमें रहनेवाला।

राजपेर—राजा का-राजा का सम्बन्धी

राजटेर—राजा केलिये जो चीज हो वह।

अमटेर–जो अपने लिये चीज हो वह

पुमटेर–सब केलिये जो चीज हो वह।

गिरुडेर–पहाड़ से जो चीज हो वह-पहाड़से आई या निकली हुई।

गिरुतेर–पहाड़ में रहनेवाला।

दुखुगेर–दुखका कर्म-दुखिया।

[इ] किसी शब्द के सलिंग रूहके आगे र लगाने से उसके विशेष उपयोग करने वाला का बोध होता।

रसुर–रसका विशेष उपयोग करनेवाला।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(ई) जब कोई चीज किसी से भरी होती है तब इर प्रत्यय लगाते हैं रसिर–रससे भरी हुई, रसमय ।
हठिर–हठ से भरी हुई ।

(उ) सरीखा अर्थमें ऊर प्रत्यय लगाते हैं । नाग+ऊर-नागूर नागसरीखा

परिमाण की बराबरी के अर्थ में 'उर' लगाते हैं । जैसे-इम+उर=इमुर -तुम्हारे बराबर । राज+उर-राजुर-राजा के बराबर । कुम+उर-कुमुर-कितना या किसके बराबर ।

[ऊ] संख्या वाचक शब्दके पीछे 'प' लगाने से उतने नम्बर का बोध होता है । कोनप (पहिला) गोनप [दूसरा] चोनप तीसरा, पोधोनप [९९ वाँ] फोनप [सौ वां] सोनोप [करोड़वाँ] गुमप-किस नम्बर का ।

सर्वनाम शब्दों के साथ लगाने से परिमाण का बोध होता है । गुमप-कितना

[ए] धारण करने के अर्थ में 'इर' प्रत्यय लगाते है ।

धनिर-धनवाला । अथवा धनुइर-धनवाला ।

(ऐ) किसी शब्द के पीछे ओ लगा देनेसे भाववाचक संज्ञा बनती है । जैसे-सुन्दर+ओ सुन्दरो–सुन्दरता ।

१५–समास

अनेक शब्दों को मिलाकर एक शब्द बनाना समास है । समास होने पर शब्दों के बीच की विभक्तियाँ और उभयान्वयी अव्यय अलग कर दिये जाते हैं ।

मानव भाषा में समास पांच तरह के हैं । १–द्वंद्व, २– तत्पुरुष. ३–अव्ययीभाव. ४– कर्मधारय. ५- क्रियाविषयक ।

बहुव्रीहि समास यहां नहीं रक्खा गया क्योंकि उससे भ्रम पैदा होता है । इसी कारण से द्विगुभी हटाया गया । विश्वभक्त शब्द में अगर तत्पुरुष माना जाय तो अर्थ होगा विश्व का भक्त, बहुव्रीहि माना जाय तो अर्थ होगा-विश्व है भक्त जिसका । इस प्रकार दो समासों से परस्पर विरोधी दो अर्थ हो जायंगे । मानवभाषा की नीति यथाशक्य अर्थभ्रम हटाने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की है।

१ द्वन्द-सब शब्दों की जिसमें प्रधानता रहती है वह द्वन्द समास है। रामसीताखे-राम और सीता।

द्वन्द के बीच में आये हुए शब्दों में लिंगचिन्ह रह भी सकते हैं नहीं भी रहसकते। लिंग चिन्ह हटाने से अर्थ कुछ व्यापक हो जाता है इससे अगर भ्रम न हो तो न डालने से भी काम चलेगा, नहीं तो डालना उचित है। ममामजाखे सुपिलज- पिता पुत्र सो रहे है। यहां अगर ममामजाखे सुपिल' कर दिया जाय तो अर्थ होगा माता पिता और सन्तान सो रहे हैं। जैसी इच्छा हो वैसा प्रयोग करना चाहिये।

द्वंद समास में बहुवचन आता है। परन्तु जहां पर दो चीजों को एक चीज के समान प्रयोग करना हो वहां एक वचन का प्रयोग होता है। जैसे— पढ़नालिखना, खानापीना, लिखोरिडो, खादोपिदो, आदि। इसे समाहार द्वंद कहते हैं।

विभक्ति सबकी एक होती है अन्तिम शब्द के साथ लगाई गई विभक्ति सब के साथ समझना चाहिये और तदनुसार ही अर्थ करना चाहिये।

२—तत्पुरुष—अन्तिम शब्द की प्रधानतासे अनेक शब्दोंको मिलाना तत्पुरुष है। इसमें जो विभक्ति लगती है उसका सम्बन्ध अंतिम शब्द सेही रहता है। राममभीटे-रामकी माता केलिये। इसमें टे [केलिये] का सम्बन्ध सिर्फ मभी के साथ है रामकेसाथ नहीं। तत्पुरुष समाजमें पहिला शब्द कर्म से सम्बन्ध तक किसीभी किभक्तिमें होता है। समास होनेपर विभक्ति लुप्त होजाती है।

३—अव्ययीभाव—अव्यय केसाथ शब्द जोड़ने से जो एक शब्द बनता है उसमें अव्ययीभाव समास होता है। जैसे अमंमिक—अपने आप बननेवाला।

४—कर्मधारय—दो शब्द विशेषण विशेष्यके रूपमें मिलकर जब एक होजाते हैं तब कर्मधारय समास होता है। जैसे हूरमिनी सुंदरपत्नी।

५—क्रियाविषयक—जब कोई क्रिया किसी अन्य क्रिया को अथवा संज्ञा या विशेषण को विषय बनाकर एक शब्द बनजाती है तब उसे क्रियाविषयक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समास कहते हैं। वह तीन प्रकार का होता है—अ–क्रियाकर्मक, आ–संज्ञाकर्मक, इ--विशेषणकर्मक।

अ–क्रियाकर्मक–जब एक क्रिया दूसरी क्रिया का कर्म अर्थात् विषय बनजाय तब क्रियाकर्मक समास होता है। जैसे–टिकौ–लेना, इश–इच्छा करना, टिकौइश--लेने की इच्छा करना।

आ–संज्ञाकर्मक--जब कोई संज्ञा किसी क्रिया का विषय बनजाती है तब संज्ञाकर्मक क्रियासमास होता है। जैसे–मिमी-माता, मिक–बनना, मिमीमिक- माता बनना। ऊमी मिमीमिकल--यह माता बनती है।

इ–विशेषणकर्मक--जहां कोई विशेषण किसी क्रिया का कर्म या विषय बनजाय वहां विशेषणकर्मक क्रियासमास होता है। जैसे--हसेर-मिक-हसौड़ बनना।

१६ गिनती—गिलो

आजकल के गिनती के शब्दों को याद करने और ध्यान में रखने में काफी कठिनाई है, क्योंकि उनकी रचना में स्वरों और व्यञ्जनों का कोई क्रम नहीं है और न दूसरी जाति के शब्दों से विशेषता है। उचित यह है कि वर्णमाला की रटाई का लाभ अधिक से अधिक अवसरों पर उठाया जाय जिससे रटाई जितनी कम होसके उतनी कम कीजासके। मानव भाषा में गिनती के शब्दों को इस क्रम से बनाया गया है कि एक बार सूत्र समझ लेने पर सारे गणना शब्द ध्यानमें रहने लगते हैं।

१—दस अल्पप्राण व्यञ्जन और दस स्वरों को क्रमसे जोड़ने से और पीछे एक न अक्षर और जोड़ने से दस तक की गिनती बनजाती है। क ग च ज ट ड त द प ब इनके साथ अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ ये दस स्वर जोड़े गये और न और लगाया गया, तब कन गान, चिन, जीन, टुन, डून, तेन, दैन, पोन, बौन, ये दस तक गिनती के नाम बनगये।

२–ग्यारह बारह आदि संख्याएँ एक पर एक, एक पर दो, एक पर तीन आदि लिखने से बनती हैं। इसलिये इनके नाम भी इसी ढंग से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बना लिये गये हैं। एक पर एक अर्थात् कन कन, एक पर दो अर्थात् कनगान, एक पर तीन अर्थात् कनचिन इत्यादि। पर इनमें से प्रारम्भ का 'न' अगर हटादिया जाय तो भी समझने में कोई दिक्कत न जायगी। और शब्द कुछ छोटा होजायगा इसलिये कनकन को ककन, कनगान को कगान, कनचिन को कचिन आदि बोलेंगे। इस तरह ११ से १९ तक की संख्या बन जायगी।

३—बीस की संख्या के लिये दो पर शून्य रखना पड़ता है, दो पर दस लिखकर बीस बनाये नहीं जासकते, इधर इन शब्दों में शून्य सूचक शब्द है नहीं, इसलिये बौन को शून्य मानलिया। जब अकेला बौन आये तब तो उसका अर्थ दस हो, जब किसी अक्षर के बाद आये तब उसका अर्थ शून्य हो। इस प्रकार गाबौन=२०, चिबौन ३०, बौबौन १०० आदि संख्याएँ बनजाती हैं।

४-सौ तक की गिनती अल्पप्राण अक्षरों के आधार से बनगई। इसके बाद सैकड़ा हजार लाख करोड़ आदि संख्या के लिये महाप्राण अक्षरों का उपयोग किया गया है। और स्वर आदि में ऐसा परिवर्तन किया गया है जिससे सुनने में १०० के भीतर की संख्या का भ्रम न हो जाय। निम्नलिखित सूचनाओं के आधार से ये शब्द बने हैं—

क—एक से दस तक जिसप्रकार अल्पप्राण अक्षरों का उपयोग किया गया है उसीप्रकार सैकड़ा से सौ संख तक महाप्राण अक्षरों का उपयोग किया गया है।

ख—एक से दस तक जो स्वरों का क्रम था वही यहां रहा है पर अन्तर मालूम हो इसलिये हरएक स्वर अनुस्वार के साथ दिया गया है। नियमानुसार दीर्घस्वर पर अनुस्वार का उच्चारण अनुनासिक के समान होगा।

ग—अन्त के नकार को एकारान्त बना दिया है। इस परिवर्तन से सैकड़ा हजार आदि की संख्या का अन्तर और जल्दी ध्यान में आजायगा। अन्त का एकार एक तरह से समाहार सूचक है। सौ और सैकड़ा का एक अर्थ होनेपर भी थोड़ा फर्क है। हिन्दी में पौनसौ और पौन सैकड़ा में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्तर नहीं समझा जाता। जब कि मानवभाषा में फर्क है। सौ को बौबौन और सैकड़ा को बौने कहेंगे। नेर्जी का अर्थ है पौन। अगर नेर्जी बौबौन रुपया कहा जाय तो उसका अर्थ होगा ९९॥।) निन्यानवे रुपये बारह आने, किन्तु यदि नेर्जी बौने कहा जाय तो उसका अर्थ होगा ७५) पचहत्तर, (पौन सैकड़ा)

संख्यावाची शब्द के अन्त में 'ए' लगादेने से समाहार का ज्ञान होता है। जैसे बीस और बीसी में अन्तर होता है वैसा अन्तर गाबौन (२०) गाबौने (बीसी) में होगा इसीप्रकार चिन (तीन) चिने (त्रिक) जीन (चार) जीने (चतुष्टय) टुन (पांच) टुने (पंचक) आदि में समझना चाहिये।

५—मानवभाषा की गिनती का नक्शा इसप्रकार बनेगा।

१ कन	२ गान	३ चिन	४ जीन	५ टुन	६ डून	७ तेन	८ दैन	९ पोन	१० बौन
११ ककन	१२ कगान	१३ कचिन	१४ कजीन	१५ कटुन	१६ कडून	१७ कतेन	१८ कदैन	१९ कपोन	२० गाबौन
२१ गाकन	२२ गागान	२३ गाचिन	२४ गाजीन	२५ गाटुन	२६ गाडून	२७ गातेन	२८ गादैन	२९ गापोन	३० चिबौन
३१ चिकन	३२ चिगान	३३ चिचिन	३४ चिजीन	३५ चिटुन	३६ चिडून	३७ चितेन	३८ चिदैन	३९ चिपोन	४० जीबौन
४१ जीकन	४२ जीगान	४३ जीचिन	४४ जीजीन	४५ जीटुन	४६ जीडून	४७ जीतेन	४८ जीदैन	४९ जीपौन	५० टुबौन
५१ टुकन	५२ टुगान	५३ टुचिन	५४ टुजीन	५५ टुटुन	५६ टुडून	५७ टुतेन	५८ टुदैन	५९ टुपौन	६० डूबौन
६१ डूकन	६२ डूगान	६३ डूचिन	६४ डूजीन	६५ डूटुन	६६ डूडून	६७ डूतेन	६८ डूदैन	६९ डूपौन	७० तेबौन
७१ तेकन	७२ तेगान	७३ तेचिन	७४ तेजीन	७५ तेटुन	७६ तेडून	७७ तेतेन	७८ तेदैन	७९ तेपौन	८० दैबौन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८१ दैकन	८२ दैगान	८३ दैचिन	८४ दैजीन	८५ दैटुन	८६ दैडून	८७ दैतेन	८८ दैदैन	८९ दैपोन	९० पोबौन
९१ पोकन	९२ पोगान	९३ पोचिन	९४ पोजीन	९५ पोटुन	९६ पोडून	९७ पोतेन	९८ पोदैन	९९ पोपोन	१०० बौबौन
सैकड़ा खंने	हजार घाँने	लाख छिंन	करोड़ झींने	अरब ठुंने	खर्ब डूँने	नील थेंने	पद्म धौंने	संख फोंने	सौखंड भौंने

६—पाव आधा पौन सवा डेढ़ आदि अंशगणना का प्रयोग निम्न लिखित तरीके से करना चाहिये।

का—किसी चीज के जितने अंश करके जोड़ना या घटाना हो उस संख्या वाची शब्द का अन्तिम न छोड़कर प्रथम अक्षर पर अनुस्वार रखना चाहिये। फिर अगर जोड़ना हो तो 'स' और घटाना हो तो 'नें' उपसर्ग लगाना चाहिये। जैसे पाव का अर्थ है चौथा हिस्सा, चार का संख्या वाची शब्द है जीन, इसमें न निकालकर जी पर अनुस्वार देना फिर स जोड़ना, होगा 'सजीं' इसका अर्थ हुआ चौथा हिस्सा अधिक, अर्थात् 'सवा'। अगर 'नें' जोड़ा जाय तो इसका अर्थ होगा चौथा हिस्सा कम अर्थात् 'पौन'। इसप्रकार अन्य शब्द भी समझ लेना चाहिये।

सवा—सजीं। पौन—नेजीं। डेढ़—सगां। आधा नेगां।

पौने छः—नेजीं डून। सवा छः—सजीं डून। साढ़े छः—सागांडून। तृतीयांश अधिक तीन--सचिं चिन। सप्तमांश अधिक नव--सतें पोन। सप्तमांश कम नव--नेतें पोन।

ख—भिन्न गणितमें बटे की जगह 'भागं' शब्द का प्रयोग करना चाहिये। एक बटे तीन—कन भागं चिन। सात बटे आठ--तेन भागं दैन। इत्यादि।

७—संख्यावाचक शब्दों में लिंगभेद नहीं होता वे विशेषण की तरह संज्ञा के पहिले आते हैं। विशेष्य संज्ञा के साथ रहने पर विभक्ति चिन्ह की भी जरूरत नहीं रहती। विशेष्य न होने पर विभक्ति चिन्ह लगता है। चिनटे--तीन के लिये, आदि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बोनभोन्दस केलिये

७ आधा-शिकं का अर्थ है आधा। गोनशिकं-डेढ़। (दूसरा जिसमें आधा है) इसी तरह चोनशिकं ढाई, जोनशिकं साढ़ेतीन, आदि समझना। गोनशिकं फोनो-१५०, दोनशिकं फोनो साढ़ेसातसौ। फोनो शिकं-सौ और आधा।

पीशं-चौथाई। गोनपीशं-सवा। नेपीशं-पौन। गोन नेपीशं-पौनेदो।

१६—कौटुम्बिक शब्द

१-आजकी भाषाओं में कौटुम्बिकशब्दों की गड़बड़ी—

आजकल की भाषा में कौटुम्बिक शब्दों की बड़ी कमी है और जो हैं भी उनमें बड़ी गड़बड़ी है। एक ही शब्द कई रिश्तोंमें काम आता है। अंग्रेजी का ब्रदरइनला साले के लिये भी और बहिनोई के लिये भी काम आता है। इसी तरह के शब्द सनइनला, फादरइनला आदि हैं। पत्नी की सास भी सासू और बहिनोईकी मां भी सासू, या साहुनजू। साले की सन्तान को साली की सन्तानको क्या कहना इसके लिये भी शब्द नहीं, फिर जो भी शब्द हैं उनसे यह पता लगाना मुश्किल है कि शब्द किसनियम से गढ़े गये हैं। कहीं स्त्रीलिंग शब्द बहिन का द्योतक है कहीं पत्नी का। मामा मासी पतिपत्नी द्योतक है साला साली पुत्र पुत्री आदि बहिन भाई द्योतक, जब कि पिता और बुआ भाई बहिन होनेपर भी शब्दोंका कोई मेल ही नहीं। इसप्रकार कौटुम्बिक शब्दों के बारे में आज की भाषाएँ अत्यन्त दरिद्र और अनियमित हैं। जब कि लैङ्गिक शब्दों की सुव्यवस्था तथा सम्बन्ध निश्चित प्रत्ययों के कारण मानव भाषा के कौटुम्बिक शब्द व्यवस्थित और पूर्ण हैं।

२-कुटुम्ब मूल— कुटुम्ब के मूल में पांच तरह के सम्बन्ध हैं जिनके मिलने से अन्य सम्बन्ध बनते हैं।

१- पैदा करने वाले = माता पिता।
२- पैदा होने वाले = पुत्र पुत्री।
३- साथ पैदा होनेवाले = भाई बहिन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४– साथ रहकर एक व्यक्तित्व बनजाने वाले = पति पत्नी
५– प्रेम के कारण कुटुम्बी के समान बनने वाले मित्र।

इन पांचों के सम्बन्ध से अनेक तरह के रिश्ते पैदा होते हैं जिन्हें ज्ञाति या कुटुम्ब कहते हैं। इन सब को जुदे जुदे शब्दों से सम्बोधन करने की जरूरत है।

३–मूल शब्द—

सारे कुटुम्ब की मूल माता है। स्वाभावतः पिता का उपकार और उपयोगिता माता की अपेक्षा थोड़ी है। माता के लिये विविध भाषाओं में मा, माता, मातर, मादर, मदर, ममी, मामा आदि शब्दों का प्रयोग होता है इसलिये माता के लिये 'म' का प्रयोग करना ही उचित है, पर मानव-भाषा में एकाक्षरी संज्ञा शब्द बनाना ठीक नहीं, इसलिये उसके लिये 'मम' शब्द का प्रयोग करना उचित है। किन्तु मानवभाषा में प्राणिवाची शब्द उभयलिंगी होते हैं इसलिये मम उभयलिंगी शब्द हुआ इसीसे 'मम' का अर्थ माता के साथ पिता भी समझा गया।

कुटुम्ब के अन्य शब्दों में दो 'म' तो नहीं पर एक 'म' रखना आवश्यक है और अन्य प्रत्यय लगाने पर उच्चारण में कठिनता न जावे इसलिये निम्नलिखित रूप में उभयलिंगी शब्द बनाये जाते हैं।

मम = मातापिता मज = पुत्रपुत्री
मग = भाई बहिन मिन = पतिपत्नी
मिस = मित्र।

४–त्रिलिंगी मूलशब्द—

पहिले बताये हुए लिंग चिन्हों के अनुसार तीनों लिंगों में मूल शब्द इस प्रकार हुए।

उभयलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
मम [मातापिता]	ममा [पिता]	ममी [माता]
मज [पुत्रपुत्री]	मजा [पुत्र]	मजी [पुत्री]
मग [बहिनभाई]	मगा [भाई]	मगी [बहिन]
मिन [दम्पति]	मिना [पति]	मिनी [पत्नी]
मिस (स्त्री या पुरुष मित्र)	मिसा (पुरुषमित्र)	मिसी (नारीमित्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२—कौटुम्बिक प्रत्यय—

(क) ये पांच रिश्ते हैं। इनके परस्पर मिलने से कुटुम्ब बढ़ता है। जैसे—बहिन का बेटा, पत्नी का भाई, मा की बहिन, पिता की बहिन, बेटी का पति आदि। इन रिश्तों में दूसरा रिश्ता जोड़ने के लिये कुछ प्रत्यय बनालिये गये हैं, जिनके जोड़ने से अन्य रिश्तों के नाम तैयार होजाते हैं। ये प्रत्यय चार हैं।

	उभयलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
(ख)	म (मातापिता के लिये)	मा	मो
	ग [बहिनभाई के लिये]	गा	गी
	ज (पुत्र पुत्रीके लिये)	जा	जो
	न [पति पत्नी के लिये)	ना	नी

जैसे—ममी (माता) + गा [भाई =ममीगा [माताका भाई मामा]
ममा (पिता] + गी [बहिन] ममागी पिताकी बहिन बुआ
इस प्रकार सब रिश्तों के शब्द बनेंगे।

(ग) हां! जहां पति या पत्नी सूचक प्रत्यय लगेगा वहां उभयलिंगी रूप से ही काम चल जायगा। जैसे—मगी [बहिन] + ना = मगोना [बहिनोई] यहां मगना कहने से भी काम चलेगा। क्यों कि पति मगा [भाई] का तो हो नहीं सकता, बहिन [मगी] का ही होगा इसलिये उभयलिंगी मग से ही काम चलेंगे। इसप्रकार चार प्रत्यय और पांच मूल शब्दों को हिसाब से मिलाने से सब रिश्तों के व्यवस्थित शब्द बनजाते हैं। याद न रहें तो हिसाब लगाकर उनका अर्थ तुरन्त समझा जासकता है। रिश्ते इस प्रकार बनेंगे।

[घ] ममागा—काका। ममा [पिता] + गा [भाई] ममागा—पिताका भाई।
ममागी—फूफी। ममा (पिता) + गी [बहिन]—ममागी—पिताकी बहिन।
ममागनी—काकी। ममा [पिता] + ग [भाई] + नी [पत्नी]
पिता के भाई की पत्नी
ममागना—फूफा। ममा (पिता) + ग [बहिन) + ना [पति)
पिता की बहिन का पति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ममीगी=मौसी । ममी — माता, + गी—बहिन, माता की बहिन ।
ममीगना—मौसा । ममी—माता, ग—बहिन, ना—पति—माताकी बहिनका पति
ममीगा—मामा । ममी—माता, गा—भाई, माता का भाई ।
ममीगनी—मामी । ममी—माता + ग भाई, +नी--पत्नी, माताके भाईकी पत्नी
मिनामी—सासू । मिना पति, मी--मां, पतिकी मां ।
मिनामा—ससुर । मिना पति, मा पिता, पति का पिता ।
मिनीमी—सासू । मिनी पत्नी, मी—माता, पत्नीकी माता 'सासू'
मिनीमा— ससुर । मिनी 'पत्नी', मा 'पिता' पत्नी का पिता ।
मजना—जमाई । मजी-पुत्री, ना-पति । पुत्री का पति मजीना या मजना ।
मजनी—पुत्रवधू । मजा-पुत्र, नी-पत्नी—मजानी या मजनी
ममनी—विमाता । मम- पिता—नी पत्नी, पिता की पत्नी ।
ममना—विपिता । मम 'माता', ना 'पति', माका पति 'विपिता—दूसरा पिता
मगनी—' भाभी ' । मग ' भाई '- नी ' पत्नी ' भाई की पत्नी
मगना—बहिनोई । मग बहिन, ना पति, बहिन का पति
मिनागी—ननँद । मिना पति + गी ' बहिन ' पति की बहिन
मिनागा—देवर या जेठ । मिना ' पति ' + गा ' भाई ' पतिका भाई ।
मिनागनी—'देवरानी या जिठानी । मिना पति+ग भाई, नी 'पत्नी' पति के भाईकी पत्नी
मिनागना 'नन्दोई' । मिना पति, ग—बहिन, ना—पति पतिकी बहिन का पति ।
मिनीगा— साला । मिनी— पत्नी, गा भाई ' पत्नीका भाई ।
मिनीगी— साली । मिनी पत्नी ' + गी ' बहिन ' पत्नीकी बहिन
मिनीगनी सारंज । मिनी ' पत्नी ', ग 'भाई', नी 'पत्नी' पत्नीके भाईकी पत्नी
मिनीगना—साढूभाई । मिनी पत्नी, ग बहिन, ना 'पति' पत्नीकी बहिनका पति
मगाजा— भतीजा । मगा भाई, जा ' पुत्र--भाई का पुत्र ·
मगाजी ' भतीजी ' ,, ,, जी पुत्री, भाई की पुत्री
मगीजा-- भानेज । मगी— बहिन, जा पुत्र, बहिन का पुत्र
मगीजी - भानेजन ,, ,, जी पुत्री बहिन की पुत्री
मगाजनी— भतीजबहू । मगा भाई, ज 'पुत्र' नी 'पत्नी' भाईके लड़केकी पत्नी
मगाजना ' भतीजीका पति । मगा ' भाई ' ज ' पुत्री ' ना- पति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मगोजनी ' अनेजवहू '
मगोज़ना ' अनेजन का पति '
मिनागाजा ' देवर या जेठका लड़का। मिना ' पति ' ग ' भाई ' जा ' पुत्र '
मिनागाजी ' देवर या जेठ की लड़की '
मिनागाजनी ' देवर या जेठ के लड़के की बहू '
मिनागाजना ' देवर या जेठ की लड़की का पति '
मिनागीजा ' ननंद का लड़का '
मिनागीजी ' ननँद की लड़की '
मिनागीजनी ' ननँद के लड़के की बहू '
मिनागीजना ' ननँद की लड़की का पति '
मिनीगाजा ' साले का लड़का '
मिनीगाजी ' साले की लड़की '
मजनीसा—समधी [पुत्रवधू का पिता]
मजनामा— ,, [जमाई का पिता]
मजनीमी समधिन—पुत्रवधू की मां।
मजनामी ,, —जमाई की मां।
मिनीगाजनी —साले के लड़के की बहू '
मिनीगाजना ' साले की लड़की का पति '
मिनीगीजा ' साली का लड़का '
मिनोगीजी ' साली की लड़की '
मिनोगीजनी ' साली के लड़के की बहू '
मिनीगीजना ' साली की लड़की का पति '
मिसजा ' मित्र का पुत्र '
मिसजी—मित्र की पुत्री
मिसाजा—पुरुष मित्र का पुत्र
मिसाजी—पुरुष मित्र की पुत्री
मिसीजा—नारीमित्र का पुत्र
मिसीजी— नारीमित्र की पुत्री
मिसीजनी—नारीमित्र की पुत्रवधू

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिसगा—मित्र का भाई
मिसमा—मित्र का पिता
मिनानी—सौत-सपत्नी । मिना–पति, नी–पत्नी, पतिकी पत्नी ।
मिनौना—पत्नी का दूसरा पति । मिनो–पत्नी, ना–पति, पत्नी का पति।

इत्यादि रूप बनालेना चाहिये । इनको याद करने की जरूरत नहीं है । सिर्फ पांच मूलशब्द और चार प्रत्यय याद करलेना चाहिये और तरीका ध्यान में रखना चाहिये ।

देवर जेठ बड़ी ननंद छोटी ननंद आदि जहां बड़ा छोटापन दिखाना हो वहां हो [बड़ा] वे [छोटा] उपसर्ग लगादेना चाहिये । मिनाहोगा-जेठ, मिनाहोगनी–जेठानी, मिनावेगा–देवर, मिनावेगनी–देवरानी, मिनावेगी, छोटी ननंद, मिनाहोगी बड़ी ननंद आदि ।

(ङ) स्त्रीत्व पुरुषत्व सूचक चिन्ह न लगाने से उभयलिंगी सामान्य शब्दों का निर्माण किया जासकता है ।
भगज—भाई के पुत्रपुत्री बहिन के पुत्रपुत्री सब ।
भगजनी—भाई और बहिन की पुत्रवधुएँ
भगजना– भाई के जमाई और बहिन के जमाई ।
भगाज– भाई की पुत्र पुत्रियाँ
भगीज– बहिन की पुत्र पुत्रियाँ ।

इस तरह उभयलिंगी प्रयोग जहां किया जायगा वहीं उसका उभयलिंगी व्यापक अर्थ होजायगा ।

च– बोलचाल में विशेष शब्दों का उपयोग न भी किया जाय तो भी चल सकता है । जैसे सब गुरुजनों पुरुषों को ममा, सब गुरुजनस्त्रियों को ममी कह सकते हैं । इसी तरह सब पुत्रोपम स्थस्त्रियोंको मजा मजी आदि कह सकते हैं

छ— पिता के पिता आदि या पुत्र के पुत्र आदि में भी इसी नियम के आधार से शब्द बनाये जासकते हैं । जैसे—
ममामा – पिता का पिता ' आजा '
ममामी – पिता की माता ' आजी '

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ममीमा—माता का पिता [नाना]
ममीमी—माता की माता [नानी]
ममीमीगा—माता का मामा
ममीमीगनी—माता की मामी
मजाजा—पुत्र का पुत्र [नाती]
मजाजी—पुत्र की पुत्री [नातिन]
मजीजा—पुत्री का पुत्र
मजीजी—पुत्री की पुत्री
मजीजना—पुत्री का जमाई
मजीजनी—पुत्री की पुत्रवधू

नियम समझलेनेपर ऐसे शब्द सरलता से बनाकर प्रयोग किये जासकते हैं और समझे जासकते हैं। नये नये रिश्तों को नये नये शब्द याद करने की जरूरत नहीं है, न आजकल की तरह गड़बड़ी रखने की जरूरत है।

(ञ) साधारणतः बोलचालमें आजा, नाना, मा के मामा, पिता के मामा आदि वृद्ध गुरुजनों को मममा या मरुमा, और आजी नानी आदि सब को ममभी या मरुमी कहना चाहिये। पुत्र का पुत्र पुत्री का पुत्र आदि को मजजा मजजी आदि।

झ—दाम्पत्य से सम्बन्ध रखनेवाली कुछ और अवस्थाएँ होती हैं जिन्हें पूरा दाम्पत्य नहीं कहसकते फिर भी कुछ रिश्ता होजाता है। उनके लिये निम्नलिखित शब्दों का उपयोग करना चाहिये।

मिक्किना—दूल्हा या वर। मिक्किनी—दूल्हिन या कन्या। सामान्य शब्द मिक्किन [मिक धातुका अर्थ बनना है, मिकि वर्तमान वर्तमान का रूप है]

मिकेना—जिसका विवाह संकल्प या सगाई होचुकी हैं, पर विवाह होनेवाला है। पुरुष मिकेना, नारी मिकेनी। सामान्य शब्द मिकेन। [मिके—मिक के भविष्य का रूप है]

मिनूरा—जिनका विवाह नहीं हुआ पर दम्पतिसरीखे रहने लगे हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुरुष मिनूरा, नारी–मिनूरी, । सामान्य शब्द मिनूर । हिन्दी में इस जगह रखैल शब्द का उपयोग होता है । (ऊर प्रत्यय सरीखा अर्थ में लगता है)

कूमना—जिसने दाम्पत्य की जिम्मेदारी नहीं ली है सिर्फ किसी कारण सम्भोग में साथ दिया है । नियोग से सन्तान पैदा करने के लिये किसी पुरुष को सम्भोग का साथी चुना जाय तो उसे कूमना कहेंगे। और उस स्त्रीको कूमनी । सामान्यशब्द कूमन ।

पुराने युग में धृतराष्ट्र पांडु विदुर की माताओं ने सन्तान के लिये व्याससे नियोग किया था तो व्यास कूमना कहलाये और उक्त महिलाएं कूमनी ।

आज भी जो स्त्रियाँ किसीको पति नहीं बनाना चाहतीं सिर्फ सन्तान के लिये किसी पुरुषसे सम्बन्ध स्थापित करती हैं उस सम्बन्ध में भी नर नारी को कूमना कूमनी कहेंगे ।

जो विवाह बन्धन को नहीं मानते, या जिनमें विवाह की प्रथा नहीं है वहां भी सम्भोग मिलन के नरनारी को कूमना कूमनी कहेंगे

(कूम धातुका अर्थ सम्भोग करना है)

कूमनूरी–वेश्याओं को कूमनूरी कहेंगे । और उनके साथ सम्भोग करने वालों को कूमनूरा ।

ठूमरा–व्यभिचार करने वाले पुरुषको ठूमरा और व्यभिचारिणी को ठूमरी । ठूम धातुका अर्थ व्यभिचार करना है ।

नारा–देव मनुष्य पशुपक्षी आदि किसी भी जातिके प्राणी में पुरुष वर्ग को नारा और स्त्रीवर्ग या मादाओं को नारी कहेंगे ।

१८ शब्द रचना

१–मानवभाषा में अधिकांश शब्द धातुओं से बनाये जायँगे । धातु का मूलरूप जैसे किसी क्रिया को बताता है उसी प्रकार उस क्रिया से सम्बन्ध रखने वाली किसी वस्तु को या विशेषण को भी बताता है। जैसे सत का अर्थ अच्छा होना (क्रिया) है तो सत का अर्थ अच्छा (विशेषण) भी है; पाह का अर्थ पाहुना बनना है तो पाह का अर्थ पाहुना भी है । जूम का अर्थ इनाम देना है तो जूम का अर्थ इनाम की वस्तु भी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है। किट का अर्थ काटना है तो किट का अर्थ काटनेवाला औजार भी है। कुर का अर्थ करना है तो हाथ भी है। धातु से सम्बन्ध रखनेवाले कर्ता कर्म करण आदि में से किस चीज को उस धातुके मूलरूपका अर्थ बनाना, यह धात्वर्थ की मुख्यता पर निर्भर है। जिससे अधिक निश्चित वस्तुका भान होता हो उसीको लेना चाहिये।

यह संज्ञा है या क्रिया इसका भेद तो उसकी रूपावलि से पता लग जायगा। संज्ञा में कारक प्रत्यय लगेंगे और क्रिया में काल प्रत्यय; संज्ञा के लिंग चिन्ह भी लगते हैं क्रिया में लिंग चिन्ह नहीं लगते इसलिये भी अन्तर मालूम होगा।

२–मूल धातुके रूप में जो शब्द बनगये हैं उन्हें तद्धित प्रत्यय लगाकर भी बनाया जासकता है। जैसे चाव का अर्थ चबाना है। दांतों से चबाया जाता है इसलिये चाव का अर्थ दांत भी है। साथही तद्धित नियम के अनुसार चावेज का अर्थ भी दांत है।

३–जहां मूलरूप और तद्धित आदि रूपों से एक ही अर्थ में दो शब्द बनेंगे वहां दूसरा शब्द उस अंश के लिये नियत होजायगा जिसमें वह क्रिया विशेष रूपमें पाई जाती है जैसे चाव और चावेज दोनों का अर्थ दांत है पर दांतों में चबाने का विशेष काम दाढ़ों को करना पड़ता है इसलिये चावेज का अर्थ दाढ़ होगा। साधारण सब दांतों को चाव कहेंगे।

४–बहुत से शब्द उपसर्ग जोड़कर तथा दो धातुओं को मिलाकर बनाये गये हैं।

५–बहुतसे शब्द रूढ़ भी होंगे जो सीधे दूसरी भाषाओं से आयेंगे। होसकता है कि पीछे उसके वैकल्पिक रूपमें धातु निष्पन्न शब्द भी बना दिये जायँ।

६–एक वर्ग के बहुत से शब्दों को धातुके पहिले स्वर व्यंजन के क्रमसे एक अक्षर लगाकर बनाया जायगा। क ग च ज आदि अल्पप्राण व्यञ्जनों के क्रम से नम्बर दिया जायगा। पर स्वर की समानता से सुनने में कभी कभी थोड़ी बहुत गड़बड़ी होजाती है इसलिये साथमें स्वरों का क्रम भी जोड़दिया जायगा। क गा चि जी टु डू दे पो बौ। ते इसलिये छोड़

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिया कि वह मानवी भाषा में अयन विभक्ति का चिन्ह है इसलिये अर्थभ्रम पैदा करेगा।

जब एक वर्ग के शब्द इससे अधिक होजायँगे तब वहां अल्पप्राण के समान महाप्राण शब्दों का भी क्रम काम में लिया जायगा। जब इससे भी काम न चलेगा तब प्रत्यक व्यञ्जन को अनेक स्वर लगाये जायँगे। जैसे—क कि कु, ख खि खु आदि बीच में वह शब्द छोड़ दिया जायगा जो किसी दूसरे अर्थ में भी प्रचलित होगा।

इसप्रकार के नामों में जो क्रम बनाया जायगा उसका विचार उन वस्तुओं की उपयोगिता, उत्पत्ति क्रम, लोकप्रियता प्रसिद्धि तथा कहीं कहीं स्वरुचि को लक्ष्य करके रक्खा जायगा। जैसे मीठी चीजों में गन्ना गन्ने का रस, गुड़, शक्कर, मिश्री इसप्रकार उत्पत्ति क्रमसे नम्बर दिये गये हैं। अगर क्रमभंग हो तो समझना चाहिये कि वह शब्द मानवभाषा में पीछे से आया है इसप्रकार शब्दों के निर्माण से सरलता से एक ही वर्ग के बहुत से शब्द ध्यान में रह जायँगे।

७—किसीकिसी जातिके शब्द उनकी किसी संख्या परिमाण आदि के अनुसार किसी तरह का वर्णमालाक्रम देकर बनाये गये हैं। इस तरह के शब्दोंसे किसी चीज का सिर्फ नाम ही नहीं मालूम होता किन्तु उसकी विशेषता का भी पता लगता है

८—कहीं कहीं दो शब्दों को इसप्रकार मिलाया जायगा कि एक का पहिला अक्षर आवे और दूसरे का पूरा शब्द, इसप्रकार एक नया शब्द बनजाय। जैसे खीट माने खट्टा, मिस्स माने मीठा, खीमिस्स माने खटमिट्ठा।

९—इस पुस्तक में जो शब्द दिये गये है उनके सिवाय अन्य लोकभाषाओं के शब्दों का या धातुओं का प्रयोग भी किया जासकता है। शर्तें ये रहेंगी—

क—कोई शब्द या धातु संयुक्ताक्षर से शुरु न हो।

ख—धातुमें दो से अधिक स्वर न हों।

ग—मानवभाषा में उस शब्द का दूसरा अर्थ न होता हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घ–मानवभाषा में अभी उस अर्थ को बतानेवाला शब्द तैयार न हुआ हो।

ङ–शब्द बहुत लम्बा तथा उच्चारण में क्लिष्ट न हो। पांच से अधिक स्वर और एक से अधिक संयुक्ताक्षर न हों।

(बहुत ही कम प्रयोग में आनेवाले शास्त्रीय शब्दोंमें इस नियम में कुछ ढिलाई से काम लिया जासकेगा)

१०–यहां जो शब्दकोष दिया जारहा है वह नमूने के रूपमें ही है। इतने से शब्दों से काम नहीं चलसकता विश्वभाषा का शब्दभंडार तो आजकी भाषाओं से भी विशाल होगा। धातुकोष भी काफी विशाल होगा। यह सब काम धीरे धीरे होगा। इस पुस्तक का शब्दकोष मानवभाषा के शब्दकोष का अंगुलि-निर्देश ही समझना चाहिये।

११–शब्दकोशमें लिंग चिन्ह नहीं दियेगये हैं। अर्थ के अनुसार स्वयं लगाये जासकते हैं। अगर स्पष्टता के लिये कहीं जरूरत होगी तो लगा दिये जायँगे।

१२–धातुकोष तथा मानवभाषा के व्याकरण के अनुसार तथा शब्द रचना के छट्टे नियमको ध्यानमें रखकर नये शब्द बना लेना चाहिये।

भोजनशाला—इटोकुरस

चौका – इटस	अन्न – अन्न	कण – कन्न
गेहूँ – गाअन्न	चना – चिअन्न	चावल – जीअन्न
जौ – गीअन्न	ज्वार – टुअन्न	बाजरा – डूअन्न
मका – दैअन्न	दालवाले अन्न–दरन्न	दाल – दर
तुअरकी दाल – कदर	उड़द की दाल–गादर	चना की दाल – चिदर
मटरकी दाल–जीदर	मूँग की दाल–टुदर	मोंठ की दाल–डूदर
मसूर की दाल–दैदर	सोयाबीन–पोदर	तिलहन आदि–सिरन्न
तिल्ली – कसिरन्न	अलसी – गासिरन्न	करडी – चिसरन्न
सरसों – जीसरन्न	सींगदाना–टुसरन्न	तिल्ली का तेल–कसिर
अलसी का तेल–गासिर	इत्यादि—	

बोलचाल में तिल्ली को कसिर, अलसी को गासिर आदि भी कह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सकते हैं। तूसिर से तेल ही समझा जायगा।

खिचड़ी – युग्गन्न	खटमिट्ठा – खीमिस्स	पापड़ – पप्पड़
पिसी चीज – गरं	आटा – कगरं, गरं	दलिया – गागरं
बेसन – चिगरं	मैदा – जीगरं	अन्यपाउडर – टुगरं
मुखपाउडर – डूगरं	शाक – तुर	परवल – कतुर
लौकी – गातुर	गिलका – चितुर	तोरई – जीतुर
भिंडी – टुतुर	कद्दू – डूतुर	ढेंढ़स – दैतुर
करेला – पोतुर	कुन्दरू – बौतुर	टमाटर – खातुर
पानी – पीत	ओस – कपीत	तुषार – गापीत
स्नो – चिपीत	बर्फ – जीपीत	तयार किया बर्फ–टुपीत
खारी चीज – खार	नमक – कखार, खार	सैन्धव – गाखार
साम्भरी – चिखार	समुद्रीमीठ – जीखार	काला नमक – टुखार
फलों का नमक–डूखार	सोडा – दैखार	कास्टिक सोडा–गोखार
गोरस – छीर	दूध – कछीर	बासुन्दी – कीछीर
मलाई रहित दूध–कूछीर	दूधकी लस्सी कोछीर	दही गाछीर

दहीकी लस्सी गीछीर। छाछ- गुछीर। छैना चाछीर छैनेकी मिठाई चीछीर

छैने का पानी चूछीर	मलाई जाछीर	मक्खन जीछीर
घी जूछीर	मावा टाछीर	रबड़ी टीछीर
मावा की मिठाई टूछीर	खीर टोछीर	रसगुल्ला डाछीर
बर्फी डीछीर	पेड़ा डूछीर	मलाई का बर्फ डोछीर
लड्डू पाछीर	हलुआ पीछीर	मिष्ट वस्तु मिस्स
छोटा गन्ना कमिस्स	बड़ा गन्ना कामिस्स	गन्ने का रस गामिस्स
राब चिमिस्स	गुड़ जीमिस्स	शक्कर टुमिस्स
मिश्री डूमिस्स	फलोंकी शक्कर पोमिस्स	शक्कर का सत बौमिस्स
खटाई खीट	कैथ काखीट	इमली गाखीट
कमरख चिखीट	निम्बू जीखीट	कच्चा आम टुखीट
खटाई का सत डूखीट	गोरसकी खटाई पोखीट	मसालेकी चीज--रिस्स
धनिया कारिस्स	जीरा कीरिस्स	राई कूरिस्स
काली मिर्च गारिस्स	मिर्च गीरिस्स	कोथमीर चारिस्स

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पोदीना चीरिस्स	मीठी नीम चूरिस्स	हल्दी चैरिस्स
अद्रक चोरिस्स	चटनी टारिस्स	अचार टीरिस्स
सूखोचटनी टूरिस्स	मुरब्बा डारिस्स	सुधारस डीरिस्स
काँजी डूरिस्स	रोटी आदि सरंग	रोटी कासरग
पुड़ी कीसरग	परामठे कूसरग	झपाटा कैसरग
बबरा कोसरग	मोटीरोटी गासरग	डबलरोटी गीसरग
खाजा चासरग	गूजा चीसरग	कचौड़ी चूसरग
पापड़ी चैसरग	खुरमा जासरग	बिस्कुट जीसरग
सेव टासरग	गांठिया टीसरग	बतियाँ टूसरग
वनस्पतिखाद्य शम्मिट	मांसखाद्य हिंसिट	फल फाव
अमरूद कफाव	रामफल किफाव	सीताफल कुफाव
बेल कैफाव	बेर कोफाव	संत्रा चफाव
मोसम्मी चिफाव	मीठानिम्बू चुफाव	आम जफाव
केला जिफाव		इत्यादि
मांसभोज्य काहिंस	मछलीभोज्य कीहिंस	अन्यजलचरभोज्य-कूहिंस
अण्डा चिहिंस, इडु,	शोरवा तूहिंस	इत्यादि
चूल्हा आदि पेकेद	चूल्हा कापेक	ऊल किपेक
भट्टी होपेक	सिगड़ी चापेक,	अंगीठी चिपेक
गुरसी चूपेक	भुसका चूल्हा चोपेक	प्राइमस जापेक
गेस का चूल्हा जिपेक,	बिजलीका चूल्हा जूपेक	किरणोंका चूल्हा जोपेक
कुकर टापेक		

(चूल्हा आदि को कापेकद आदि भी कहा जासकता है।

इंधन दिहग	लकड़ी इंधन-कदिहग	कोयला गादिहग
पत्थरका कोयला चिदिहग	वासलेट जीदिहग	पेट्रोल टुदिहग
स्पिरिट डूदिहग,	जलाने का कोई तेल दैदिहग	
आग दिह	ज्वाला कदिह	अंगार गादिह
पेटकीआग चिदिह	अदृश्य आग जीदिह	तेजाब टुदिह
धुँवा दिहड	राख राख	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गंजआदि पिकेद	तवा काविक	लुहडियाँ--कीपक
कैला कूपिक	गंज चापिक	काँसिया चीपिक
बटलोई चूपिक	कढ़ाई चोपिक	इत्यादि
चम्मचआदि पैशेज	चटुआ कपैश	कलछुरी गापैश
चम्मच चिपैश	चमची जीपैश	चायदानी टुपैश, इत्यादि
छन्ना छानेज	कपड़ेका छन्ना कछान	
चाय आदि की छन्नी—गाछान	आटे की पतली छन्नी चिछान	
आटेकी बड़ी छन्नी- जीछान	फिल्टरका छन्ना- टुछान	अनाजका छन्ना टूछान
चूनामिट्टीका छन्ना पोछान	गिट्टी आदि का छन्ना बोछान	
थाली आदि इटैत	पत्तल काइट	थाली गाइट
थाल चाइट,	कोपर जाइट	बसी टाइट
रकाबी डाइट	पानदान पाइट	इत्यादि
कटोरी आदि पितेत	गिलास कपित	कप गापित
कटोरी चिपित	टोंटीदार लोटा जीपित	पथरोटी टुपित इत्यादि
घड़ा आदि कुम्भ	मटका काकुम्भ	गागर कीकुम्भ
सुराही कूकुम्भ	टोंटीदार सुराही कोकुम्भ	झंजरा गाकुम्भ
नाद चीकुम्भ	डबला, चाकुम्भ	डबुलिया चीकुम्भ
सकोरा चूकुम्भ	गुंड टाकुम्भ	कलशी टीकुम्भ
सुराहीनुमाधातुघट टूकुम्भ	टोंटीदार लोटा टोकुम्भ	बड़ा हंडा डाकुम्भ
गंगाल डीकुम्भ	बाल्टी डूकुम्भ	भगोना डोकुम्भ
लोटा पाकुम्भ	लोटी पीकुम्भ	मूसल आदि ठुकेज
मूसल कठुक	खल्लका बट्टा गाठुक	सिलका बट्टा चिठुक
धानकूटने का जीठुक		इत्यादि
उखली आदि ठुकेत	उखली काठुकत	खल्ल गाठुकत, इत्यादि
झारीआदि ढम	झारी कढम	झारा काढम
सांचा गढिम	सांचे की जालीकापत्र फूढम	
सींका आदि–वाग वागेक	सींका कावाग	दीवाल खूंटा गावाग
खूटियों की पट्टी गीवाग		

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीवाल कील गूत्रग खूटियों का स्टैंड गोवाग

घर-रीहेत

अपनाघर- रीहम, वास,	महल-मोरीह	भवन शेरीह
बिल्डिंग सोरीह	साधारणघर रीह	छोटाघर वेरीह
झोपड़ी फूरीह	पंडाल कशोरीह	तम्बू कवेरीह
रावटी कफूरीह	टीनशेड गवेरीह	गुफा चवेरीह
हॉल कारीह	कमरा कोरीह	कोठरी कूरीह
गेलरी केरीह	छपरी कोरीह	आँगन नेरीह
अट्टालिका सेसरीह	तलघर सूसरीह	अन्तःपुर तेसरीह
अर्धाट्टालिका शिकसेसरीह	उपाट्टलिका फूसेसरीह	बहिर्गृह डेसरीह
शयनगृह सुपोरीह	बैठक सिटोरीह	कार्यगृह कम्मोरीह
भंडार संचोरीह	अन्नभंडार अन्नरीह	ईंधनघर दिहगरीह
तापालय तिपोरीह	संडास गुत्रोरीह	पेशाबघर मुतोरीह

कचराघर गुकोरीह,गुकोस स्नानगृह विदोरीह,विदोस

शारीरिककृत्य करनेका घर (जैसे रेलकी पहिलीदूसरी श्रेणीके डब्बेमें) बूशोरीह

श्रृंगारगृह सिजोरीह,सिजोस चबूतरा--सिटोस इत्यादि

(नोट-पूरे कमरे के लिये 'रीह' लगाना चाहिये, थोड़ीसी जगह ही काममें आती हो तो 'स' लगाना चाहिये। जहां रीह निकालने पर अर्थ-भ्रम न होता हो वहां रीह निकालकर संक्षिप्त रूप बोला जासकता है। जैसे फूसेसरीह या फूसेस। अथवा 'स' भी निकाला जा सकता है जैसे फूसेसरीह का फूसेरीह।

नीव-कादेय	जोता—कीदेय	खड़ंगा-कूदेय
फर्श—गादेय	दीवार चादेय	पड्दो—चीदेय
पार्टीशन—चूदेय	काष्ठपाटनी-जादेय,	धातुपाटनी—जीदेय
बीमपाटनी—जूदेय	सिमिटपाटनी—जैदेय	छड़पाटनी-जोदेय

छप्पर आदि- छद, छदेक। छप्पर काछद। सिलिंग कीछद। पर्दे का छत-कूछद

छत आदि-छद गच्ची-गाछद गुम्मट आदि-गीछद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिखर–काक्किंच   कलश–कीक्किंच   विद्युदाकर्षक–कूक्किंच
ध्वजदंड–कैक्किंच   विद्युद्दंड [रेडियोमें]–कोक्किंच
फाटक डाविश   द्वार—डीविश   खिड़की–डूविश
झरोखा–डैविश   हवादानी–डोविश
किवाड़ आदि–रोकेज   साधारण किवाड़ कारोक   सींकचाकिवाड़–कीरोक
फिरता किवाड़–कूरोक   बेंडा–कैरोक   सींकचा–कोरोक
चौखट–रोकेद   धनुष [आर्च]–निब्व
अलमारी काजग्ग   आला कीजग्ग   दिउटा–कूजग्ग
दीवाल गैलरी–कोजग्ग   खिड़कीबैठक चाजग्ग   द्वार बैठक–चीजग्ग
कंगूरा–जाजग्ग   चित्र कंगूरा–जीजग्ग   दीवाल खूंटा–जूजग्ग
मुतंगा–टाजग्ग   छेदवाला मुतंगा–टोजग्ग। आड़ाआदि–थोमेक
आड़ा–काथोमक   मयाल–कीथोमक   बीम–कूथोमक
शहतीर–चाथोम   फाँटा–चीथोम   नत्ता–जाथोम
बांसवत्ता–जीथोम   बिछाई–टाथोम   थड़–टीथोम
कवेलु–छादक   मिट्टीका सादा कवेलु–काछाद
टाइलकवेलु–कीछाद   खम्भा–खम्भ   नसैनी आदि–इव
नसैनी–काइव   जीना–कीइव   घुमावदार जीना–कूइव
खुले पाटियोंका जीना–कैइव   ढालजीना–कोइव   लिफ्टआदि–एव
क्रेन–काएव   लिफ्ट–कीएव
सामान ऊंचे लेनेकी अन्य व्यवस्था–कूएव   सीढ़ी–पिंशिव
पानीचढ़ाने की व्यवस्था–पितेव   ताला आदि–लौग
चावी–सौग   सांकल आदि–फूलौग।   सांकल–कफूलौग
सिटकनीसांकल–गाफूलौग   सिटकनी–चिफूलौग   छड़सांकल जीफूलौग
छड़कुंडा टुफूलौग   कुंडा फुसेत   कील आदि डक
कील कडक   खीला खाडक   स्क्रू–गिडक,गीडक
सलाई गूडक   पेंचकस गिडकेज   हथोड़ाआदि ठुक्केज
कुल्हाड़ीआदि केटेज   बसूलाआदि नेगेज   आरीआदि चीरेज
पत्थर खुडक   मामूली पत्थर खुडक   चकमकपत्थर काखुड

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संगमरमर कीखुड संगजीरा कूखुड संगमूसा कैखुड
रंगीन पत्थर कोखुड। शरीरश्म जीवखुड मुरुम फूखुड।
लोढ़ा गाखुड रुब्बल गीखुड शिला, गूखुड
चट्टान गोखुड बजरी चाखुड चीप चीखुड
कंकड़ चूखुड रेती चैखुड पिसापत्थर चोखुड।
खम्भेकी बैठकका पत्थर--जाखुड फाड़ी जीखुड
कोना जूखुड लम्बा पत्थर--जैखुड। फरसी टाखुड
सिमिटफरसी टीखुड टाइल टूखुड। सिमिट डाखुड
चूना झिक साधारणचूना काझिक पोतनेका चूना कीझिक
खाने का चूना इटोझिक। दीपक- दिम्प। तिलतेलदिया कदिम्प
गैस बिजली आदिका बहुतप्रकाशवाला दीपक--शेदिम्प
घासलेटका दिया गदिम्प। गैसका दिया चदिम्प। बिजलीका दिया--जदिम्प
तिलतेलका साधारण दिया कादिम्प तिलतेलकी लालटेन कीदिम्प।
घासलेट का साधारण दिया गादिम्प घासलेटकी लालटेन गीदिम्प
छोटी चिमनी गूदिम्प टेबुल लेम्प गोदिम्प।
मसालेकी गैसका दिया चादिम्प गैस की लालटेन चीदिम्प
गैसका हंडा चूदिम्प गैसका हंसदीप चोदिम्प।
बैटरी दीपक जादिम्प बिजलीकी बत्ती जीदिम्प, चम्मदिम्प
कांच की नली में प्रकाशमान विद्युद्दीपक-- जोदिम्प
लालटेन आदि की चिमनी, सेदिम्प

(से का अर्थ सहयोग है चिमनी दीपक में सहयोगी होनेसे सेदिम्प कहा। विशेष दीपक की चिमनी या ग्लोब बताना हो तो उसी के साथ'से'लगा देना चाहिये। जैसे सेचोदिम्प--गैसकी लालटेन की चिमनी।

पलंग वगैरह लिटेद खाट कलिट पलंग गालिट
टूटका पलंग चिलिट शृंगारी पलंग जीलिट स्ट्रेचर टुलिट
रेल आदिका बर्थ डूलिट तखत पोलिट नीचा तखत--बोलिट।
बिछानेकी चीज--बिछ डोरिया काबिछ शतरंजी कीबिछ
बड़ीदरी कूबिछ जाजम कोबिछ। गलीचा गाबिछ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चादर गीबिछ्।	चटाई चाबिछ	चटाई (पतली) चीबिछ
चटाई (बांसकी) चूबिछ्।	टाटचटाई—जाबिछ	रंगीन टाटकी-बिछ,जीबिछ
टाटबिछाई जूबिछ।	गद्दा टाबिछ	गदेला टीबिछ
गादी टूबिछ।	तकिया आदि—टिग	तकिया कटिग
गोलतकिया गाटिग	टिकनेकी पट्टी चिटिग	उसीसा जीटिग।
बैठने की चीज सिटेंद	नीचे बैठनेकी चीज	कसिट
मूढ़ा वगैरह गसिट	कुर्सी चसिट	आरामकुर्सी जसिट
बेंच टसिट।	गद्दीदार बेंच आदि	डसिट
सिंहासन पसिट	आसन कासिट	चौकी कीसिट
नीचा मूढ़ा कूसिट	तिपाई पासिट	मूढ़ा गोसिट
दीवालमूढ़ा गूसिट।	बिनाहाथ की कुर्सी चासिट	
टूटकी कुर्सी चोसिट	बेंचकुर्सी चूसिट	हाथवाली कुर्सी चोसिट।
छड़बेत-कुर्सी जासिट	घूमतीकुर्सी जीसिट	आरामकुर्सी टूटकी--जूसिट
आरामकुर्सी जोसिट।	बिना टेका की बेंच—टासिट	
टेकादार बेंच टीसिट	गैलरी टूसिट।	
स्प्रिंगवाली कुर्सी—डासिट.	स्प्रिंगदारबेंच डीसिट	कोच डूसिट
सिंहासन डोसिट।	टेबुलवगैरह कुरद	टेबुल काकुरद
एकखंभेकाटेबुल कोकुरद	गोलटेबुल कूकुरद	बहुतलम्बीटेबुल कैकरद
बहुत लम्बी चौड़ीटेबुल कोकुरद		डेस्क गाकुरद
बाजौट गीकुरद	छोटीबाजौट गूकुरद।	पेटीवगैरह हिन्ड
पेटी काहिन्ड	सन्दूक कीहिन्ड	चमड़े की पेटी कूहिन्ड
ट्रंक कैहिन्ड	हेंडबेग कोहिन्ड	तिजोरी गहिन्ड
तिजोरी (पेटीनुमा) गाहिन्ड	तिजोरी [अलमारी नुमा] गीहिन्ड	
विशालतिजोरी [कमरे सरीखी] गोहिन्ड।		डब्बा आदि चहिन्ड
डब्बा चाहिन्ड	डब्बो चिहिन्ड	मनीपाकिट चूहिन्ड
कोट का पाकिट चैहिन्ड	भीतरका बड़ा पाकिट चोहिन्ड	
थैला आदि जहिन्ड	थैला जाहिन्ड	कपड़ेका थैला जीहिन्ड
थैली जूहिन्ड	बटुआ जैहिन्ड	अलमारी आदि टहिन्ड

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अलमारी–टाहिन्ड	थूनती अलमारी टीहिन्ड	खुली अलमारी-टूहिन्ड
स्टैंड फूहिन्ड	पंजरआदि डहिन्ड	पींजड़ा डाहिन्ड
अस्थिपंजर डीहिन्ड	पसली डूहिन्ड	झाडूआदि फट
खराटा काफट	साधारणझाडू कीफट	बहरा कूफट
फटकारने के कपड़ेवालीझाडू–कैफट		फूलझाडू कोफट
ओवा चाफट	पीछी चीफट	

वस्त्राभूषण–धर

वस्त्र जीर	पहिरने का वस्त्र–बीर	ओढ़नेका वस्त्र-जिर
गहने हुंज	टोपी आदि कबीर	टोप काबीर
कोमल टोपी किबीर	कठोरटोपी कीबीर	पगड़ी कुबीर
साफा कूबीर	बंधीपगड़ी कैबीर	कनटोपा कोबीर
टोपा कौबीर	बंडीआदि गबीर	वाराकसी गाबीर
बंडी गिबीर	भीतर पाकिटवालीबंडी–गीबीर	
बिना बांहकी बंडी–गुबीर	वास्कट गूबीर	चोलीआदि चबीर
पोलका चाबीर	चोली चिबीर	रंजा चीबीर
झंपर चूबीर	ब्लाउस चोबीर	स्वेटर आदि जबीर
स्वेटर जाबीर	फ्राक जीबीर	झबला जूबीर
वनयाइन जोबीर	कोट आदि--टबीर	कोट टाबीर
कुर्ता टिबीर	कमीज टीबीर	अंगरखा टैबीर
शेरवानी टोबीर	बटनआदि–युंग	बटन युंग,कायुंग
तारबटन कीयुंग	तनी कूयुंग	काज युंगेत
धोतीआदि डबीर	पुरुषोंकीधोती–डाबीर	छोटीसाड़ी डिबीर
बड़ीसाड़ी डीबीर	पंचा डुबीर	लुंगी डूबीर
पैजामा आदि पबीर	पैजामा पाबीर	ढीला पैजामा पिबीर
सलवार पीबीर	ऊँचा लहँगा–पुबीर	चनिया पूबीर
लहँगा पैबीर	घांघरा पोबीर	गलेसे एड़ीतक पौबीर
जांघिया बाबीर	छोटा मोजा–बिबीर	बड़ा मोजा–बीबीर
हाथपोस बुबीर	गुलूबन्द बोबीर	लंगोटी या चड्डी–बेबीर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पोशाक चुकबीर सोते समय ओढ़ने के वस्त्र--कजिर
पोशाक के रूप में ओढ़ने के वस्त्र--गजिर
मुसहरी आदि शरीर से अलग रखकर ओढ़ने या ढकने के वस्त्र--चजिर
धुस्सा काजिर रजाई किजिर पल्ली कीजिर
रूखेधुस्से कुजिर कम्बलपल्ली कूजिर लोई कैजिर
कम्बल कोजिर चादर गाजिर पिछौरा गिजिर
ओढ़नी गीजीर दुपट्टा गुजिर उपर्णा गूजिर
शाल गोजिर पर्दा[बड़ा] चाजिर झालरपर्दा चिजिर, चीजिर,
मुसहरी एक बांधकी चुजिर मुसहरी चार बांधकी--चूजिर
जूताआदि जूत लकड़ी का जूता कजूत
रबर का जूता गजूत कपड़े आदि का जूता--चजूत
चमड़े काजूता जजूत चप्पल आजूत हाफस्लीपर ईजूत
स्लीपर ऊजूत बूट ऐजूत लौंगबूट ओजूत
चमड़े की चप्पल जाजूत इत्यादि

(इंज का अर्थ भूषण है ही, जिसअंग का जो भूषण हो उस अंग के नाममें इंज जोड़ने से उसके भूषण का नाम बनेगा। उस अंग के भूषण अनेक हों तो की गी ची जी आदि वर्ण उपसर्ग की तरह जोड़कर नाम बनालेना चाहिये)
इयरिंग आदि सुनिंज नथआदि सुंहिंज चूड़ीआदि कुरिंज
इत्यादि

शरीर-मूम

अंग अंग उपांग फूअंग सिर शोअंग
धड़ रेअंग सिर से कमर तक या पूँछ तक--सेसंग
सेसंग से बाकी नीचे का अंग सूसंग आंख लुक
कान सुन नाक सुन्ध जीभ रिस
स्पर्शनइन्द्रिय टंच मस्तिष्क इंक इन्द्रिय इन्द
मुखमण्डल चन्द मुँह इट चोटी आदि कंच
जटजूट कंचा वेणी कंची गंगावन फूकंची

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छोटी चोटी वेकंच,	बाव वेकंची	खुले लम्बेबाल नेकंची
लट कची	जुल्फ कचा	कुछ बालोंकी वेणी कंचंगी
जूड़ा जूड़	जलेबीजूड़ा जूड़ी	मांग कचनंकी
बाल कच	रोम किच	खोपड़ी ठक्क
तालु छ्दंग	ललाट मूनंग	तिलक मून
बिन्दी मूनी	भौंह किचंग	पलक विंक
पलकके बाल विंकच	आंख का तारा शानंग	आंख का गढ़ा चमंग
सफेदगटा फूत्रमंग	कालागटा फूशानंग	गाल चन्दंग
ओंठ पव	दांत चाव	दाढ़ चावेज
मसूड़ा फूचाव	जबड़ा जाट	चोंच चुगक
सूंड़ शेकुर	कलगी शेकंच	सींग चुम्भ
थूक थुंक	लार पेच	ठुड्डी ठड्ड
मूंछ कारुचा	दाढ़ी गारुचा	अयाल चारुचा
गर्दन आदम	गला कादम	टेंटुआ कीदम
गर्दनकापृष्ठ कूदम	सास्ना ओदम	कन्धा ढान
हाथ कुर	दाहिना ओस	बायाँ एस
उँगली ईकुर	अँगूठा कीकुर	
तर्जनी गीकुर	मध्यमा चीकुर	अनामिका लीकुर
कनिष्ठा टीकुर	पञ्जा आकुर	हथेली काकुर
पंजे का पृष्ठ भाग चाकुर	कलाईसे कंधेतक ऊकुर	कलाई कूकुर
कलाई से कुहनी तक गूकुर		कुहनी चूकुर
कुहनीसे कंधातक जूकुर	नख नोच	पोर–पिंश, कुरपिंश
फेंफड़ा दमेक, दमक	छाती पट्टंग	पसली टूहिन्ड
स्तन छीरंग, छीरेंट	नारीकेस्तन छीरंगी	पेट उंघंग
गर्भाशय गंभुंघ	मूत्राशय मुतुंघ	मलाशय गुबुंघ
आमाशय पेकंग	गुदा गुवंग	मूत्रद्वार मुतंग
हड्डी निंजंग	पीठ दुमंग	रीढ़ देयंग
चूतड़ सिटंग	कमर कूँकंग	लिंग--कूमा, मुता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

योनि–कूमी, जिंजी | अंडा इड्डु | अंडकोष–इड्डुंग, टुंगुंष
पूँछ–फूकुर | पंख–फुर | पैर–पाद
पैरों की अँगुलियाँ–ईपाद | पैरोंका अँगूठा–कीपाद | बाकी उँगलियाँ–गीपाद
चीपाद आदि | पैरों का पंजा–आपाद | तलपाद–कापाद
बैल का खुर–गापाद | घोड़े का खुर–चापाद | एड़ी–जापाद
उँगलियों के पास की जगह–टापाद
टापाद जापाद के बीच की जगह–डापाद
पैरपंजेका ऊपरीभाग–तापाद | पिंडरी के नीचे की जगह–दापाद
पंजे के ऊपर दोनों तरफ उठी हड्डियाँ–पापाद
पंजे से जंघा तक–ऊपाद | पिंडरी–कूपाद | घुटना–गूपाद
जांघ–चूपाद | गोद–माजस | शरीरधातु–मिंक, मुर्मिंक,
रस–रग | रक्त–राग | मांस–मंस
मेद–लिरक | हड्डी–ठुड | मज्जा–शेसिरक
वीर्य–टुंक | रज–जिंक | मवाद–रूरग
पीप–रूराग | वात–धुंग | पित्त–डीह
कफ–खिंच | चमड़ा त्वचा–मत, कामत
झिल्ली–कीमत | आंसू–हुंद | पसीना–निष्व
बहानेवाली चीज–बिहेत | नस आदि–आबिह | शिरा–ऊबिह
नस–गाबिह | नाड़ी–चाबिह | आंत–जाबिह
नली आदि–ईबिह | फूंकनी–कीबिह | गैसनली–गीबिह
हुक्का एनिमापॉट आदि की नली–चीबिह
लचीला बड़ा नल [केनवास या रबर आदि का]–जीबिह ।
घरों में पानीका-नल टीबिह । वाटर वर्क्स आदि का बड़ा नल--डीबिह
फव्वारा पीबिह | मोरी आदि ऊबिह | मोरी गूबिह
नाली चूबिह | गटर जूबिह | बम्बगटर टूबिह
नालाआदि ओबिह | छप्परधारा[उरवाती] कोबिह
प्रपात गोबिह | कुए आदि का पाझर–चोबिह
कुए आदि का झरा जोबिह | नाला–टोबिह | सामान्य नदी डोबिह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समुद्रमें मिलनेवाली नदी दोबिह झरना तोबिह
नहर–दोबिह धार बिह
वृक्षों के अंग–उगंग जड़–इटुग
जड़पींड़के बीचका अंग–दमुग पींढ़–सूसुग
पींड़ के ऊपरका भाग–सेसुग सूसुग और सेसुगका संधिस्थल–कूँकुग
शाखा–कुरुग। प्रशाखा–वेकुरुग
बड़वृक्ष की जमीन में आने वाली शाखाएँ–सूसकुरुग
टहनी–ईकुरुग नागफनीदल–कंकुरुग कांटा–चुभ
पत्ता–पत्त केलाआदिके बड़े पत्र–होपत्त
इमली आदि के छोटे पत्ते ·वेपत्त कोंपल–पत्तग
फूल–हंस कली–हंसग केशर–कचुग
छाल–मतुग अंतरछाल–कीमतुग रसनाली–बिहुग
सार–शार, शारुग। सार से बचा–नोशार वृक्ष रस–रुग, रुगुग
गोंद–चेप निकलतापानीवाला वृक्ष–निचुग
फलरस–रोस, रीसुग, फात्ररस दल–मंसुग
छिलका–निग। चिकू आदिका दलसे मिला हुआ छिलका–कनिग
संत्रा आदि का दलसे अलग छिलका–गनिग
बेल आदि का दलसे मिला हुआ कठोर छिलका–चनिग
नारियल आदि का फल से अलग हुआ कठोर छिलका–जनिग
नारियल आदि के जटे–टनिग। गुठली–ठूडुग
रेशा-कचुग रूँआँ–किचुग रुई आदि–फह
कपास—कापह। रुई–कीपह पाला–कूपह

प्राणी–जीव

मनुष्य–अंकाम, धामाम, अंकेत। हैवान–ऊताम, ऊतेत
तिर्यंच–पौमेत। शैतान–पापेत, पापाम, चिंठाम।
देव–सूत; नन्देत, नन्दाम (ये दो नाम विभूतिमय जीवन की दृष्टि से हैं)
नन्दंक (यह नाम संयम विवेक प्रधान विभूतिमय जीवनकी दृष्टि से है)
पितर–मिटिम्प भूत–डेडिम्प, फुंडिम्प अप्सरा–सूतनिंची।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परी–फुरसूती, फुरहूरी। दैत्य–सूतूत गंधर्व–गिमसूत
यम–मेटसूत मेटिम्प (इसप्रकार और भी देवयोनि के नाम उनके कार्यों के अनुसार बनाये जासकते हैं) त्रस–त्राकेक
थलचर–पाद। जलचर–तीरवाक। नभचर–फुरवाक, फुरिर
द्विपद–गोपाद चतुष्पद–जोपाद। षट्पद–डापाद। आदि।
उरग–सर्वाक सरीसृप–रैकवाक
बैल आदि श्रम देनेवाले जानवर–थोचग, शप्पग।
दूध देनेवाले जानवर–छीरक। पालतू जानवर–टेमग, रंत्रग
जंगली जानवर–नोरंबग। हिंसक जानवर—डिंडक
बिच्छू आदि डंक मारनेवाले–डंकक। मच्छर आदि खून चूसनेवाले–डंमक
सर्प आदि मुँह से विष छोड़नेवाले—डुंशक। मक्खी आदि–भन्न
कीड़े मकौड़े—कीतक। किसी चीज में पड़ने वाली कृमि–निड्डुग
बरसाती कीड़े—रिनकीत सूक्ष्म कीड़े—कीतूस बेक्टीरिया—कीतुप।
त्रसस्थावर सन्धिजीव—वाकुग
जड़चेतन सन्धिजीव—चेतीत। वृक्षआदि उगक, उगेक उग
वृक्ष टेगुग, टेगेक। लता टिगुग, टिगेक। लघुवृक्ष वेटेगक,
घासआदि जमीन पर लेटकर रहनेवालीवनस्पति–लिटुग, लिटेक
काई वगैरह चिपटकर रहनेवाली घास–चिप्पक
जालकी तरह फैलनेवाली अमरबेल आदि- फुंसुग
कमल आदि पानीमें ऊगनेवाली वनस्पति--पोतुग।
प्रयत्न करके उगाई जाने वाली वनस्पति--ओगग, ओगेक
बिनाबोये ऊगने वाली वनस्पति- उपग
सर्वदा फलने या फूलने वाली वनस्पति--पुम्सलुग
काटने लायक बड़ा घास- केटग
कटकटकर बारबार ऊगने वाली वनस्पति- उगेर। जमीकन्द गंभुग
फलझाड़ फावुग। फूलझाड़ हंसुग जड़ीबूटी छिचुग।
लकड़ी के काम के झाड़—ठुंडेट
जलाने के काम के झाड़--दिहेट, दिहटुग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषैले झाड डंशुग दूधवाले झाड छीरुग
बाड़लगाने के कामके झाड रोकुग, चुभरुकुग,
सिर्फ देखने के ही कामके झाड़- लुकुग
ताड़ आदि ऊँचे झाड़- तिचुग। पकड़लेनेवाले झाड़ जाटुग।

[उपर्युक्त जातियों के प्राणियों के नामों के साथ उपसर्ग की तरह स्वरव्यञ्जन क्रमसे लगाने से उक्त जातिके भिन्न भिन्न प्राणियों के नाम होजायँगे। जो जानवर विशेष चिन्हों या प्रसिद्धि से अलग पहिचाने जाते हैं उनके नाम धातुओं पर से अलग बनाये जायँगे। जैसे उछलने के कारण मेंढक को उछक कहना, विष्ठा खाने की प्रसिद्धिसे शूकर को गुविट कहना, आदि। जानवरों के बहुत से नाम दूसरी भाषाओंसे भी लिये जायँगे। कुछ नाम उनकी बोलियों के अनुकरण पर भी बनाये जायँगे।]
यहां नमूने के रूपमें थोड़े से नाम दिये जाते हैं।

गायबैल—गाय घोड़ाघोड़ी—हिन्न महिष—आँक
हाथी—शेकुरक ऊँट—तिनादम सर्प—काड्ंश
कुत्ता—भोंह सिंह—काडिंड बाघ—गाडिन्ड
चीता—चाडिन्ड बकरा—जाडिंड भेड़िया—टाडिन्ड। इत्यादि
बिल्ली कीडिन्ड गीदड़ चीडिन्ड। इत्यादि
बाज कूडिन्ड गिद्ध गूडिन्ड चील चूडिन्ड। इत्यादि
मगर कोडिन्ड। घड़ियाल गोडिन्ड इत्यादि
उल्लू आदि- कुलोफुर उल्लू काकुलोफ
चमगादड़- गाकुलोफ, बागक बिच्छू काडंक
बर्र कीडंक भौंरमक्खी कूडन्क
साधारण मधुमक्खी मिस्सभन्न। जोंक काडन्स
मच्छर गाडन्श। इत्यादि—चीटा काकीत चीटी कोकीत। इत्यादि
रुनी कासिड्डु तिरूला- गासिड्डु। इत्यादि
मच्छ आदि जलचर- मच्छ। हेलमच्छ- होमच्छ
भिन्नभिन्न तरह के मच्छ- कामच्छ गामच्छ आदि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विश्व-शोसस

महाकाल शोलल। आकाश या जगह- सस
नीहारिका (उपविश्व) फूशोसस सौरजगत वेशोसल
सूर्य शोतप तारा फुम्म
नक्षत्र (तारासमूह) फुम्मुघ
नक्षत्र [ज्यादा चमकता दिखाई देनेवाला तारा] सोफुम्म
आकाशगंगा होफुम्मुघ। पुच्छल तारा दुमफोम। ग्रह वुंक
बुध कवुंक शुक्र गावुंक पृथ्वी चावुंक
मंगल जावुंक बृहस्पति टावुंक शनि डावुंक
यूरेनस तीवुंक नेपच्यून दीवुंक प्लूटो पीवुंक
अवान्तर ग्रह वेवुंक उपग्रह फूगिंक
परिक्रमाक्षेत्र गिंकोसस परिक्रमाक्षेत्र का व्यास- गिंकोससतिनो
परिक्रमा क्षेत्रकी चौड़ाई- 'गिंकोसस थिनो। परिधि 'गिंकोतिनो
लोक लुकस जगत [जीवलोक]- जीवस, जीवलुकस
मेघ लोक [भूतलसे जहांतक बादल है वहां तक की, जगह] पोपीतस
वायुलोक [भूतलसे जहां तक वायु है वहां तककी जगह] दमस, दमलुकस।
किसी ग्रह या उपग्रह तकके बीचकी जगह—दूरलुकस
जहांतक अपने आकर्षण का प्रभाव दूसरों से अधिक पड़ता हो- नुस्मलुकस
ऊर्ध्वलोक- सेसलुकस मध्यलोक सिसलुकस।
पाताललोक सूसलुकस पृथ्वी, जाम तल कान।
भूतल जामकान जलतल पितकान। भूगर्भ जामतेस
ऊपरीतल सेसकान नीचेकातल सूसकान
जलाशय पीतुम्व। समुद्र नद महासागर होनद
उपसागर फूनद झील वेनद।
थलके भीतर घुसा हुआ समुद्र -घुसनद
दो समुद्रों को मिलानेवाला समुद्र—योगनद कूवा तालाव आदि--डिग
कूवा काडिग बापी कीडिग बिनाबँधा कूवा कूडिग
खाई कोडिग कूवावापी आदि—कडिग तालाव—गाडिग
बांध गीडिग पल्वल गूडिग कुन्ड चाडिग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बँधाकुंड–चींडिग ।
प्रकृति–श्रमंमिको । द्वीप घांर । महाद्वीप–होघीर । लघुद्वीप–वेघीर ।
उपद्वीप–फूघांर । थलडमरूमध्य -योगघीर ।
पर्वत आदि–चाय । महागिरि–होचाय । अटवी मेचाय । टेकरी–वेचाय ।
टीला–फूचाय । शिखर–चायकंच । तलहटी–चायपाद । पुलिन–फरेडस ।
बगीचा आदि–कुंज । वाटिका-वेकुंज । जंगल–मेकुंज । पार्क–नेकुंज ।
कुंज–येकुंज । झाड़ी–रूकुंज देश-हाद । संयुक्त देश–युगहाद । राष्ट्र–शैम ।
उपनिवेश–यातशैम । प्रांत–हादंग, शैमंग । उपप्रान्त–फूहादंग ।
जिला समूह (डिवीजन)–फूशैमंग, जकयुगो । जिला–जक ।
तहसील–जकंग । परगना–फूजकंग ।

(इस कारणमें पृ. ८६ पर कुछ नाम छपनेसे रहगये हैं, वे यहां दिये जारहे हैं। वायुलोक वाली पांक्ति काटकर निम्नलिखित अंश जोड़ना चाहिये ।

वायुलोक (जहां तक वायु है)–वीनलुकम । जहां तक श्वासयोग्य वायु है–दमलुकस । मेघलोक -(जहां तक मेघ हैं) रिनलुकस । चारों तरफ जहां तक नजर पहुँचे–लोलक्ख । देखने के लिये कम से कम आवश्यक दूरी–लेलक्ख ।
कुहरा–येरिनक । इन्द्र धनुष–रिनक निव्व ।

वस्ती-लंवास, वास

नगर–मोवास । गांव--येवास । महानगर--होवास । कसवा--शेवास ।
उपनगर--फूवास । केम्प--लंगवास । मुहल्ला--वासंग । वार्ड- मोवासंग ।
रास्ता--राहस । महापथ (रोड) होराहस, होराह । स्ट्रीट–सोराहस सोराह,
चतुष्पथ--लंराह । गली--वेराह । कच्चीसड़क--रूराह । फुटपाथ--पादराह ।
पगडंडी--फूराह ।

यान—यान

बैलगाड़ी —गाययान । घोड़ा गाड़ी —हिन्नयान ।
खटारागाड़ी—रेयान । तांगा—शेयान । बग्गी—सोयान ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दूभनी -- रुयान । रेंगी —रूयान । इक्का — वेयान । हाथगाडी —कुरुयान।
बच्चागाड़ी विवुयान । ठेला —हुंठयान । साइकिल—पादुयान ।
रिक्सा- कजयान । साइकिलरिक्सा--पादुकजयान ।
मोटरसाइकिल--यूतपादुयान । मोटरगाड़ी--यूतयान । मोटर ठेला--यूतहुंठ,
मोटरलारी--यूतहोयान । मोटरबस.-यूतमोयान । मोटरकार--यूतसोयान।
जीपकार- ढीमोयान । टेंक--यानढैम । रेलगाड़ी--सन, सनयान ।
डांकगाड़ी--डिपसन । एक्सप्रेस--पेलंसन । स्पेशलट्रेन--शसन ।
सवारीगाड़ी--यातसन । साधारणगाड़ी--पौमसन । मालगाड़ी--ढुनसन ।
मालसवारी मिलीगाड़ी--मीशसन । रेलठेला--हुंठसन । डब्बा--डब्ब ।
कंपार्टमेन्ट--डब्बंश । सीट--सिटस । रिजर्वेशन--रूभो । टिकिट कटाना- तिदो।
स्टेशन--लंटिह । रेलवेस्टेशन--सनलंटिह । टरमिनस -लोटिह ।
प्लेटफार्म -हौसित्र । जंकशन--लंसनस । क्रास होना--नूयुगो ।
गेज (लाइनों का अन्तर) सनथिनो । ब्राडगेज--सनशेथिनो, ।
मीटरगेज--सनपौमथिनो, पौमथिनो । नैरोगेज--सनवेथिनो, वेथिनो ।
सिगनल--निब्र । लाइनक्लियर--राह फूनिडो ।
सामान यातोलस, सेलस । नौका शीप । बजरा शेशीप ।
जहाज होशीप । स्टीमर--सोशीप, यंतशीप । युद्धपोत ढीमशीप।
पनडुब्बा जहाज- डपोहोशीप, डपोशीप ।
पनडुब्बी नौका--डपोवेशीप, डपोशीप । वायुयान फीर ।
जेप्लिन लेफीर। आरामके साथ यात्रियोंको लेजाने वाला वायुमान--सोफीर।
युद्ध के हवाई जहाज--ढीमफीर ।
समुद्र पर भी तैरने वाले हवाई जहाज--तीरफीर ।
जलथल नभ, सब जगह चलने वाला यान--पुमयान।

बाजार--जाश

दूकान--यूश । दूकानदार--यूशिर । व्यापारी--जंशर । ग्राहक--जिशर ।
दलाल - जुंशर । बजाजी--जीरजंशो । बजाज--जीरिर ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परचुन्नी की दूकान--लेछर्रयूश। गंधी--सूयिर, सूइर, सूयोयूशर। किरानेवाला -सोछ्रिरि। स्टेशनरी--सेआज, आजलस। होजयरी--फूवीर। कठरया सेरिस्मिर। सुनार--इंजकर। सर्राफ--इंजयर। मिठ्या--मिस्सयर। तेली--सिरयर। धोबी--धोबक। दर्जी--शाडक। फेरीवाला--फूलंगर। खोनचेवाला--झाइटर। फोटोग्राफर--छिंतर। सिनेमा--छिंत्तनटो। रंगमंच- नटोस। बैंक--बैंक। खजाना--धनरीह, धनस,। खचानची--धनसयर कम्पनी--शुंग। शेयर--सिंग। भाव--लंजाश। कुम्हार कुम्भक। बर्तनवाला भंडथर। चूड़ीवाला कुरिजर। मिस्त्री चुन्नर। बढ़ई खुंडर। इंजीनियर सोचुन्नर। किसान अन्नक। लकड़हारा ढुंडहार। पनिहारी पीतहारी पोष्टआफिस- डिपाज। तार आफिस- काडाज। टेलीफोन आफिस- लाग्राज। रेडियो स्टेशन गुंगोरीह। सिंगर मशीन- शाडोयंत्र।

माप तौल

रत्ती का सौवां भाग--कजिड। रत्ती गाजिड। माशा चिजिड। तोला जीजिड। छटाक..टुजिड। सेर डूजिड। मन तैजिड। दस मन दोजिड। सौमन पौजिड। हजारमन बंजिड। इंच का सौवां भाग कनिप। इंच का दसवां भाग गानिप। इंच चिनिप। बारह इंच जीनिप। गज टुनिप। दो सौ बीस गज डूनिप। मील तैनिप। दसमील दोनिप। वर्गगज थूनटुनिप। वर्गमील थूनतैनुप। एक तोला का माप कमिप। छटाक का माप गामिप। पावसेर का माप चिमिप। सेर का माप जीमिप। चार सेर का माप टुमिप। गेलन डूमिप। चार गेलन दैमिप। पच्चीस गेलन पोमिप। सौ गैलन बौमिप।

छापखाना--पिंटोयाज

छापने की मशीन..पिंटोयंत, पिंटेज, पिंटज। प्रूफ मशीन..कपिंटज। हैंड प्रेस--गापिंटज, कुरुपिंटज। ट्रेडल..चिपिंटज, पादुपिंटज। सिलेंडर जीपिंटज, शेपिंटज। रोटरी मशीन..डूपिंटज, होपिंटज।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परफरेटिंग मशीन पर्डोयंत। नम्बरिंग मशीन पेंजोयंत। कटिंग मशीन केटोयंत। रूलमशीन दीनोयंत। स्टिचिंग मशीन शिड्डोयंत। लिथोमशीन लिथोयंत। टाइप फाउन्ड्री टूपोयंत। प्वाइन्ट उंट। टाइप टूप। छः प्वाइन्ट टाइप कटूप। आठ प्वाइन्ट काटूप। दस प्वाइन्ट कीटूप। पैका निपटूप। ग्रेट गाटूप। बनिक गीटूप। चौबीस प्वाइन्ट चिटूप। बत्तीस प्वाइन्ट जीटूप। छत्तीस प्वाइन्ट टुटूप। अड़तालीस प्वाइन्ट डूटूप। बहत्तर प्वाइंट पोटूप। आर्नमेंट टाइप सिजटूप टेढ़ा टाइप कुग्गटूप। मोनो टाइप इकटूप। लाइनो टाइप इन्निटूप। ब्लाक सोछाप। पिक्चर टाइप चित्तटूप। डिग्री वेभारटूप। मात्रा फूइक। स्पेस भारटूप। थिन स्पेस थिनभार। मिडिलस्पेस कूंक भार। थिक स्पेस थिकभार। क्वाडेट शेभारटूप। कोटेशन होभारटूप। रूल दीनक। लेड पिंपट्ट। लेडस्टेंड पिंपट्टेत। एम्पलकाइन पिंकसग। चाबी पिंकसेज। चेस पिंचाक। केस टूपेत। प्लेनर सम्नेज। इंकस्टेंड पिंरग्गेत। टम्पिंग पिंटस। पुर्जा यत। ब्रेक रोकज। प्रूफ हूपिंटग। प्रूफकरेक्शन हूपिंटगनिक्को। टाइपकरेक्शन पिंटगमिक्को। गेली टुप्पगेत। कम्पोजिंग स्टिक टुप्पेत। छापने का रूल चक्कदीन। रोलर कम्पोजीशन पिंसरमिशो। मोबिलआइल यंतासिर। पंक्ति दिन, पैराग्राफ पंगंग। कालम कन्नंग। पृष्ठ कन्न, लिरकन्न। पन्ना लिरपत्त। जिल्द टाबु। बाइंडर टाबर। जुजबाइंडिंग शेटाबो। सादा बाइन्डिग शड्डोटाबो। मुद्रक पिंटर! प्रकाशक पन्नर। डिक्लेरेशन शेसोनो। सम्पादक ऐडर। प्रबन्धक किचर। संचालक या व्यवस्थापक किम्पर। मालि० शाह। नियतकालिक पत्र लार मासिक पत्र नेलोलार। पाक्षिक पत्र चेलोलार। साप्ताहिक पत्र गेलोलार दैनिक पत्र किलोलार। विज्ञापन टिजु। बुलेटिन फूलार। पेशगी लूलंशेन लेख के रूप में विज्ञापन लिरूर टिजु।

कारखाना—मुंकरीह. मुंकुंघ

मिल लंयंत, मोयंत, मोयंतुंघ। वर्कशाप लंमिकरीह, लंमिक्कस। प्रयोगशाला तिंजोशाम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रमिक (मन वचन या तन से श्रम करने वाला) शिहक
श्रमजीवी शिहोकाज। बुद्धिजीवी इंकोकाज।
कलाश्रमिक चन्नशिहक। मजदूर (तनसे) ईहक।

आफिस-आज

डांक डिंप। आनेवाली डांक–इन्नडिप। जानेवाली डांक–नेडिप।
पत्र लीर। कार्ड कालीर। लिफाफा कीलीर।
बुकपोष्ट लुखंडिप। पोष्ट पार्सल–शेहिंड डिप।
लेटरफार्म लीरलिर। लेटरपेड लीरफूटाव। रजिष्टर्ड सोनुटग।
मनीआर्डर धनडिप। बीमा शेरबाडिप। वी. पी. जिशोडिप।
पोष्टमेन डिपर। फार्म फर्म। रसीद पानेड।
रजिष्टर–सोनुटत, नुटंगंथ। फाइल छिदत। नोटबुक नुटत।
पिनकुश नुंकधर। पत्रपेटी–डिपहिंड, इन्नडिपत।
लेटरबाक्स-नेडिपहिंड, नेडिपत। रूल दीनेज। दावात रगेत।
लेखनी लिरज। पेन्सिल रेलिरज। फाउन्टेनपेन रगिगरलिरज।
टाइपराइटर लिरोयंत। टेलीप्रिंटर मशीन–गुंगापिंटोयंत।
डिक्टेट कराना–शलेरो। रेडियो गुंगेड। लाउड स्पीकर–होउंग।
बेटरी चम्मेड। क्लर्क लर्क। चपरासी शोचिसक।
परिचर्या करनेवाला–चिसक, चिसभित्त। घड़ी लाक।
रिस्टवाच कूकुरलाक। पाकिटवाच चैहिंडलाक।
टेबुलघड़ी कुरदलाक। दीवालघड़ी चादेयलाक।
रात्रघड़ी–मोछद्क लाक। स्प्रिंग घड़ी–उच्छोलाक।
बजन घड़ी–जिडोलाक। तापघड़ी–तपोलाक। छाया घड़ी–छुवोलाक।

शासनतंत्र रोजोतंत

सरकार रोजर। शासक रोज। अधिनायक मुचरोज। राजा राज।
महाराजा शेराज। सम्राट सोराज। राष्ट्रपति शैमरोज।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गवर्नरजनरल शोरोजक। गवर्नर रोजक। प्रीमियर शोमित। प्रधानमंत्री शेमिन्त। मंत्री मिन्त। सेक्रेटरी मुन्त। चीफसेक्रेटरी सोमुन्त। कानून याम। धारासभा यामुंजू। लोअर हाउस–मोयामुंजू। अपर हाउस–सोयामुंजू। राजदूत रोजरदूत। मंत्रिमण्डल मिन्तशेयुगो। म्युन्युसपल आदि 'फूरोजर। न्यायालय 'उंकाज। सुप्रीमकोर्ट 'शोउंकाज। हाइकोर्ट 'सोउंकाज। शेसनकोर्ट 'शेउंकाज। सबजजी 'फूउंकाज। तहसीली जकुंकाज। जिलाकचहरी 'जकुंकाज। जज 'उंकर। मजिस्ट्रेट 'डेचक। इन्सपेक्टर 'शेदिंजक। रिकार्डकीपर 'मीपेजधर। सोलीसीटर 'लंबार। वकील 'बार। अर्जीनवीस 'हूबार। मुवक्किल 'बारच। वादी 'भाक। प्रतिवादी 'नूभाक। गवाह 'मिप्प। सूचना 'सूचो। सम्मन 'शेसूचो। वारंट 'मेसूचो। गिरफ्तारी 'जंटो। मुकद्मा उंकेटो। हवालात लूडिचो। सजा 'डिचो। जेल–'डिचत, डिचरीह। सजा अमलमें आना–डिचिन्द। जेलर–'डिचतर, डिचिन्दर। पहिरेदार रीबक। पुलिसमेन 'रबक। कोतवाल 'सोरबक। हेडकान्स्टेबिल 'शेरबक। थाना 'रबरीह। होमगार्ड–सेढिमक। पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट–रबोकिम्प। गुप्तचर–हिडक। टेक्स कार। स्टाम्प 'कारपाट। मुहर 'शेपाट। करेंसी सिक्का आदि–'सेधन। करेंसी 'हूधन। सिक्का 'फूधन। चिल्लरसिक्का–'भंगफूधन। जनता 'जनूघ। युद्ध 'डिमो। शस्त्रास्त्र 'ढिमेज। बन्दूक 'शूट। विशेष बन्दूक शेशूट। मशीनगन 'यंतशूट। तोप 'होशूट। बम 'ढोम। अणुबम 'नहढोम। बरछा–'ढिमनुंक, नुंकक। त्रिशूल– चिनिर नुंकक। तलवार 'किंटक। धनुष 'निव्वक। ज्या 'निव्वंग। बाण 'सेनिव्व। गेस–रूधुंग। युद्धभूमि- ढिमेद, ढिमस। मोरचा 'ढिमोफिस। सैनिक 'ढिमक। सेना 'ढिमु। थलसेना 'जामथिमु। जलसेना 'नदाथिमु। हवाई सेना–'फुरोथिमु। सेनानायक 'ढिमिम्म। डिवीजन 'जकोढिम।

सभा—ऐंजू

महासभा–होउंजू। सम्मेलन–लंयुगो। बैठक–सियुगो। आमसभा–मोयुगो। संगठन–कूनो। क्लब–मिसेद। मण्डल सेटिश। समाज–समाज।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाति जिजो।जिप। वर्ग जिप। ज्ञाति–होमुम। मेला–होउवो।
गेदरिंग हूयुगो। अधिवेशन 'सोयुगो!
खुला अधिवेशन–'लुखं सोयुगो। कोरम 'लेंहज्जो।
समिति 'शारुंज। विभाग भंगो।
स्वागतकारिणी समिति–'मन्नोशारुंज। प्रबन्धकारिणी समिति–इंचशारुंज।
सिलेक्टकमेटी–'हूचूज शारुंज। कार्यकारिणी समिति–'तंतशारुंज।
विषय विचारिणी समिति 'गेथ्रिंक शारुंज।
भीड़–नियुग। झुंड 'उघ। संघ 'सेउघ। दल सेकून। गिरोह 'रेकून।
बहुमतसे 'डुमदीदं। प्रबलमतसे 'होदीदं। अल्पमतसे 'वेदीदं।
कास्टिंग वोट से–'शेदीदं। प्राक्सी 'शेथास।
प्रत्यक्ष उपस्थिति–'इंदहज्जो। प्राक्सी से उपस्थिति–शेथासं हज्जो।
सामान्य उपस्थिति–'पौमहज्जो। प्रस्ताव–लैदु। प्रस्तावक 'लैदर।
समर्थक 'हूलैदर। अनुमोदक 'औनर। संशोधक 'मिक्कर।
विरोधक 'रोलैदर। सुझाव 'शेलुक्को। वोटिंग 'दीदो।
पर्चा आदि से वोटिंग–'लिरदीदो।
हाथ उठाने आदि से वोटिंग–'इंतोदीदो।
विभाग करके मतगणना 'शेभंगोदीदो। चुनाव 'चूजो।
नामजदगी 'फूनितो। सिलेक्शन 'हूचूजो। प्रतिनिधि मज्ज। पक्ष 'टीबो।
संस्थापक 'शोशीरर। संरक्षक 'सोरवर। अधिनायक मुच्चिम।
अध्यक्ष 'शूह। कोषाध्यक्ष 'धनशूह। विभागाध्यक्ष 'भंगशूह।
मंत्री 'मंत। उपमंत्री 'फूमंत। सहायकमंत्री–'हूमंत। सदस्य 'युज।
स्वयंसेवक 'अमंचिस। जीवनसदस्य 'जिवोयुज। नैष्ठिक 'सोथिर।
पाक्षिक 'शेथिर। अनुमोदक–औनर। आनरेरी 'हूशंत।
वैतनिक 'शिनर। कार्यकर्ता 'कज्जोयर। शुल्क 'फूकार।
पंडाल 'कशेरीह, हौसंरीह। सभाभवन 'उंज शेरीह।

उत्सव—होनन्दो, लंनन्दो

त्यौहार 'हूनन्दो। स्मृतिदिन 'मिजो किलो। वर्षगांठ 'डेलो खुशो।
जन्माभिनन्दन 'जिजो खुशो? जयंती 'जिजोपूजो? मृत्युदिन 'मिटोमिजो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुण्यतिथि मिजोपूजो 'मिटोपूजो, । अनुस्मृति 'हूमिजो । गोष्ठी 'सेनन्दो। भोज 'सेइटो । मंडप 'होनन्दरीह । स्वागत 'मन्नो । जुलूस 'सोलंगो। फेरी–फूलंगो। फलाहार 'फाविटो। विदाई का सन्मान-जेतोमोनो। ताम्बूल 'लाट। पान 'सोपत्त। कत्था 'कत्थ। मेवा 'पाव। बादाम–कपाव। खारक 'गापाव. खजूर 'चिपाव। पिश्ता 'जीपाव. अखरोट 'टुपाव। चिलगोजा 'डूपाव। नारियल 'दैपाव। लवंग 'कपुंग। सुपारी 'गापुंग। इलायची 'चिपुंग। जायपत्री 'जोपुंग । डौंड़ा 'टुपुंग।

संगीत

घंटा आदि धातुवाद्य 'अटन्न। वीणाआदि तारवाद्य 'ईटन्न।
ढोल आदि चर्मवाद्य 'ऊटन्न। बांसुरी आदि 'ओटन्न।
हारमोनियम आदि 'अटन्न। घंटा 'काटन्न। झालर 'गाटन्न।
मंजीरा 'चाटन्न। झांझ 'जाटन्न। वीणा 'कीटन्न। सारंगी 'चीटन्न। इकतारा 'टीटन्न। ढोल 'कूटन्न। मृदंग 'चूटन्न। तबला 'जूटन्न। ढपली 'टूटन्न। बांसुरी 'कोटन्न। अलगोजा 'चोटन्न। बिगुल 'टोटन्न। हारमोनियम 'कंटन्न। पियानो 'चंटन्न।

संस्था शंजू

यूनिवर्सिटी बोधोकिन्द। कालेज मोबोधोसाम। हाइस्कूल शेबोधोसाम। मिडिलस्कूल पौमबोधोसाम। प्राइमरीस्कूल वेबोधोसाम। शिक्षणालय सिखेरीह। आश्रम साधोसाम। प्राइवेट स्कूल- अमतेर बोधोसाम धर्मशाला यातसाम, यातेद। अतिथिशाला पाहसाम। लाइब्रेरी गंथसाम। वाचनालय- रिडोसाम, रिडोरीह। प्याऊ पेनसाम। रेडक्राम लंथिचो। कुलगुरु शोकिम्पर। उपकुलगुरु शेकिम्पर। अधिष्ठाता किम्पर। मैनेजर किचर। सुपरिन्टेन्ड लंकचर। पाठक रेडर। प्रोफेसर सोरेडर। लेक्चरर सेसोरेडर।

शास्त्र-ईन

धर्मशास्त्र 'धर्मीन। अर्थशास्त्र 'धनीन। गणितशास्त्र 'गिनोईन। अंकगणित 'गीनो। बीजगणित 'इक्कुगिनो। रेखागणित 'नफुगिनो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विज्ञान-'इंगो, शेइंगो । भौतिकविज्ञान--'असाकिंगो ।
रसायनविज्ञान 'जिन्दिगो । भूगर्भविज्ञान 'तेसंजामिंगो ।
प्राणि विज्ञान--'जीविंगो । वनस्पति विज्ञान--'डगिंगो । इतिहास 'ल्लसो ।
पुराण 'ल्क़ीहो । कथा 'कीहो । लघुकथा 'वेकीहो ।
चुटकिला 'सेहशो । संस्मरण 'हूमिजो । उपन्यास 'लंकीहो ।
नाटक 'नटो । कविता 'भायो । संवाद 'नाटवितो । चम्पू 'युगिक्को ।
संगीत 'लंगिमो । राजनीति 'रोजोचंको । कानून 'यामो ।
ड्राइंग 'लंदीनो । शिल्प 'मुम्मो । भाषाविज्ञान 'इकिंगो ।
ज्योतिष 'लंचमो । सामुद्रिक 'लंबौडो । मनोविज्ञान 'मनिंगो ।

धर्म-धर्मो

अहिंसा 'नोडिंडो । सत्य 'सातिक्को । ईमान 'शुक्रो । सद्भोग 'सुजूशो ।
सदर्जन 'सुअर्नो । निरतिग्रह 'नेगुशो । निरतिभोग 'नेमेजुशो । दान 'दानो ।
पुण्य 'पुन्नो । पाप 'पापो । हिंसा 'डिंडो । झूठ 'मिथो । चोरी 'चुरो ।
दुर्भोग 'रुजूशो । दुरजन 'रुअर्नो । अतिग्रह 'गुशो । अतिभोग 'मेजूशो ।
शील 'मिन्नो । व्यभिचार 'ठूमो । भावहिंसा-भावडिंडो, तेसंडिंडो ।
द्रव्यहिंसा 'डेलडिंडो । संहारिणी साधना-- डेचंसाधो ।
प्रबोधिनी साधना 'बोजंसाधो । आदर्शदर्शनी साधना 'चामसाधो ।
आग्रहिणी साधना 'टम्मं साधो । वैफल्यदर्शनी साधना 'नकोलोकंसाधो ।
प्रेमदर्शनी साधना 'लबोलोकं साधो । उपेक्षणी साधना 'खटं साधो ।
शिक्षणी साधना 'दिशं साधो । लोकसाधना 'समाजसाधो ।
निरपेक्ष अघात 'नोटखं नोघातो । मनसाधना 'मनसाधो .
क्षमा 'माफो । व्यक्ति समभावो 'कीनसम्मभावो ।
अवस्थासमभाव 'जिजसम्मभावो । प्रतिक्रमण 'शौको ।
आलोचना 'हूपेनो । परा मनोवृत्ति 'तेसंमनो । अपरामनोवृत्ति 'डेसमनो ।
आरम्भजहिंसा 'कजंडिडो । आत्मग्लानि 'अमढिस्सो । साधक 'साधर ।
आराधक 'राधर । कृतज्ञता 'शोमिंजो, गेभत्तमिंजो ।
आत्मप्रशंसा 'अमसंसो । कषाय 'रुंटो । भक्षकघात 'खादंघातो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तक्षक घात नोसंघातो । रौद्रानन्द–डिट्ठनन्दो । तथ्य–लसिको ।
अतथ्य—'नोलसिको, नेलसिको । उपमानसत्य -ऊरसत्तिको ।
उपमानक सत्य- निऊरसतिको । आरम्भज अतथ्य—कजं नेलसिको ।
छन्नचोर–हिडचुर । भोग 'जूशो । सहभोग 'सेजूशो । स्वभोग 'अमजूशो ।
उपभोग (भोग)–लोजूशो । परिभोग 'फूजूशो । व्यसन 'रुइंशो ।
धुवाँपान 'धंगो । सिगार 'काधंग । सिगरिट 'कीधंग । बीड़ी 'कूधंग ।
चिलम 'चाधंग । चुरुट 'चीधंग । गुड़गुड़ी 'चूधंग । हुक्का 'चोधंग ।
अमापविनिमय–नोनिपलानो, मिंचंलानो । मापविनिमय–निपलानो ।
संन्यास–लोमिंचो । नियोग–कूमनो । समदाम्पत्य–सिमिनो ।
विषमदाम्पत्य–डुममिनो । बहुपत्नीत्व–डुममिनीरो । बहुपातित्व–डुममिनाइरो
तलाक–नेमिनो । असहचरगमन नोमिनकूमो । निर्भार–नेजाडो ।
प्रवृत्ति–लग्गो । तरतमभाव–तरतमो । गच्छत्पुण्यप्रवृत्ति–जिहिलर पुन्नलग्गो
चर्या--पट्टो । पुरुषार्थ–जीवोटेरो । मोक्ष–जिन्नो । हठयोग–मूमजिम्मो ।
भाग्य–वूडो । परिषह लंफीशो । पुरःकरण लेसंथासो । बहिर्ज्ञानी डेसंइंगा ।
दम सोट्टूचो । कल्याण सोभत्तो । उन्नति--सोसुटो . कृत--कुरो ।
कारित--कुरारो । अनुमोदन कुरौनो । तप--तुपो । अभिग्रह -शंपानो ।
योगी--जिम्म । भक्तियोगी--भजोजिम्म । संन्यासी योगी--मेमिंचो जिम्म ।
सारस्वतयोगी -बुधोजिम्म . कर्मयोगी--कज्जो जिम्म । सर्वयोगी- गुमं जिम्म ।
आश्रव--सोचिपेत । बंध--सोचिपो । संवर--सोरुको । निर्जरा--सोफड़ो ।
उदय--सोउगो । उदीरणा--सोफुटो । तत्व--सोशार, धर्मोशार ।
सत्येश्वर--सत्य, सत्येशा, सत्योजीमा, रमीमा, शाहीमा, शोममा .
भगवती अहिंसा–मम्मेशी, मम्मोजीमी, रमीमी, शाहीमी, शोममी ।
ईश्वर एश । धर्मदेव जीम । गुणदेव रमजीम । व्यक्तिदेव रमिरजीम ।
तीर्थंकर भन्त, भन्तर । पैगम्बर सन्द, सन्दर । अवतार अंशुव ।
स्वामी जिम्मर । बुद्ध सत्यंइंगा । जिन सोटेशा । गुरु तार, सुर ।
गुरुदेव तारजीम । देवगुरु जीमतार । जगद्गुरु जीवसतार ।
व्यक्तिगुरु कीनतार, कीनसुर । अगुरु नोतार । कुगुरु रूसुर ।
आचार्य सुरिम्म । दीक्षाचार्य–सेकिम्म । विवाहाचार्य मीनोसुरिम्म ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गणधर मिम्मशास, शोशास, । शिष्य शास । भक्त भक्त । साधु शंत । विवेकदेव अंकोजीमा । सरस्वती बुधोजीमी । विज्ञानदेव इंगोजीमा । शक्तिदेवी टुंगोजीमी । श्रमदेव शिहोजीमा । लक्ष्मीदेवी धनोजीमी । कामदेव चिंगो जीमा । कलादेवी चक्लोजीमी । प्रेमदेव लवोजीमा । भक्तिदेवी भक्तोजीमी । मैत्रीदेवी भिस्पोजीमी । वत्सलतादेवी मिज्जोजीमी । दया (करुणा) देवी दयोजीमी . दर्शन दीरो .

दर्शन—लिंको

परासत्ता शोअसो, मिम्मअसो . पराचेतन सत्ता शोइम्पो । परा जड़सत्ता शोउम्पो । आत्मा इम्प । परमात्मा शोइम्प । जीवात्मा जीविम्प । प्रकृति शोउम्पु । प्राणी जीव । माया हानो । भूत उम्पक । ईश्वर शोआप । द्रव्य लसक । वस्तु उशक । तत्व—मिम्मक, मिम्म । सम्बन्ध—युगो । सम्पर्क—सेयुगो । बन्ध—मेयुगो । तादात्म्य—कनो, कनम्पो । अंगांगीभाव—अंगांगिरो । स्वभाव—अम्पो । सत्व—पिमको । रज—छुवको । तम—घुमको । मन—मन । बुद्धि—इंको । वाद—वादो । नित्यत्ववाद—पुलोवादो । अनित्यवाद—हुलोवादो, नोपुलोवादो । क्षणिकत्ववाद—अलोवादो । द्वैतवाद—अकोवादो । अद्वैतवाद—कनोवादो, नोअकोवादो । एकान्तवाद— लकोवादो । अनेकान्तवाद—नोलकोवादो, लंलुकोवादो । मुक्ति—शोमुचो, जिन्नो । संसार—लंगेत । सर्वज्ञवाद—पुमिंगवादो । दृष्टिकोण—लुकोरसो । भ्रम—भूहो । सिद्धान्त—लोशिदो ।

न्याय—इंकोधानो, नीपोधानो

लक्षण 'भिस्पो . लक्षणाभास 'निभिस्पो . अव्याप्ति 'नुवापो . अतिव्याप्ति 'मेआपो . असम्भव 'नोआपो . प्रमाण 'नीप, नीपज . धारावाहिकज्ञान 'हंहजानो . प्रमाता 'नीपक . प्रमिति 'नीपो . प्रमेय 'निपेग . ज्ञप्ति 'जानो . स्वतस्त्व 'पौमंजिजो . परतस्त्व—सौमंजिजो । प्रत्यक्षप्रमाण—इन्दंनीप, इन्दो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परोक्षप्रमाण--ढिकंनीप, नोइन्दंनीप । स्मृति--मिजो ।
प्रत्यभिज्ञान--मेजो । तर्क--डम्मो । व्याप्ति--डुम्मो । अन्वयव्याप्ति--लसोडुम्मो ।
व्यतिरेक व्याप्ति--नोलसो डुम्मो । अनुमान--डामो । आगम--ईनो, ईनंमिपो ।
अवग्रह--लेइन्दो । ईहा -माचिन्दो । अवाय- निसिन्दो । धारणा--मिंजिन्दो ।
संशय--मच्चो । विपर्यय (भ्रम)—भूहो । अनध्यवसाय -नेइन्दो ।
साध्य--शिदग । साधन--शेदज । प्रतिज्ञा--पानो । हेतु--शेदजो ।
उदाहरण--डिम्मो । उपनय--हंशेदजो । निगमन- हंशिदगो ।
अभाव- नोलसो । प्रागभाव--लूलं नोलसो ।
प्रध्वंसाभाव--नेलसो, लेलं नोलसो । अन्योन्याभाव--मीसंनोलसो ।
सम्बन्धाभाव--(सम्पर्काभाव, अत्यन्ताभाव) पेयंनोलपो ।
स्वभावाभाव--अम्पं नोलसो । पर्युदास--सलसं नोलसो ।
प्रसज्य--नेलसं नोलसो । पक्ष--पानग । सपक्ष--सपानग । विपक्ष--रोपानग ।
केवलान्वयी--रंलसडिम्मिर । केवलव्यतिरेकी- रं नोलसडिम्मिर ।
अन्वयव्यतिरेकी--सिडिम्मिर, टुमडिम्भिर । अर्थापत्ति--पैनंडामो ।
अभावप्रमाण--नोलसोनीप । हेत्वाभास--निशेदजो ।
असिद्ध हेत्वाभास--नोशिदलूर, नोशिद । स्वरूपासिद्ध--अम्पं नोशिद ।
आश्रयासिद्ध--पेयंनोशिद । चक्रक या अन्योन्याश्रय--रंघूमो ।
अन्योन्याश्रय--मीसं रंघूमो । चक्रक--डुमं रंघूमो । अनवस्था -रंनोलोसो ।
दोष--डुशो । विरुद्ध--रेशिद । अनैकान्तिक--निशिद ।
बाधितविषय--बाधलूर । सत्प्रतिपक्ष--रूरिर । वीतरागकथा--लेवदो ।
विजिगीषुकथा--रोवदो । जल्प--हिन्तंवदो । वितण्डा--रंवदो ।
छल--चिंठागो, चिंठो । वाक्छल--अगचिंठो । सामान्य छल--माचचिंठो ।
उपचार छल-सग्गचिंठो । जात्युत्तर--निसम्मो । निग्रहस्थान--छुयेटो ।
नय—लको । द्रव्यार्थिक नय--लसको लको । पर्यायार्थिक नय—जिज्जो लको ।
नैगमनय—पौम लको । संग्रह नय--ओघो लको । व्यवहार नय—अको लको ।
ऋजुसूत्र नय—हज्जो लको । शब्दनय - लंईको लको ।
समभिरूढ नय—शेईको लको । एवंभूतनय—लसिलरो लको ।
सामान्य शब्दनय—ईको लको । अर्थनय —आगोलको ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निश्चयनय—सिम्राग लको। व्यवहारनय—हंमाग लको। निक्षेप—नामेटो। नामनिक्षेप—कनोनामेटो, नामोनामेटो। स्थापना निक्षेप—थासो नामेटो। तदाकार स्थापना—सिंअंचो थासो। अतदाकार स्थापना—निंअंचो थासो। द्रव्य निक्षेप-लंजिज्जो नामेटो। भावनिक्षेप—जिज्जो नामेटो। सप्तभंगी—तेनभंगे। अस्ति—असो। नास्ति—नोअसो। अवक्तव्य—नोइकिच। स्वचतुष्टय—अमजीने। परचतुष्टय—बुमजीने। द्रव्य—लस। क्षेत्र—ससो। काल--ललो। भाव 'जिज्जो।

व्याकरण--इकोधान

ध्वनि–ईंगो। वर्ण–इक्क। वर्णमाला–इकगुम्मो। स्वर–थिरिक्क। व्यंजन-नोथिरिक्क। ह्रस्व–हूधिम। दीर्घ–हूतिन्न। प्लुत–हूवेय। अल्पप्राण–सेह। महाप्राण–नोह। विशेषोच्चरित–शेइक्कग। लहरीवर्ण–विविक्क अनुनासिक–हूसुंघ। लिपि–लिरो। मात्रा--फूइक्क। शब्द--ईंक। पद--पर्दीक, पर्दं। फ्रेज–युगीक। वाक्य–पून। उपवाक्य–फूपून। पैराग्राफ–पंगंग, युगपून। प्रकरण–पंग। अध्याय–होपंग युगपंग। पद्य--तीम। गद्य--ताम। चरण-तीमंग। गीत–चीम। कविता–भाय। काव्य–भायेत। संज्ञा–नाम। लिंग–नंग। स्त्रीलिंग--नारानंग। पुल्लिंग-नारीनंग। अलिंग--रनंग। उभयलिंग (सामान्यालिंग) द्रुमनंग। वचन--हूगिन। एकवचन–कनहूगिन। बहुवचन··डुमहूगिन। जातिवाचक संज्ञा--पौमंनाम। व्यक्तिवाचक--कनंनाम। भाववाचक संज्ञा--आंत नाम। कारक--एय। कर्ता--केय। कर्म--गेय। उपकर्म- चेय। करण--जेय। प्रयोजन–टेय। वियोग--डेय। लयन—तेय। अधिकरण--देय। सम्बन्ध–पेय -- सम्बोधन--बेय। सर्वनाम–हूनाम। पुरुष--हूकीन। उत्तमपुरुष–अमोहूकीन। मध्यमपुरुष--इमो हूकीन। अन्यपुरुष--उमो हूकीन। निकटवर्ती--पासंहूकीन। दूरवर्ती -दोरं हूकीन। विशेषण–सौम। विशेष्य–सोमिर। संख्यावाचक विशेषण--गिनं सौम। गुणवाचक विशेष रमं सौम. सार्वनामिक विशेषण हूनामं सौम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सांज्ञिक विशेषण--नामं सौम । क्रिया--आत । वर्तमान काल--इज्जो ललो। सामान्यवर्तमान--पौमंहज्जो । वर्तमानवर्तमान--मोहज्ज । स्वभाववर्तमान-कंजं हज्ज । भूतवर्तमान--नेलसं हज्ज । पूर्णभूतवर्तमान--मेनेलसं हज्ज । भविष्यवर्तमान--जिंजलसंहज्ज । विधिवर्तमान--सूचंहज्ज । भूत--नेलस । भविष्य--जिंजलस । वाच्य--आतपेर । कर्तृवाच्य--केयं आतपेर । कर्मवाच्य--गेयं आतपेर । भाववाच्य--आतं आतपेर । प्रेरणार्थक--आर आत । असमापिकाक्रिया--नोचुकं आत । समापिका क्रिया--चुकं आत । क्रियाक्रिया आतं आत । संयुक्तक्रिया सेआत । क्रियाविशेषण आत सौम । कालवाची क्रिया विशेषण ललगेर आतं सौम । स्थानकवाचीक्रिया विशेषण-ससगेर आत सौम । दिशावाची क्रियाविशेषण--रसगर आतं सौम । ध्वन्यात्मक क्रिया विशेषण--इगं आतं सौम । प्रकीर्णक क्रिया विशेषण--छरं आतं सौम । परागतक्रिया विशेषण--बुमगेर आतं सौम । अव्यय नोभुर । सम्बन्धबोधक अव्यय--पेयं नोभूर । अवलम्बक अव्यय--टेगं नोभुर । उद्गारक अव्यय--भावं नोभर । उपसर्ग ठोरिक्क । कृदन्त आतेड । तद्धित ईकेड । समास शेकोचो । द्वंद समास भिसं शेकोचो । तत्पुरुष--पेयंशेकोचो । अव्ययीभाव--नोभुरशेकोचो । कर्मधारय सौमं शेकोचो । क्रियासमास आतं शेकोचो । क्रियाकर्मक--गेआतं शेकोचो । संज्ञाकर्मक गेनामं शेकोचो । विशेषणकर्मक--गेसौमं शेकोचो । स्वल्प विराम--चेरुको । अर्धविराम शिकरुको । पूर्णविराम रुको । डेश फूरुको । हाइफन नेरुको । उद्धरण चिन्ह नूरिजो । कोष्ठक नूधिरो ।

काव्य--भायेत

ध्वनि मनीगो, मनोपिनो । रस रिस्सो, मनरिस्सो । भाव भावो, मनंभावो. सेभावो, । अनुभाव हूभावो । विभाव लंभावो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आलम्बनविभाव–टिगोलंभावो । उद्दीपन–भव्भो लंभावो । अलंकार–हूरो, भायंहूरो । भक्ति रस-भक्तोरिस्सो । प्रेमरस--लवो रिस्सो । वात्सल्यरस--भिज्जो रिस्मो । करुणारस--दयोरिस्सो । शृंगार रस--चिंगोरिस्सो वीररस--शूरोरिस्सो । हास्यरस--हिसोरिस्सो । रौद्ररस--मेंडेडो रिस्सो । भयानक रस -डिडोरिस्सो । बीभत्सरस--ढाटोरिस्सो । अद्भुत--दिगोरिस्सो । शान्तरस--शमो रिस्सो, नेमुहोरिस्सो । शब्दालंकार--इंगोहूरो । अर्थालंकार--आगोहूरो । अनुप्रास--हंइक्को । अन्त्यानुप्रास--हंजो । लाटानुप्रास--हूईको । यमक--हंईको । वक्रोक्ति--उल्टागो । काकु वक्रोक्ति--टुन्नं उल्टागो । श्लेष--सेमीशो । उपमालंकार--ऊरोहूरो । रूपक--सेरुंजो । उपमेयोपमा -ऊरगूरो । अपह्नुति--हूहेडो । उत्प्रेक्षा--हूफुंडो । अतिशयोक्ति -मेपंतो । व्याजस्तुति--चिंठसंसो । अर्थान्तर न्यास--हूनिम्मो । विरोधाभास- रोलसूरो ।

छन्द और गीत—तिम अं चीम

वर्णिक छन्द- इक्कोमिपतिम, इक्कंतिम ।
मात्रिक छन्द–ईगंट तिम, उंटंतिमो । मात्रा–ईगुंट, उंट । लघु–बेईग । गुरु–सोइग । गण–चुब । तुक–हंजो । यति–हूरुको । लय–लीमो । टेक–इंचीमो । अन्तरा-हूकूँको । मिलित -हूयोगो ।

छन्द और गीतों के नाम बीसों हुआ करते हैं पर उन नामों से उनके रंगढंग का कुछ भी पता नहीं लगता । मानवभाषा में निम्नलिखित सूत्रों के अनुसार उनके नाम बन जायँगे ।

१–क से लेकर ब तक दस अल्पप्राण १ से लेकर १० तक की गिनती के सूचक हैं । अगर उनमें इकार की मात्रा लगा दी जाय तो वे ११ से २० तक के, अगर उकार की मात्रा लगादीजाय तो २१ से ३० तक के, अगर एकार की मात्रा लगादीजाय तो ३१ से ४० तक के, अगर ओकार की मात्रा लगा दी जाय तो ४१ से ५० तक के सूचक अंक बन जायँगे । इस हिसाब से की—११, जी—१४, डु—२७, पे—३६, बे--४६ आदि अंक बन जायँगे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२–जिस छन्द के एक चरण में जितनी मात्रा होंगी उसका नाम उसी अंक के अक्षर को दोबार लिखने से बनजायगा। जैसे पन्द्रह मात्रा के छन्द का नाम–टीटी, २५ मात्रा के छुन्द का नाम जूजू, बत्तीस मात्रा के छन्द का नाम गेगे, आदि।

३– अगर पहिले और दूसरे चरण में मात्राएँ भिन्नभिन्न हों। तो तदनुसार अक्षर भी भिन्न होंगे। जैसे दोहा में १३–११ मात्रा होती हैं इसलिये दोहा का नाम--चीकी, होगा। और सोरठा का नाम ११–१३ के अनुसार कीची। अगर आर्या छन्द के समान प्रथम द्वितीय चतुर्थ चरण में भिन्न भिन्न मात्राएँ हों। तो तीनों के अक्षर मिला दिये जायँगे। जैसे आर्या में १२–१८–१२–१५ मात्राएँ होती हैं तो इसका नामा गीदीटी होगा।

६– एक ही मात्राके अनेक छुन्द होते हैं! प्रसिध्दि और सौन्दर्य के अनुसार उनका क्रम बना लेना चाहिये। और उनके प्रारम्भ में गिनती को अव्यय के समान बनाकर लगा देना चाहिये। जैसे २४ मात्राओं के रोला, दिग्पाल आदि अनेक छुन्द बनते हैं। तो उनके नाम क्रमसे यों होजायगे। रोला—कनंजूजू। दिक्पाल—गानंजूजू। रूपमाला–चिनंजूजू आदि।

७—गीत के तीन भाग होते हैं। टेक अन्तरा और मिलित। तीनों की मात्रा प्रमाण के अक्षर जोड़ने से गीत का नाम बनजायगा। जैसे एक ऐसा गीत है जिसकी टेक १५ मात्रा की, अन्तरा १६ मात्रा का और मिलित ३२ मात्रा का है। तो उसका नाम होगा—टीडिंगू। अन्तरा के वर्ण को अनुस्वार दिया जायगा इससे उच्चारण में कुछ सुभीता होगा। अनुस्वार वाला दीर्घस्वर ह्रस्व होजाता है। यों यहां नामकरण में ह्रस्व दीर्घ का अन्तर नहीं है। सुविधानुसार ह्रस्व या दीर्घ रक्खा जासकता है।

इसप्रकार अन्य गीतों के नाम बना लेना चाहिये। और नामसे गीत का रूप भी थोड़ा बहुत ध्यान में आजायगा। एक ही मात्रा परिमाण के गीतों में अगर भिन्नता हो तो उनका भी क्रम बनाकर कनं गानं चिनं जीनं आदि संख्या वाचक अव्यय क्रम से लगाये जासकते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वैज्ञानिक तत्त्व

विज्ञान के ९२ तत्त्वों के भेद उनके परमाणुओं के आधार पर हैं। यह एक अत्यन्त सूक्ष्म तौल है। मानव भाषा में उन तत्त्वों के नाम ऐसे बनाये गये हैं कि नाम से उनके वजन का पता लगसकता है। यहां वजन में पूर्णांक ही रक्खे गये हैं। आधे से कम को छोड़ दिया गया है और आधे से ज्यादा को पूर्णांक मान लिया गया है।

कहीं कहीं जहां ऊपर नीचे की संख्या मिली हैं वहां अन्तर बनाने के लिये आधे से कम को भी पूरा मान लिया गया है।

पहिले गीत और छन्द के प्रकरण में अक्षरों से जो संख्या बोध किया गया है उसीका यहां उपयोग करना है। इसप्रकार पचास तक की संख्या मिल जायगी। आगे के लिये दो दो अक्षर रख लिये जायँगे। जैसे ९२ के लिये ९ और २। ११५ के लिये ११ का एक अक्षर और ५ का दूसरा अक्षर। इसप्रकार सब तत्त्वों के नाम बन जायँगे ५० के आगे की संख्या में ब का अर्थ शून्य होजायगा अगर वह दूसरे नम्बर पर आये तो।

पर उन शब्दों का दूसरा भी अर्थ हो सकता है इसलिये अलग समझने के लिये उनके पीछे मिम्म शब्द लगा दिया जायगा। मिम्म का अर्थ तत्त्व है यह पहिले बताया जाचुका है। मिम्म को संक्षेप में रखने के लिये केवल म भी लगाया जासकता है। अंग्रेज लोग त और ट के उच्चारण में बड़ी गड़बड़ी करजाते हैं इसलिये टाजाम ताजाम का भेद ध्यान में रखना कुछ कठिन होसकता है ऐसी अवस्था में अन्तर बताने के लिये एक के साथ सिर्फ म लगाया दूसरे के आगे मिम्म।

न.	प्र. नाम	व.	मा. नाम	न.	प्र. नाम	व.	मा. नाम
१	हाइड्रोजन	१	कामिम्म	६	कार्बन	१२	गीमिम्म
२	हीलियम	४	जामिम्म	७	नाइट्रोजन	१४	जीमिम्म
३	लिथियम	७	तामिम्म	८	आक्सिजन	१६	डीमिम्म
४	बेरीलियम	९	पामिम्म	९	फ्लुओरिन	१९	पीमिम्म
५	बोरन	११	कीमिम्म	१०	नियन	२०	बीमिम्म

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११	सोडियम	२३	चूमिम्म
१२	मेग्नेसियम	२४	जूमिम्म
१३	अलुमीनियम	२७	तूमिम्म
१४	सिलिकन (रेती)	२८	दूमिम्म
१५	फास्फोरस	३१	केमिम्म
१६	सल्फर (गंधक)	३२	गेमिम्म
१७	क्लोरीन	३५	टेमिम्म
१८	आर्गन	४०	बेमिम्म
१९	पोटास	३९	पेमिम्म
२०	केल्शियम	४१	कोमिम्म
२१	स्कैंडियम	४५	टोमिम्म
२२	टीटानियम	४७	तोमिम्म
२३	वनाडियम	५१	टाकाम
२४	क्रोमियम	५२	टागाम
२५	मेंगनीज	५५	टाटाम
२६	आयरन (लोहा)	५६	टाडाम
२७	कोबाल्ट	५९	टापाम
२८	निकल	५८	टादाम
२९	कोपर (तांबा)	६४	डाजाम
३०	जिंक (जस्ता)	६५	डाटाम
३१	गलियम	७०	ताबाम
३२	जर्मेनियम	७२	ताचाम
३३	आर्सनिक (संखिया)	७५	ताटा-मिम्म
३४	सेलेनियम	७९	तापाम
३५	ब्रोमिन	८०	दाबाम
३६	क्रिप्टन	८३	दाचाम
३७	रुबीडियम	८५	दाटामिम्म

३८	स्ट्रान्शियम	८८	दादाम
३९	ईट्रियम	८९	दापाम
४०	जरकोनियम	९१	पाकाम
४१	निओबियम	९३	पाचाम
४२	मोलिब्डेनम	९६	पाडाम
४३	मसूरियम	९८	पादामिम्म
४४	रुथेनियम	१०२	बागाम
४५	रहोडियम	१०३	बाचाम
४६	पल्लेडियम	१०७	बाताम
४७	सिलवर (चांदी)	१०८	बादाम
४८	कड्मियम	११२	कीगाम
४९	इंडियम	११५	कीटाम
५०	टिन	११८	कीपाम
५१	एन्टिमनी (सुर्मा)	१२२	गीगाम
५२	तेलूरियम	१२८	गीदाप
५३	आयोडिन	१२७	गीताम
५४	क्सेनम्	१३१	चीकाम
५५	सएसियम्	१३३	चीचाम
५६	बेरियम्	१३७	चीताम
५७	लन्थानम्	१३९	चीपाम
५८	सेरियम	१४०	जीबाम
५९	प्रसेओडिनियम्	१४१	जीकाम
६०	न्योडियम	१४४	जीजाम
६१	इलिनियम		जीताम
६२	समारियम	१५०	टीबाम
६३	यूरोपियम	१५२	टीगाम
६४	गडिनियम	१५७	टीताम
६५	टर्बियम	१५९	टीपाम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६६	डिस्प्रोसियम	१६२	डीगाम	८०	मर्करी (पारा)	२०१	बीकाम
६७	होल्मियम	१६३	डीचाम	८१	थैलियम	२०४	बीजाम
६८	एर्बियम	१६७	डीताम	८२	लेड (सीसा)	२०७	बीताम
६९	थुलियम	१६९	डीपाम	८३	बिस्मथ	२०९	बीपाम
७०	उतर्बियम	१७३	तीजाम	८४	पोलानियम	२१०	कूबाम
७१	लुतेसियम	१७५	तीटामिस्म	८५	... ...	२१६	कूडाम
७२	हैफ्नियम	१७८	तीपाम	८६	रडोन	२२२	गूगाम
७३	टेण्टलम	१८१	दीकाम	८७	... ...	२२४	गूजाम
७४	टंग्स्टन	१८४	दीजाम	८८	रेडियम	२२६	गूडाम
७५	रह्वेनियम	१८७	दीताम	८९	ऐक्टीनियम	२२९	गूपाम
७६	ओसमियम	१९१	पीकाम	९०	थोरियम	२३२	चूगाम
७७	इरिडियम	१९३	पीजाम	९१	प्रोटो एक्टीनियम	२३१	चूकाम
७८	प्लेटिनम	१९५	पीटामिस्म	९२	यूरेनियम	२३८	चूदाम, शोमिस्म
७९	गोल्ड (सोना)	१९९	पीताम				

तत्त्वों के नामों में लोकप्रचलित अधिकांश धातुओं के नाम आचुके हैं। कुछ मिश्रित धातुएँ प्रचलित हैं जैसे पीतल कांसा। इनमें तांबा मूल है इसलिये इन्हें उपसर्ग लगाकर तांबा के नामसे कहना चाहिये।
पीतल--फूडाजाम। कांसा--रंडाजाम।

चिकित्सा—थिचो

चिकित्सालय—थिचोरीह, थिचंद। डिस्पेंसरी—वेथिचेद, थिचोस। एलोपेथी—काथिचो। वैद्यक—कीथिचो। यूनानी--कूथिचो। चीरफाड़—कोथिचो। होमियोमेथी—मिस्साथिचो। क्षार चिकित्सा—खर थिचो। जलचिकित्सा—पीताथिचो। सूर्यचिकित्सा—शोतपथिचो। चिकित्सक—थिचक। आपेरशनरूम—कोथिचोरीह। दवा—थिचु, नेरोगज; कम्पाउन्डर—थिचुयर। नर्स—हूथिचकी हूथिची। एनीमा—गम्पु। इजेक्शन—मम्पु। दवा मिलने की जगह—थिचुस, थिचुरीह।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रोगी को जांच करने की जगह–रूगोदिंचस । प्रसूतिगृह–जिंजोरीह । प्रसूति करानेवाली–केंजिंजरी । बच्चा–जिंजेड । जच्चा–जिंजी, जिंजकी । नाल–विंजू । क्लेरोफार्म–नेहोशज । क्लेरेटिंग–शेछेदो । बीमारी–रुगो । बुखार—वूखो । मलेरियाबुखार—पौंमबूखो । इन्फ्लुएंजा—सोंवूखो । मियादी बुखार–हदोवूखो । प्लेग–मिटोगवो । हैजा—मिटौको । गर्दनतोड़ बुखार—आदमं वूखो । शक्कर की बीमारी–रंमिस्सरुगो । गर्मी–रंतपो । लू लगना–रंपिम्मगो । जलन पड़ना–रंदिहगो । उन्हाली—रंदिहो । क्षयरोग–रंनुस्सो । सखी की बीमारी—रंसुको । नीमोनिया—ट्रहिन्डरुगो । हृदयरोग–रंदमजो । ब्लडप्रेसर—राग रंदेवो । वातरोग—रंधुंगो । पित्तरोग–रंडीहो । कफरोग—रंखिंचो । चर्मरोग—रंमतो । चमड़ा सफेद होना—रंपीमो, कुष्टरोग–रंलिगो । दाद खुजली आदि–रंखिजो । माता की बीमारी–लंगवो । आंवपड़ना—रंछूंरो । दस्तों की बीमारी—रंगुबेरो । पागलपन-मैडो । हिस्टीरिया-रंगिशो । मिरगी-रंनेहुशो । जी मिचलाना–लूऔंको । तड़कन होना–रंतग्गो । गांठ–सोगव । फोड़ा–होगव । कुरूरू–वेगव । फुंसी–रेगव । जलोदर- रंपीतो । पीनस–रंसुंघो । कंठमाल- आदम लंगवो । फफोला–दिहोगव । दमा–रंदमो । खांसी–रंखसो । प्रदर–रंजिंठो । रक्तविकार–रंरागो । दंतरोग–रंचावो । पायरिया–चाबरूरागो ।

वाक्यरचना --पूनो

मानवभाषा में लिखते बोलते समय निम्नलिखित सूचनाओं का ध्यान रखना चाहिये ।

१–क–कर्ता में एक वचन का चिन्ह साधारणतः न लगाना चाहिये, लगाया जाय तो कोई दोष नहीं है । जैसे अम कुरल, अमके कुरल, दोनों ही ठीक हैं ।

ख–सम्बोधन के एक वचन में भी विभक्ति चिन्ह लगाना अनिवार्य नहीं है । सम्बोधन बोधक अव्यय साथ में हों तब तो आवश्यकता और भी नहीं रहती ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग-हिन्दी आदि में कर्म उपकर्म के विभक्ति चिन्ह प्रायः नहीं लगाये जाते। पर मानवभाषा में इतनी छूट नहीं है। साधारणतः वहां विभक्ति चिन्ह लगाना चाहिये। मैं राजा हूँ, या राजा बनता हूँ यहां भी राजा शब्द को विभक्ति चिन्ह देना उचित है। अम राजागे असल, अम राजागे मिकल।

घ-कविता में विभक्ति चिन्ह लगाने का नियम ढीला रहेगा, शर्त यह कि अर्थभ्रम न होना चाहिए।

अगर अर्थ की स्पष्टता नष्ट न होती हो तो गद्य में भी विभक्ति चिन्ह कर्ता और कर्म उपकर्ममें विकल्प से लगाना चाहिये। और उद्देश विधेय में एक सी विभक्ति भी रक्खी जासकती है। जैसे हम सेवक हैं अमखे सेवरखे। अमखे सेवरघे भी कहा जासकता है यह और भी अधिक स्पष्ट होगा।

२-क-शब्द के अन्त में अलिंग सूचक चिन्ह 'उ' लगाया जाता है। जो जड़ पदार्थों के लिये है। शब्द के अर्थ से ही पता लगजाता है कि यह जड़ होने से अलिंगी है ऐसी हालत में अलिंग सूचक 'उ' का चिन्ह लगाना या न लगाना प्रयोग करनेवाले की इच्छा पर है। जैसे सोयान का अर्थ है बग्गी, मानवभाषा में इस अर्थ से ही पता लगगया कि यह अलिंग है तब इसे चाहे सोयान कहा जाय चाहे सोयानु, बात एक ही होगी। इस पुस्तक में जो शब्द-कोष दिया गया है उसमें प्रायः उकार का चिन्ह नहीं दिया गया है। प्रयोग करते समय उपर्युक्त सूचना का खयाल रखकर लगा लेना चाहिये।

ख-जहां पर अर्थभ्रम हो वहां लिंग चिन्ह लगाना चाहिये। जैसे 'टिग' धातु का अर्थ है सहारा लेना। इसलिये जो चीज सहारा बनेगी उसे भी टिग कह सकेंगे। अब अगर किसी जीवित प्राणी का सहारा लेना हो तब तो टिग टिगा या टिगी कहना चाहिये। पर अगर लकड़ी आदि से ही मतलब हो तो टिगु कहना चाहिये। अगर जड़ चेतन का कोई भेद न रखना हो तो सामान्य शब्द टिग ही कहा जासकता है।

टिन धातु का अर्थ घंटा बजना है, इसलिये टिन का अर्थ बजने-वाला घंटा भी होगा। उसकी अलिंगता स्पष्ट है इसलिये टिनु कहने की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कोई जरूरत नहीं है टिन से ही काम चलेगा। यों टिनु कहना गलत नहीं हैं बल्कि अधिक शुद्ध है।

३–क–भाववाचक संज्ञा शब्दों को ओकारान्त कर दिया जाता है। पर कहीं कहीं ओकार न लगाया जाय तो भी काम चल सकेगा।

जैसे—धर्म धातु का अर्थ धर्म करना, या स्वपर कल्याणकारी काम करना है। इसलिये जब किसी धर्म का नाम लेना हो तो भाववाचक संज्ञा के अनुसार उसे धर्मो कहना चाहिये। परन्तु अगर 'धर्म' भी कह-दिया तो कोई हानि नहीं है। इसी प्रकार आनन्द के लिये नन्द, व्याक-रण के लिये इकोधान आदि भी कहा जासकता है। इस प्रकार भाववाचक संज्ञा के नन्दो नन्द, इकोधानो इकोधान, आदि दो-दो रूप प्रयुक्त होसकेंगे। हां! जहां धातु पर से नहीं, किन्तु किसी संज्ञा या विशेषण शब्द पर से भाववाचक संज्ञा बनाई जाय वहां ओकार लगाना अनिवार्य होगा। मम-मातापिता, ममो--मातापितापन, या ममीओ–मातृत्व आदि। यहां ममी से मातृत्व नहीं समझा जासकता, मातृत्व के लिये ममीओ कहना पड़ेगा।

मतलब यह कि जहां ओकार न लगने पर भी भाववाचक संज्ञा का निश्चित बोध हो वहां ओकार न लगाने से काम चलेगा, ओकार वैकल्पिक होगा। जहां अर्थ में सन्देह हो वहां ओकार अवश्य लगाना चाहिये।

ख–रंग रस आदि शब्द भी भाववाचक संज्ञा है। रंग धातु का अर्थ रंगना है। रंग का अर्थ रंग गुण भी हुआ। इसलिये यहां रंग शब्द भाववाचक संज्ञा भी हुआ। इसप्रकार रंग के लिये रंगो और रंग दोनों शब्दों का प्रयोग किया जासकेगा। जहां रंग की पुड़िया आदि में रंग बताना होगा वहां उसे रंगु कहना स्पष्ट प्रयोग होगा, यों रंगु को रंग कहना भी अशुद्ध न माना जायगा।

लाल होने के लिये क्रिया है 'रुंश'। रुंश का अर्थ लाल रंग भी हुआ। इसी तरह विशेषण के रूप में भी इसका प्रयोग होगा। रुंशजीर–लाल वस्त्र। लाल रंगनेवाला पाउडर आदि को भी रुंश कह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सकेंगे, हालांकि उसे रुंशु कहना अधिक स्पष्टता का प्रयोग होगा। पर ललाई को रुंश न कह सकेंगे वहां रुंशो प्रयोग करना ही उचित होगा।

इसप्रकार भाववाचक संज्ञा में ओकार लगाने न लगाने का विकल्प समझ लेना चाहिये। भाववाचक संज्ञा में सर्वत्र ओकार लगाया जाय तब तो अशुद्धि का डर ही न रहेगा पर ओकार लगाये विना भी भाववाचक संज्ञा का प्रयोग होसकता है इसका विचार ऊपर दिया गया है।

स्त्री पुरुष के अंगों में, या पोशाक में जहां विशेषता हो वहां लिंग-सूचक आ ई लगाये जासकते हैं। जैसे-- पुरुष मुख को चिन्दा, स्त्रीमुख को चिन्दी,—कह सकते हैं। किसी पुरुष के किसी अंग या पोशाक को स्त्रीत्व का चिन्ह लगादेने से खासा विनोद होजायगा।

५-अन्य भाषाओं के व्यक्तिवाचक नामों में लिंग सूचक चिन्ह लगाना हो तो उसके अन्त में नाम शब्द लगाकर उसे वे चिन्ह लगाना चाहिये। 'अलेग्जेंड्रा' मानवभाषा में पुरुष चिन्हान्त नाम है जब कि यह एक स्त्री का नाम है। अलेग्जेंड्री बनाना ठीक नहीं, इसलिये 'अलेग्जेंड्रा नामी' कहना ठीक है।

६—तीनों के तीन चारों के चार, सातों के सात आदि प्रयोगों के लिये पुमं अव्यय पहिले लगादेना चाहिये। जैसे पुमंजीन चारों के चार। चारों पांचों आदि प्रयोग चतुष्टय पंचक आदि की तरह करना चाहिये। जीने टुने आदि। जीने मान चारों आदमी। मानजीने-आदमियों का चतुष्टय।

७—बोलचालमें अगर किसी वाक्य में सिर्फ क्रियापद का प्रयोग हो तो विध्यर्थक को छोड़कर बाकी छः कालोंमें उत्तम पुरुष समझना चाहिये, और विध्यर्थक में मध्यम पुरुष।

८—अगर वाक्य में क्रियापद का प्रयोग न किया गया हो तो आमधातुका सामान्य वर्तमान रूप समझ लेना चाहिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९—करलेना लेलेना चढ़ालेना आदि ऐसे प्रयोगों में जहां क्रिया का विषय कर्ता स्वयं होता है वहां क्रियापद के लकार को द्वित्व कर देना चाहिये। जैसे—सिपल—दूसरेका मालिश करता हूं। सिपल्ल--अपना मालिश करता हूं।

१०—भाववाचक संज्ञाएँ ओकारान्त होती हैं पर जहां सिर्फ किसी क्रिया का ही बोध करना हो वहां औ लगाना चाहिये। जैसे—'नामौ' अर्थात् नामलेना। औका उच्चारण 'अउ' न करना चाहिये किन्तु अंग्रेजीके पोट Pot में जो ओ का उच्चारण है वैसा करना चाहिये।

११—उपर्युक्त क्रियात्मक क्रिया के विषय आदिमें कर्म आदि विभक्ति ही आती है हिन्दी के समान षष्ठी नहीं। 'तुम्हारा नाम लेना ठीक नहीं, इसका अर्थ स्पष्ट नहीं है। तुम किसी का नाम लो यह ठीक नहीं, या कोई तुम्हारा नाम ले यह ठीक नहीं। मानव-भाषा में यहां सम्बन्ध विभक्ति न आयगी। किन्तु 'इमगे नामौ नोसतो, कोई तुम्हारा नाम ले यह ठीक नहीं। इमजे नामौ नो सतो—तुम्हारे द्वारा किसीका नाम लिया जाय यह ठीक नहीं। विभक्ति का प्रयोग ऐसा करना चाहिये जिससे अर्थ स्पष्ट रहे।

१२—संज्ञा शब्दों का उपयोग धातु रूपमें भी किया ज़ासकता है। उस नाम से जो विशेष अर्थ प्रगट होता हो वही होना या बनना उसकी संज्ञाधातु का अर्थ होजायगा। यों नामधातु के नियम के अनुसार 'य' लगाकर क्रिया चिन्ह लगाये जायँ तो और भी अच्छा।

१३—संख्यावाचक शब्द भी धातु बनते हैं उनका अर्थ होता है उतने बनजाता। उम गानलू—वह दो होगया।

१४—हिन्दी की तरह होना करना—लस कुर—आदि धातुओं का प्रयोग मानव-भाषा में भी होगा। किसी संज्ञा शब्द के आगे ये धातु लगा देने से वाक्य बनजाया करेंगे। संज्ञा को क्रिया-विशेषण भी बनाया जासकता है। दंगा होता है—लंघातल, लंघातो लसल, लंघातं लसल।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५—मानव भाषा में इस बात की कोशिश की गई है कि एक शब्द के दो अर्थ न हों पर दो शब्दों को जोड़ने, उपसर्ग आदि लगाने से एक शब्द के भिन्न भिन्न तरह से टुकड़े किये जासकते हैं ऐसी हालत में प्रकरण संगत अर्थ निकलने के अनुसार उसके टुकड़े करना चाहिये। प्रकरण से भी अर्थ स्पष्ट न हो समास की अपेक्षा उपसर्ग को, विशेषण की अपेक्षा संज्ञा को प्राथमिकता मिलेगी। श्लेषालंकार में दोनों अर्थ निकलेंगे।

१६—मानव भाषा में किसी के वक्तव्य का उल्लेख उसीके शब्दों में किया जाता है अपने शब्दों में नहीं। डायरेक्ट तरीकेमें भाषा सरल रहती है।

१७—मानव भाषा में जो मुहावरे बनेंगे वे काफी स्पष्ट होंगे।

१८—अगर दो भाववाचक संज्ञाएँ एक साथ हों तो ओकार का चिन्ह अन्तिम शब्द में लगादेने से दोनों में समझा जासकेगा। पर ऐसे प्रयोग प्रायः कवितामें ही होंगे।

धातुकोष (मानवभाषा से हिन्दी)

अ

अक –	भेद करना
अंक –	विवेक रखना
अख –	अखरना
अंग –	अंग बनना
अग्ग –	अभिधा करना
अघ –	अघाना
अंच –	आकार धारण करना
अंज –	अभ्यास करना
अंट –	अकड़ना
अन्न –	खेती करना
अम्प –	स्वरूपमय होना, अभिन्न होना, तादात्म्य होना।
अम्भ –	श्रद्धापूर्वक आज्ञा उपदेश-मानना
अम्म –	अपनाना
अर्न –	कमाना (धन कमाना)
अंश –	अंश बनना
अस –	होना (है)
अस्त –	अस्त होना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आक – अलग अलग करना
आग – अर्थ करना
आच – अनुवाद करना
आज – कार्यालय या कार्याधार बनना
आड़ – एड़ मारना
आत – क्रिया होना
आद – स्थानापन्न होना, किसी पद पर काम करना
आन – नेतृत्व करना
आप – व्यापना.
आब – सुरक्षित रखना,
आम – समझाना
आय – किसी खास बात के योग्य न होने पर भी उसके योग्य होने का ढोंग करना
आर – प्रेरणा करना
आश – आशा करना
आह – आहें भरना

इ

इक – बोलना
इक्क – उच्चारण करना
इंक – आगापीछा सोचना विचारना
इंग – ज्ञाताहोना
इच – तैयार होना
इंज – गहने पहिनना
इट – भोजन करना
इट्ट – भूख लगना
इड्ड – अंडा देना
इंत – इशारा करना
इद – अनुभव करना
इंद – इन्द्रियों से जानना
इन्न – आना
इप – गतिमान होना
इम्प – चेतना होना
इम्म – नायक बनना
इव – चढ़ना
इश्श – चाहना
इंश – शौक होना
ईंक – शब्द कहना,
ईंख – बुरा मानना
ईंग – ध्वनि होना
ईंज – मालूम होना
ईंठ – इठलाना
ईंत – उत्सुक होना
ईंन – शास्त्र बनाना
ईंम – सबसे महान होना
ईंर – तन्मय होना, भरजाना
ईंह – दर्द होना

उ

उंक – न्याय करना
उग – उगना (अंकुरित)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उंग -- गूंजना
उघ -- इकट्ठा होना उघु- झुंड समूह
उंघ -- आशय बनना
उच्छ -- (स्प्रिंग की तरह सुकुडना फैलना)
उछ -- उछलना
उंछ -- पडी हुई चीजें बीनना
उज -- किसी चीजसे बनना
उंज -- सभा बनाना
उट्ट -- उकेलना
उंट -- मात्रा पाड़ना
उड -- योग्य होना
उंड -- उत्तर देना
उंथ -- अभिसार करना
उंध -- औंधा होना
उन -- अनुमति लेना
उन्न जाना
उल्ट उलटना
उव्व ऊबना
उम्प जड़रूप होना
उव उतरना
उश उपयोग में लाना
ऊक उगलना
ऊग उगना.उदय होना
ऊत मूर्ख बनना
ऊय गंध आना
ऊर उपमा देना
ऊव ढाल करना
ऊँह कराहना

ए

एक बुलवाना
एच तैयार करना
एंच व्यवस्था करना
एद अनुभव कराना
एप गतिमान करना
एव चढ़ाना
एश ईश्वर होना

ऐ

ऐंठ ऐंठना
ऐंड सम्पादन करना
ऐन आनाकानी करना

ओ

ओग उगाना
ओंग गुँजाना
ओघ इकट्ठा करना
ओज.. किसी चीज में परिणत होना
ओड योग्य करना
ओंध औंधा करना
ओन अनुमति देना
ओव उतारना
ओश उपयोग में लाना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

औ

औक	उल्टी करना
औन	अनुमोदन करना
और	दिग्दर्शन करना

क

कंग	कंघा करना
कच	बालआना
कच्च	दाढी मूंछ आना
कंच	चोटी रखना
कज	कामधंधा करना
कंज	आदत होना
कज्ज	उपयोगी काम करना
कट्ट	काटखाना
कड्ड	कडुआ होना
कत्त	कतरना
कत	बुरा होना
कत्थ	कत्थिया रंग का होना
कन्द	उपकार करना
कन्न	पहलू पाड़ना
कप्प	संकल्प करना
कब्ब	वचन देना
कम	सम्भोग करना (सामान्य)
कस	कसना
कस्स	जीन आदि कसना
काँच	पारदर्शक होना
काड	तार करना
कात	सूत कातना
कान	तल बनाना
कार	कर लगाना
काम	सम्भोग करना (पुरुषोचित) कामु पुरुष चिन्ह (लिंग)
काश	बुलाना
किच	प्रबन्ध कर लेना
किंच	शिखर आदि बनना
किज	पिंजड़े में बन्द होना
किंज	सम्प्रदाय के नियम पालना
किट	कटना
किंट	पैना करना
किड	अभ्यास करना
किंद	केन्द्र बनना
किन्न	संस्थापना करना
किम्प	व्यवस्था या संचालन-करना
किह	बात कहना
कीत	तुच्छ होना
कीन	इकाई (व्यक्ति) बनना
कीम	सम्भोग करना (स्त्रियोचित) कीमु स्त्रीचिन्ह (योनि)
कीर	सुराख करना
कीह	कथा कहना
कुक	रसोई बनाना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुंक	मध्यस्थ बनना	कैप	टोपी लगाना। कैपु-टोपी
कुग्ग	टेढ़ा होना	कोक	रसोई बनवाना। कोका-रसोई का मेनेजर
कुच	सिकुड़ना		
कुंच	रोम खड़े होना	कोच	सिकोडना
कुंज	बगीचा आदि बनाना	कोज	धंधा कराना
कुज	धंधा (जीविका) करना	कोद	कुदाना
कुंट	गलतियों का समर्थन-करने लगना	कोब	अमल में लाना
		कोर	कराना
कुट्ठ	ईंट बनाना	कौत	अंदाज बांधना
कुड्ड	कसायला होना		
कुद	कूदना		**ख**
कुन्न	कोण बनना	खख --	खखारना
कुब	अमल में आना	खज --	खुजली आना
कुर	करना। कुरु-हाथ	खट --	अपेक्षा करना
कूंक	बीचमें आना	खम्भ --	खंभा खड़ा करना। खम्भु-खंभा
कूट	मायाचार करना		
कूड	कुडकुडाना, बड़बडाना	खस --	खांसना। खसो-खांसी
कूत	शैतान बनना	खाड़ --	खड़खड़ाना
कून	संगठन करना	खात --	खाद डालना। खातु-खाद
कूम	संभोग करना (सामान्य)	खाद --	खाना
केच	प्रबन्ध करदेना	खाब --	स्वप्न आना
केज	पिंजडे में बन्द करना	खार --	खारा होना। खारु-नमक
केट	काटना	खिच --	कीचड़ होना
केड	अभ्यास करना	खिंच --	कफ बनना
केय	कर्ता होना	खिज --	खुजाना
केह	कहलाना	खिड --	लडखड़ाजाना
कैंक	मयूर की तरह बोलना	खिंड --	कठिन होना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खिप --	फिंकना
खिर --	खाली होना
खिस --	नपुंसक होना
खीट --	खट्टाहोना
खीर --	उजड़ना
खुच --	जड़ाजाना
खुंच --	खरौंचना
खुड --	कठोर होना
खुंड --	बढ़ईगिरी करना
खुप --	खपना
खुम --	खिंचना
खुस्स	खिसकना
खुश	खुश होना
खुंश	बधाई देना
खुह	कसम खाना
खूड	ठोस होना
खूर	बांटना
खूह	दुहाई देना
खेच	कीचड करना
खेज	खुजलवाना
खेड	लड़खड़ा देना
खेप	फेंकना
खेर	खाली करना
खेस	नपुंसक करना
खोच	जड़देना
खोड	कठोर करना
खोप	खपाना
खोम	खींचना
खोश	खुश करना
खोह	कसम खिलाना

ग

गंक	रिंग या चूड़ी की तरह गोल होना
गंच	गोल होना
गज	तीर चलाना
गठ	गांठ बांधना
गंठ	गठना
गत	उलीचना
गंथ	ग्रंथ बनाना। गंथु-पुस्तक
गप	झूठी बात उड़ाना
गब	फुंसी आदि होना
गंभ	गर्भ रहना
गम्प	एनीमा देना
गरं	पीसना। पीसु-आटा
गाट	उलहना देना
गाद	सैरसपाटा करना
गाम	गढ़ना (गहना मूर्ति-वगैरह
गार	निगलना
गाह	गवाही देना
गिक्क	फिरकनी खाना
गिंक	परिक्रमा करना
गिग्ग	हकलाना
गिंग	पैसा कमाना (श्रमसे)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गिंच	तवा या थाली की तरह गोल होना
गिंज	आटा आदि गूनना
गिन	गिनना। गिनो-गिनती
गिप	अन्तर या दरार पड़ना
गिम्स	आसमानी रंग का होना
गिर	गिरना
गिव	देना। गिवो-दान
गिश	मूर्च्छित होना। गिशो-मूर्च्छा
गीठ	गठरी बांधना। गीठु-गठरी
गीन	अंक बनाना
गीब	फीस लगना (शुल्क)
गीम	गाना
गुक	कचरा होना
गुक्ष	मैला होना
गुंग	आकाशवाणी करना
गुच	गोली बनना
गुंच	गेंद की तरह गोल होना
गुट	अटकना
गुंट	अटना समाजाना
गुड	बखरना
गुंड	फाग खेलना
गुन	रंग विरंगा होना
गुप	गुम होजाना
गुम्प	माला बनाना
गुफ	गूंथना
गुव	हगना
गुश	धनसंग्रह करना
गूंक	लुभाकर रिश्वत देना
गूंज	प्रतिध्वनि होना
गूत	असंयम को अज्ञान बताने का छलकरना
गूंथ	डोरे आदिसे चित्रादि भरना
गूभ	बकवाद करना
गूम	अज्ञात रूप में गुम होजाना
गूर	लौटना
गेंक	विवश होकर रिश्वत देना
गेंट	रिश्वतखोरी होना
गेन	गिनाना
गेप	अन्तर या दरार डालना
गेय	विषय या लक्ष्य बनना (कर्मकारक)
गेर	गिराना
गेव	दिलाना
गेश	मूर्च्छित करना
गोक	कचरा करना
गोच	गोली बनाना
गोट	अटकाना
गोड	बखराना
गोन	रंग विरंगा करना
गोप	गुमाना
गोव	हगाना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गोश	धनसंग्रह करना
गौक	उगाहना
गौर	उड़ेलना

घ

घग	घिग्घी बँधना
घट	कोशिश करना
घंत	हंटर मारना (कोड़ा)
घन	घनकी तरह चोट करना
घश	विचलित होना
घाड़	ज्वार आना
घात	मारना, प्रहार करना
घार	छूटना
घाव	घाव होना
घिर	घिरना
घिस	घिसजाना
घीम	नीला होना
घीट	पुरुषार्थ करना
घुंघ	पर्दा, घूंघट करना
घुट	घुटजाना
घुप	अंधेरा होना
घुप्प	अदृश्य होना
घुम्प	काला होना
घुम्म	घुमड़ना
घुर	घुलना
घुव	घायल होना
घुस	घुसना (शक्ति के साथ)
घुंस	अस्त होना
घूप	घोर अंधकार होना
घूम	चक्कर खाना, चकराना
घेर	घेरना
घेस	घिसना
घोट	घोंटना
घोप	अंधेरा करना
घोर	घोलना
घोंव	घायल करना
घोस	घुसेड़ना (जबरदस्ती)

च

चंक	प्रणाली (पद्धति) बनाना
चक्क	चक्रगति करना
चग	भड़काना
चंच	किनारी निकालना
चच्च	फ्रेम लगाना
चट्ट	चटकना
चंट	तरीका निकालना
चन्त	चतुराई करना। चन्ता चतुर
चन्न	कला कार्य करना
चम	चमकना-झकमकाना
चम्प	मुद्रा बनाना
चम्प	बिजली चमकना
चय	ढेर लगाना
चर	घास आदि चरना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चर्र	फटना	चींथ	चींथना
चंस	अवसर पाना	चीम	गीत बनाना
चह	चहकना	चीर	चीरा लगाना
चाक	चौकटा बनाना	चुक्क	चूकना
चाट	चांटना	चुक	चुकजाना खलास होजाना
चाड	चुगली करना	चुंक	अत्तभ्रमण करना
चान	कारीगरी करना	चुग	चुगना
चाप	छकाना	चुंच	बेलबूटा निकालना
चाब	चबाना	चुट	चोट लगना
चाम	आदर्श बनना	चुंट	चुटकी लेना
चास	परिचर्या करना	चुंत	चालाकी करना
चिक	छकजाना, तृप्त होना	चुन्न	मिस्त्रीका कार्य करना
चिंक	प्रदक्षिणा करना	चुप	चुपहोना
चिंग	परनिमित्तक सुखभोग करना (कामपुरुषार्थ)	चुंप	मौनलेना
		चुम्ब	बहलाना
चिट्ट	सट्टा जूवा आदि की दूकान बनाना	चुभ	चुभना
		चूभ	तीखा होना
चिंठ	छलना	चुर	चोरी करना
चित्त	चित्र बनाना	चुर्र	दिवाला निकालना
चिन्त	चिन्ता करना	चुस	चूसाजाना
चिन्द	मुख्य बनना	चूज	चुनाव करना, चूजो चुनाव
चिप	चिपकना	चूम	चूमना
चिम्प	चिपटना	चूर	चूर्ण करना
चिम्म	किरण फेंकना	चेक	तृप्त करना
चिर्र	चीरना	चेप	चिपकाना चेपु गोंद
चिय	परिचय करना	चेय	उपकर्म बनना
चीख	चींखना	चेव	परिचय कराना
चीट	ठगना, चीटा ठग	चोक	खलास करना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चोभ	चुभाना
चोट	चोट लगाना
चोप	चुप करना
चोभ	चुभाना
चोर	चोरी करवाना
चोस	चूसना
चौक	हिसाब पूरा या ठीक करना
चौंट	चुटकी बजाना
चौंध	चौंधयाना

छ

छट	तिरस्कार करना
छट्ट	सताना
छंट	तमाचा मारना
छद	छत तानना
छद्	छतबनाना
छुप्प	खेना
छुम्प	संस्कार डालना
छय	हारना
छर्र	बिखरना
छह	छीलना
छाड	छेड़ना
छाद	छाना
छान	छानना
छाप	छापना (ठप्पे वगैरह से)
छार	दुहना
छिंक	छींकना
छिट्ट	छिटकना
छिंड	छिड़कना
छिद	छिदना
छिंत	फोटो खींचना
छिन	छिनजाना
छिम	नचना
छिव	चिन्ह लगाया जाना
छीक	छिनकना
छीर	दूधपिलाना
छुञ	तजना
छुम	दीक्षालेना
छुर	हजामत करना
छुव	छाया में होना
छूप	धूप देना
छूर	दस्त लगना
छेद	छेदना
छेन	छीनना
छेम	नचाना
छेव	चिन्ह लगाना
छोम	दीक्षा देना
छोर	हजामत करना
छोव	छाया करना, छोवु छत्ता
छौंक	छौंकना बघारना

ज

जक	जिला बनाना
जंग	मल्ल युद्ध करना
जग्ग	रखदेना
जच	जचना पसन्द आना
जंज	वंश चलना
जंट	गिरफ्तार करना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जद जोड़ना मिलाकर या छेद बन्दकर ठीक करना
जन्द जादू करना
जर अनिवार्य होना
जप जपना जपु जापकी माला
जम्म ठीक तरह से जमाना
जम जमजाना
जय जीतना
जंश वाणिज्य करना
जह छलकना
जाग पालना पोसना
जाज जरूरी होना
जाट पकड़ना
जाड भार उठाना
जान जानकारी करना
जाम पृथ्वीरूप होना
जाश बाजार करना
जिग जागना
जिच्च चेष्टा करना हिलना डुलना
जिज पैदा होना
जिज्ज अवस्था होना
जिंज प्रसव करना
जिड भारी होना
जित विदा लेना
जिन्द रसायन बनाना
जिन्न मोक्षपाना
जिप वर्ग बनना
जिम्म योगधारण करना योगी बनना
जिव जीना, जिवु प्राण
जिर ओढ़ना
जिश खरीदना
जिंश कीमत लगाना
जिह खर्च होना
जीम देवरूप होना, देव मानाजाना
जीर कपड़े पहिनना
जुग आज्ञा मानना
जुंग आज्ञा देना
जुंड भुगतना
जुंज गर्भधारण करना
जुट सवार होना
जुर पंचायत करना जुरो पंचायत
जुंश दलाली करना
जुस उत्साही होना
जूक लम्बा चौड़ा मोटा होना
जूज रजस्वला होना
जूठ जूठा करना
जूड जूडा आदि बांधना
जूत जूता आदि पहिनना
जूम इनाम देना
जूय जुवा खेलना
जूश इंन्द्रिय विषय भोगना
जेज पैदा करना
जेड भारी करना
जेत विदा देना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जेप	वर्ग बनाना
जेय	करण बनना
जेर	ओढ़ाना
जव	जिलाना
जेश	खरीदवाना
जेह	खर्च करना
जैज	निमत्त बनना
जोग	आज्ञा मनवाना
जोट	सवार करना
जोर	पंचायत कराना
जोस	उत्साहित करना

झ

झक	झलकना
झंग	खेलमें प्रतिस्पर्द्धा करना
झड	झडना
झत्त	जातपांत मानना
झप्प	अकस्मात होना अकस्मात आना
झब	झेलना
झांक	झांकना
झाग	छाग उठना
झाप	छापा मारना
झाम	ओस पड़ना
झार	झकोरना
शास	कुहरा छाना
झाह	पालापड़ना
झिक	सफेद होना
झिम	दीपक जलना
झिर	झरना
झीड	झिडकना
झुंक	नष्ट होने के लिये डाला जाना
झुप्प	झपट्टा मारना
झुम्म	झिलमिलाना
झुर	वितरण करना
झुन	सट्टा खेलना
झुस	बेंचना
झूम	तिलमिलाजाना
झेक	सफेद करना
झेम	दीपक जलाना
झेर	झराना
झोंक	नष्ट होने या जलाने के लिये डालना
झोर	बटवाना
झोस	बिकवाना
झैन	टिमाटिमाना
झौम	उल्टा या पुच्छलतारा सरीखा लम्बा प्रकाश होना

ट

टक्क	टक्कर लेना
टख	अपेक्षा करना
टच	छूना
टंच	स्पर्श ज्ञान होना
टट्ट	टूटना
टन्न	बजना
टम्प	बूंद बनना
टप्प	टपकना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

टङ्ख उगाहना
टम्ब बदला लेना
टम्भ आग्रह करना
टर्र चिल्लाना
टांक रिश्वतलेना (समझौतेसे)
टाग टीका करना
टाज टालना
टाट टटोलना
टाप प्रबल होना
टाब जिल्द बांधना
टाम ठीक करना
टार दौरेपर या यात्रापर जाना
टास ठहराव करना
टाह टहलना
टिक्क लेना
टिग सहारा लेना
टिज विज्ञापन करना
टिन घंटा बजना
टिन्न स्वर से स्वर मिलना
टिप्प पक्षपात करना
टिम वशमें होना
टिम्प सुभीता करना
टिव एक ओर झुकना
टिस्स अनुसरण करना
टिश फैलना
टिंस बिखरना (हवामें उडजाना)
टिह ठहरना

टीप दूसरोंसे अधिक सुविधादेना
टीब पक्ष में होना
टीर चीत्कार करना
टुंग ताकतवर बनना
टुट तोड़ाजाना
टुंट मरोड़ना
टुन्न स्वर निकलना
टुप्प टाईप करना (कम्पोज करना)
टूंक रिश्वत लेना (विवश करके)
टेंक रिश्वत लेना (लुभाकर)
टेग सहारा देना
टेज विज्ञापन करना
टेन घंटा बजाना
टेम वश में करना
टेय प्रयोजन रूप बनना। प्रयोजन कारक
टेर पुकारना
टेव एक ओर झुकाना
टेश फैलाना
टेह ठहराना
टोट तोड़ना
टौप सीढ़ी चढ़ना, टौपु सीढ़ी

ठ

ठक्क ठोकर मारना
ठच पलटना
ठन्न ठनकना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ठम्भ	हठ करना
ठम्म	मचलना
ठाक	ठिठकना
ठाठ	ठसक बनाना
ठान	ठानना
ठाप	ठीकालेना
ठाम	साहस करना
ठास	ठासना
ठाह	ढकेलना धक्का देना
ठुक्क	ठोकना
ठुंक	कूटना
ठुड	हड्डी रूप बनना
ठुंड़	लकड़ी बनना
ठुप	गाली देना
ठुर	उत्तेजित होना
ठुस्स	ठुस्सा मारना
ठूम	व्याभिचार करना
ठोंक	कुटवाना
ठोप	गाली देना
ठोर	उत्तेजित करना

ड

डक	गडना
डंक	डंक मारना
डग्ग	डिगना
डप	डुपकी लगाना
डब	डबडबाना
डम्म	तर्क करना
डस	डसना
डंस	डसकर खून आदि चूसना
डाच	जुरमाना करना
डाट	डाटना
डाम	अनुमान करना
डार	पिरोना
डाह	ईर्ष्या करना
डिक	गहरा होना
डिंक	दर्जा बनना
डिस्ट	जहां की चीज वहां रख देना
डिग	खुदना। डिगु खड्डा
डिच	दंड मिलना
डिंच	जांचना
डिंज	गुच्छा बनाना
डिज	उलझना
डिट्ठ	क्रूर होना
डिड	डरना
डिंड	हिंसा करना
डिन	पगना
डिप	डांक बांटना। डिपु डांक
डिम्म	दृष्टान्त देना
डीड	आतंक छाजाना
डीम	नमूना बनाना
डीह	पित्त भड़कना
डुंज	जलेबी पाडना
डुंड	लुड़कना
डुप	डूबना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

डुम्म व्याप्ति सम्बन्ध होना
डुंश विषैला करना
डुश दूषित होना
डूच दमन करना
डंक गहरा करना
डेग खोदना
डेच दंड देना
डेज उलझाना
डेड डराना
डेन पागना
डेर डांक बांटना डेपा डाकिया
डेय सम्बन्ध छोड़ना। अपादानकारक
डैड आतंक छादना
डोड लुडकना
डोप डुबाना
डोश डूषित करना

ढ

ढक ढकना, ढकु ढक्कन
ढम बूंदी वगैरह निकालना
ढर अेक तरफ ढलना
ढस्स घृणा करना
ढह ढहना गिरकर बर्बाद होना
ढाच वापिस होना
ढाज फुसलाना
ढाट घृणित होना
ढान कंधा आदि लगाना
ढाम ढालना (सांचे में)
ढामु सांचा
ढास दुतकारना
ढिक ओट में होना
ढिच वापिस करना
ढिर्र कायर होना
ढिस लगना
ढूट धृष्टता करना
ढीम युद्धकरना
ढीर ढीलदेना, ढीला करना
ढुग उसकाना
ढुच वापिस लेना
ढुन ढोना
ढुब पोलाहोना
ढुस्स मुक्का मारना
ढूम हुल्लड़ मचाना
ढेक ओट में करना
ढेच वापिस कराना
ढेस फांसी लगाना (दूसरे को)
ढैम किला बनाना
ढोग उसकराना
ढोच वापिस लिवाना
ढोन ढुलाना
ढोब पोला करना
ढोम बमफेंकना

त

तक्क ताकना, नजर रखना
तंग तंग करना, परेशान करना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तग्ग	तड़कना
तड	ओला आदि बरसना, तडु ओला
तन्त	तंत्र बनाना
तत्थ	ज्यों का त्यों कहना
तम्म	तड़कना
तर्र	भींगना
ताग	तागना टांका लगाना
ताज	मुकुट धारण करना। ताजु मुकुट
ताप	तापना
ताभ	प्रतिभाशाली होना
ताम	गद्य बनाना
तार	उद्धार करना
ताश	ताश खेलना-ताशु ताश
तिंज	प्रयोग करना, अजमाना,
तिद	टिकिट कटाना
तिन्न	ऊँचा होना
तिप	गर्म होना
तिम	छन्द बनाना
तिम्प	सेंकना
तिह	तह करना
तीत	उपादान बनना
तीन	उन्नतिकरना
तीम	पद्य बनाना
तीर	तैरना
तुद	परेशान होना
तुंद	वेदना होना
तुन्न	रुई आदि धुनना
तुप	तपस्या करना
तुम	लम्बा होना
तुर	शाकभाजी लगाना
तुश	सन्तुष्ट होना
तूय	लाटरी भरना
तेप	गर्म करना
तेय	भीतर होना, लयनकारक-बनना
तेह	तह करना
तोद	विवश या परेशान करना
तोप	तपस्या कराना
तोम	लम्बा करना
तोर	शाक भाजी लगाना
तोश	संतुष्ट करना

थ

थक	थकना
थड	कांपना
थप्प	थापना
थम	बर्फ गिरना
थाग	सूजना
थाप	जोतना
थास	स्थापना करना
थाह	थाहलेना
थिक	मोटा होना।
थिक्क	गाढ़ा होना
थिच	चिकित्सा करना
थिंद	भाड़ा लगना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

थिन पतला होना
थिप डालना
थिम बर्फ बनना
थिर स्थिर रहना
थीर मजबूत होना
थुद ब्याज देना
थुंद ब्याज लेना
थुन्न नीचा होना
थुन चौंडा होना
थुम सम्हलना
थुर उबलना
थूज बलिचढ़ाना
थून वर्ग करना
थूह बलात्कार मैथुन करना
थेक मोटा होना
थेच चिकित्सा कराना
थेन पतला करना
थेप डलवाना
थेम बर्फ बनाना
थेर टिकाना, स्थिर करना
थोन चौंड़ा करना
थोम सम्हालना
थोर उबालना

द

दन्न निछावर करना
दम सांसलेना
दय दया करना
दर दलना, दरु दाल
दाक अनुमति देना
दाद समर्थन करना
दान दान करना
दाप हलचलाना। दापु हल
दास दास बनना, गुलामी करना
दाह झुलसना
दिख दीक्षालेना
दिग आश्चर्य होना
दिंच परखना
दिंज निरीक्षण करना
दिज परीक्षा लेना
दिज्ज जांचकरना
दिन्द डिंडोंरा पीटना
दिन्न पंक्ति बनाना
दिब दबना
दिम्प दिया जलाना
दिश उपदेश लेना
दिह जलना
दीद मत (वोट) देना।
दीन लकीर खींचना
दीर दर्शन करना
दुक्ख दुखी होना
दुख दुखी होना
दुम पीछे चलना
दुर्र बिरला होना
दुर दूर होना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दूत	दूत बनना
दूब	दबाई देना
दूर	अन्तर पड़ना
दूश	द्वेषकरना
दूह	जंग (मोरचा) लगना
देख	दीक्षादेना
देग	आश्चर्य कराना
देज	परीक्षा लेना
देब	दबाना
देय	आधार बनना। आधार कारक बनना
देश	उपदेश लेना
देह	जलाना
दोख	दुःखी करना
दोम	पीछे चलाना
दोर	दूर करना
दोश	द्रोह करना

ध

धक्क	धक्का देना
धक	धड़कना
धन	धनबनना
धंग	धुँवापीना (तम्बाकू आदिपीना)
धन्न	धन्यवाद देना
धम्म	धर्मस्थान बनना
धर	धारण करना
धर्म	धर्मकरना, स्वपर कल्याणकारी काम करना।
धस्स	फिसलना
धाच	धरना देना
धाड़	पछाड़ना
धान	विधान करना
धाप	निंदा करना
धाम	संयम रखना
धिन्न	उचित होना
धिम	धीमा होना
धिर	धीरज रखना
धित्र	दौड़ना
धिस	थकना
धीन	ध्यान करना
धीम	बूढ़ा होना
धुक	चौंकना
धुंग	गैसबनना
धुग	धुवां होना
धुच	बेगार करना
धुज	विकल होना
धुप	निन्दा करना
धुप्प	चमकाना
धुव	धुलना
धुंब	गुदा साफ करना
धूत	वैभव मिलना
धेम	धीमा करना
धेर	धीरज देना
धेत्र	दौड़ना
धेस	थकाना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धोग	धुवां निकालना
धोच	बेगार कराना
धोज	विकल करना
धोप	निन्दा कराना
धोव	धोना

न

नक	व्यर्थजाना
नंग	स्त्रीपुरुष चिन्ह प्रगट होना
नंच	नृत्य करना
नंज	हरा होना
नट्ट	नकल करना
नट	अभिनय करना
नंट	विदूषकी करना
नन्द	आनन्द करना
नप	औसत निकालना
नंफ	तार खींचना
नम्म	मंगलचरण करना,- मंगलाचार
नर	आचरण करना
नह	अणुरूप होना
नाक	अलग होना
नाग	नींव डालना
नाट	नाटक करना
नाड	प्रतिवाद करना
नात	नेग देना
नाथ	नाथना
नाद	गर्जना करना
नाम	नामलेना
नाम्र	विनय करना
नाव	नावखेना
नाह	छोटा बनना
निक	निकलना
निंग	नंगा होना
निग	छिलना
निच	निचुड़ना
निच्च	पसीना आना
निड	सुलझना
नित	नियुक्त होना
निंत	उदासीन होना
निप	नापना
निभ	निभना
निव	झुकना
निव्व	धनुषाकार बनना
निम्म	नियम लेना
निस	निश्चित होना
नीट	उपवास करना
नीर	हरलेना
नीव	सिगनल देना
नुंक	नुकीला होना
नुंख	सींगमारना
नुग्ग	उखाड़ना
नुग	मना करना
नुंच	पेलना
नुच	नुचना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नुट	नोट करना
नुथ	सकरा (तंग) होना
नुन्द	रस आना
नुप	नपना
नुम्म	आकर्षण करना, मनखींचना
नुम	शिष्टाचार पालन करना
नुव	कम होना
नुंश	बिगड़ना
नुस	नास होना
नुस्स	क्षीण होना
नुंह	गिड़गिड़ाना
नूग	इतराज होना
नूज	समाचार देना
नूय	नया करना
नूश	अवनतिहोना
नूह	दीन बनना
नेक	निकालना
नेंग	नंगा करना
नेग	छीलना
नेच	निचोड़ना
नेड़	सुलझाना
नेत	नियुक्त करना
नेभ	निभाना
नेव	झुकाना
नेस	निश्चय करना
नैक	उगलना
नोग	मना कराना
नोंच	नोंचना
नोट	नोंध कराना
नोथ	सकरा (कम चौड़ा) करना
नोप	नापना
नोम	शिष्टाचार पालन कराना
नोव	कम कराना
नोस	नाश करना

प

पंक	फहराना
पंग	प्रकरण लाना
पच	पचना
पग्ग	व्यञ्जना करना
पच्च	पच्चर मारना
पंज	गौरव रखना
पज्ज	स्तुति करना
पट	फटकारना
पट्ट	पटिया बनना
पंट	पाटना
पड्ड	चर्या बनाना
पंत	तुलिया करना, वर्णन करना
पत्त	पत्ते आना
पद	चहलकदमी करना
पद्द	क्रम बनाना
पन्द	फड़कना
पर्द	रूपचलाना (शब्द धातु आदि के)
पन्न	ग्रंथादि प्रकाशन करना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पब्र	ओंठ बजाना
पप्प	पपड़ी आना
पम्प	पम्प मारना
पम्म	पद पाना
पर्ड	परफोरेटिंग लाईनवार छेद आदि करना
पर्र	पादना
पाक	अनुमति लेना
पाग	प्रचार करना
पाच	जुगाली करना
पाज	प्रार्थना करना
पाट	छाप मारना
पाड	पड़ाव डालना
पात	पता ठिकाना होना
पाद	पैरोंसे चलना
पान	प्रतिज्ञा करना
पाप	पाप करना
पाम	पनपना
पाय	पैर चलाना
पाव	मेवा आदि बनना
पार	पार होना
पास	पास से निकलना
पाह	अतिथि या पाहुना बनना
पिंक	पकना
पिग	सीखना
पिंग	पिघलना
पिच्च	थूकना
पिछ	पूछना
पिज	नंबर लगना
पिंट	छापना
पिंड	पिंड बनाना
पित	पीना
पित्त	तरल होना
पिंत	प्यास लगना
पिन	प्रगट होना
पिम	उजेला होना
पिम्म	घाम पड़ना
पिंश	पोर बनाना
पिह	आतिथ्य करना
पींद	पीला होना
पीम	सफेद होना
पीश	व्यवस्थित टुकड़े करना
पुंग	मुखशोधक वस्तु खाना
पुच्च	पुचकारना
पुछ	पोंछना
पुंछ	पखारना
पुज	पुजना
पुट	निकट आना
पुत	पुतना
पुत्त	पालिश होना
पुन्न	पुण्य करना
पुश	पुष्ट होना
पून	वाक्य बनाना
पूम	परिपूर्ण होना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूर	पूरना (गड्ढा वगैरह)
पेक	पकाना
पेग	सिझाना
पेंग	पिघलाना
पेछ	पुछवाना
पेज	नम्बर लगाना
पेंट	छपवाना
पेत	पिलाना
पेन	प्रगट करना
पेम	उजेला करना
पेय	सम्बन्ध होना
पेह	आतिथ्य कराना
पेश	परोसना
पोछ	पोछवाना
पोज	पुजाना
पोट	निकट करना
पोत	पोतना
पोत्त	पालिश करना
पोश	पुष्ट करना पोषण करना
पौम	साधारण होना

फ

फक	मुँह फीका पड़ना
फक्क	फांकना, फक्की मारना
फग	पिचकारी मारना
फग्ग	फाग खेलना
फट	झाड़ना
फंट	झाड़ फूंक करना
फड़	धूल उड़ाना
फंद	फंदा डालना
फफ	फबकना
फर	धार बनना
फर्म	फार्म भरना
फव	फलहोना—परिणाम आना
फस	फुसफुसाना
फस्स	फुसलाना
फह	रुआं बनना
फान	उफान आना
फाव	फूलना
फाश	खुलना, उघड़ना
फाह	नरम होना
फिंग	भड़कना
फिच्च	पिचलना
फिड	हलका होना
फिन	रवाना होना
फिम	यशस्वी होना
फिर	उड़ना (बिना पंखों से)
फिस	सामना करना
फिंस	आक्रमण करना
फीब	बुखार आना
फीर	हवाईयान बनना
फीश	सहन करना
फीह	सरल होना
फुंक	फूंकना
फुट	फूटना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फुंट	फूट डालना
फुंड	कल्पना करना
फुंद	फुदकना
फुन	सफल होना
फुर	पंखों से उड़ना
फुब	फूलना (गुब्बारा आदि)
फुस	फसना
फुंस	जाल डालना
फुह	षड्यन्त्र में फसना
फूम	आंधी चलना तूफान आना
फूश	फुसकारना
फेंग	भड़कना
फेड	हल्का करना
फेन	रवाना करना
फेम	यशस्वी करना
फेर	उड़ाना (बिना पंखों से)
फेंल	सामना कराना
फेंस	आक्रमण कराना
फोट	फोड़ना
फोट्ट	विस्फोट होना
फोन	सफल करना
फोर	उड़ाना (पंखों से)
फोव	फुलाना
फोस	फसाना
फोह	षड्यन्त्र करना

ब

बंग	भंग निकालना
बुंड	बढ़ईगिरी करना
बंध	बांधना
बप	बोना
बंप	गर्भधारण करना
बाग	झूमना
बाड	नीलाम में बोली बोलना
बात	बताना
बाध	बाधा डालना
बान	बुद्धिमान होना
बाफ	नीलाम करना
बाब	बालक बनना
बार	वकालत करना
बाह	नाली निकालना
बिंक	साहुकारी करना
बिग	बड़ा बनना
बिंग	लाना
बिच	बचना
बिछ	बिछना
बिउज	बहकना
बिट	पिटना
बिड्ड	अधिक होना
बिड	बढ़ना
बिंड	रिकार्ड बनना, सब से आगे बढ़ना
बित	बातचीत करना
बिद्ध	बेधना
बिंध	गांठ बाधना
बिब	बच्चा बनना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ब्रिम बीमा होना
बिल्ड मकान वगैरह बनाना
ब्रिड वहना
बीग महान बनना
बीड विकसित होना
बीन बीनना
बीर पहिनना [कपड़े]
बीह बिहार करना
बुंक कुल्ला करना
बुक बुलकना
बुज समझना
बुध विद्वान बनना
बुन बुनना
बुब उबलना
बुंश दतवन करना
बूत रस्सी बनाना
बूश शारीरिक कृत्य करना
बूह अस्वाभाविक मैथुन करना
बेंक बेकिंग करना
बेग बड़ा बनाना
बेच बचाना
बेछ बिछाना
बेट पीटना
बेड बढ़ाना
बेत बातचीत कराना
बेब बच्चा बनाना,
बेम बीमा करना
बेय पुकारना
बेह बहाना
बैट बाजी लगाना
बैफ नीलाममें बोली बोलना
बोज समझाना
बोध विद्वान बनाना
बोन बुनवाना
बोब उबालना
बौड भविष्य बताना
बौस फटकना

भ

भक्त श्रद्धापूर्वक आज्ञा उपदेश मानना
भंग भाग करना
भज भजन करना
भंड वर्तन बनाना
भत्त भला करना
भन्त तीर्थ या धर्म-संस्था बनाना, विश्वकल्याण का पथ निर्माण करना,
भप गोली चलाना
भभ भभकना
भम्म संहार करना
भाक शिकायत करना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भाग भाग देना (गणित)
भात फसल आना
भाम आलिंगन करना
भाय कविता करना
भार भरना (व्यवस्थित भरना
भाव भाव रखना
भास भासना (मालूम होना)
भाह बफारा लेना
भिक्ख भीख मांगना
भिग भागना
भिग्ग भागजाना
भिज भेजना
भिड हाथापाई करना
भित नौकरी करना
भिंत कर्मचारी बनना
भिन्न जुदा होना
भिप पहिचानना
भिस्प लक्षण करना
भिश भाषण देना
भीम ललकारना, चुनौती देना
भुत चाकरी करना
भुन्न भनभनाना
भुर बदलजाना। (परिवर्तित-होना)
भुश दूसरे काम में आना
भून भूनना
भूस भूलना

भूह भ्रम होना
भेख भीख मगवाना
भेग भगाना
भेज भिजवाना
भेड हाथापाई कराना
भेत नौकरी कराना
भेप पहिचान कराना
भेश भाषण दिलाना
भोर बदलना, परिवर्तित करना
भोश दूसरे काम में लाना
भौंह भौंकना

म

मक्ख नायक बनना
मंक अञ्जलि करना
मंग उमंग उठना
मच्च सन्देह करना
मंच उदार बनना
मंज मंजूर करना
मज्ज प्रतिनिधित्व करना
मठ घमंड करना
मट्ठ शेखी मारना
मंड अन्वय करना
मड मुरझाना
मत मढ़ना
मंत मन्त्र पढ़ना
मथ मथना
मन संवेदन करना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन्न	स्वागत करना
मंप	इंजेक्शन करना
मम्म	विश्वप्रेमी बनना
मर	मरना
मंस	मांस बनना
मस्स	मसलना
माक	अपनाना
माच	सम्भावना करना
माज	सहयोग करना
माट	मटकना
माद	प्रमाद करना
मान	मनुष्य बनना, मनुष्यता-दिखाना
माफ	माफ करना
माय	मानना
मात्र	पद्य बनाना
माश	चर्चा के लिये मानलेना Suppose
मिंक	धातु बनना
मिक	बनना
मिक्क	सुधारना
मिच	भेंट देना
मिंच	त्याग करना
मिच्च	सहायता करना
मिज	याद करना
मिज्ज	याद रखना
मिंज	वात्सल्य दिखाना

मिट	मरजाना
मिंड	सिक्का बनाना
मिन्त	मंत्रित्व करना
मित्थ	कहकर बदलजाना
मिथ	झूठ बोलना
मिन्न	शील से रहना
मिप	मापना (पायली वगैरहसे)
मिप्प	गवाही देना
मिम	कुटुम्बी बनना
मिम्म	मूलरूप होना, मूलबनना
मिस	मित्रता करना
मिस्स	मीठा करना
मिंस	मुसकराना
मीन	शादी करना
मीप	प्रमाण देना
मीश	मिश्रण करना
मुक	निशाना मारना
मुंक	उद्योग कार्य करना
मुख	रुख करना
मुग	घटना
मुग्ग	हानि नुकसान होना
मुच	छूटना
मुच्च	स्वतंत्र होना
मुंच	छोड़ना
मुंज	गोदलेना
मुट	फिटहोना
मुंड	मुंडन करना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुड	मुड़ना
मुत्थ	मोथला होना
मुन्त	सेक्रेटरी बनना
मुन	सन्मानित होना
मुन्न	ध्यान लगाना
मुम	मूर्ति बनना
मुम्म	शिल्प कार्य करना
मुव	स्थानान्तरित होना
मुस	विपदा आना
मुह	मोहित होना
मूत	मूतना
मून	तिलक लगाना
मूम	शरीर बनना
मूर	आलस्य करना
मेक	बनाना
मेच	भेंट दिलाना
मेज	याद कराना
मेथ	झूठ बुलवाना
मेट	मार डालना
मेम	कुटुम्बी बनाना
मेस	मित्रता कराना
मैच	भेंट लेना
मैड	पागल होना
मोक	निशाना लगवाना
मोग	बटाना
मोच	छुड़ाना
मोट	फिट करना
मोड	मोडना
मोन	सन्मानित करना
मोम	मूर्ति बनाना
मोव	स्थानान्तरित करना
मोस	विपदा लाना
मोह	मोहित करना

य

यंग	जवान होना
यंच	चन्दा करना
यंज	संयोजन करना
यंत	मशीन चलाना
यत्त	पुर्जा बनना
यम्म	नियंत्रण करना
याग	जोड करना
याच	मांगना
याज	औद्योगिक काम की जगह बनना
याट	भटकना
यात	यात्रा करना
यान	सवार करके लेजाना
याम	कानून बनाना
याश	श्रद्धा करना
युग	मिलना
युग्ग	समाप्त करना
युंग	मिलाकर रखना
युज	सदस्य बनना
यूक	जुआ रखना
यूत	मशीनसे गति देना (मोटर)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यूज	आना जाना करना
यूश	दूकान लगाना
योग	मिलाना
योज	सदस्य बनाना

र

रंग	रंगना
रग्ग	स्याही लगाना
रच	रचना [ढंग से जमाना]
रंच	सामग्री जोड़ना
रद	विवाद करना
रंप	असर डालना
रब	रक्षण करना
रम	गुणरूपहोना
रम्ब	पालना
रस	दिशा देखना
रंस	कासनीरंग का होना
रह	उपाय निकालना
राख	भस्म होना
राग	खून बनना
राज	राजा बनना राज्य करना
रात	आतुर होना
राध	आराधना करना
रान	भाग्यवान होना
राफ	प्रतिस्पर्द्धा करना
राम	मर्यादा रखना
राह	राह चलना
रिग	धूल होना
रिच	पहुँचना
रिंच	प्रचार करना
रिंज	प्रभाव शाली होना
रिझ	रीझना
रिट	रटना
रिड	पढना
रिद्ध	ऋद्धिप्राप्त होना
रिन	बरसना
रिम	खेलना
रिप	ऋण देना
रिम्म	बच्चों की तरह खेलना
रिस	चखना-स्वाद लेना
रिस्स	स्वाद आना
रिंश	नारंगी रंगका होना
रिह	घर करना
रीन	बौछार पड़ना
रीव	पहरा देना
रीश	रस निकालना
रीह	रहना
रुक	रुकना
रुंक	अड़ना
रुग	बीमार होना
रुंग	व्यसन लगना
रुच	रुचना [अच्छा लगना]
रुंच	प्रोपेगेण्डा करना
रुज	शासित होना
रुंज	वेष लेना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रुंट	कषाय करना
रुंड	किसी कामकी योग्यता न होने परभी उसके योग्य होने का डोल करना
रुद्	रोना
रुंद्	आंसू बहाना
रुद्द	विलाप करना
रुँध	रुँधना, दम घुटना
रुप्प	ऋण लेना
रुब्ब	ऋण चुकाना
रुब्र	डांका पड़ना
रुम	बिलमना
रुंश	लाल होना
रुश	रिसाना
रुश्श	क्रोध करना
रूफ़	रिजर्व करा लेना
रूर	दुश्मनी करना
रेंग	धूल करना
रेंच	पहुंचाना
रेट	रटाना
रेड	पढ़ाना
रेन	बरसाना
रेप	ऋण दिलाना
रेंम	खिलाना
रेंस	चखाना
रेह	वर कराना
रैंग	रगड़ना
रैत	रेतना
रैप	रेपर करना
रोक	रोकना
रोग	बीमार करना
रोच	रुचिकर बनाना
रोज	शासन करना
रोद्	रुलाना
रोंध	रोंधना, दम घोंटना
रोब	डांका डालना
रोम	बिलमाना
रोश	खिजाना

ल

लक	एक तरफ देखना, एक दृष्टिकोण से विचारना
लक्क	टकटकी लगाना
लक्ख	दिखाई देना
लग	लगना
लंग	भ्रमण करना
लग्ग	प्रवृत्ति करना
लंघ	लांघना
लथ	लथड़ना
लब्ब	बदला चुकाना
लप	गप लड़ाना
लर्क	कुर्की करना
लव	प्यार करना
लम्ब	शरण लेना
लस	होना (होता है)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लह	कुतूहल होना
लाक	समय देखना
लाख	आकार धारण करना
लाट	बीड़ा देना
लाड	हांकना
लान	विनिमय करना अदला-बदली करना
लाफ	खिलना
लाभ	प्राप्त करना
लाम	ललचाना
लाय	टेलीफोन करना
लार	पत्र निकालना
लिंक	धार्मिक दृष्टिसे विश्व की व्याख्या करना, दार्शनिक विचार करना
लिग	गलना
लिच	लचकना
लिच्च	लचीला होना
लिज	लजाना
लिट	लेटना
लिंट	लुटाना
लिट्ट	लोटना
लिन	लीन होना
लिथ	लिथो कार्य करना
लिप	लिपना
लिर	लिखना
लिस	आदि होना
लिस्ट	लिस्ट बनाना
लिह	हल होना
लीड	नेतृत्व करना
लीम	लयलेना
लीर	पत्र लिखना
लुक	देखना
लुक्क	सूझना
लुंक	स्पष्ट करना
लुख	खुलना
लुंख	उकेलना
लुंग	उम्मेदवानी करना
लुग्ग	बाट देखना
लुच	अनुकरण करना
लुट	लापीटना
लुट्ट	रूढि रिवाज पालना
लुंट	लूटना
लुड	लढ़जाना
लुथ	लोथ बनना
लुन	हारकर शरण लेना
लुप	मिटना
लुम्ब	लाभ होना
लुंभ	नफा होना
लुर	लढ़ना
लुस	अन्त होना
लूभ	लोभ करना
लूव	पुराना होना
लर	झगड़ना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेग	गलाना
लेच	लचकाना
लेज	लज्जित करना
लेट	लेटाना
लेन	लीन करना
लेप	लीपना
लेर	लिखाना
लेस	आदि पाना
लेह	हल करना
लैग	रोपना
लैद	प्रस्ताव करना
लोक	दिखाना
लोख	खोलना
लोच	अनुकरण कराना
लोट	लपटेना
लोड	लाद देना
लोथ	लोथ कर देना
लोन	हराकर शरण देना
लोप	मिटाना
लोर	लड़ाना
लोस	अन्नपाना
लौग	ताला लगाना
लौच	उकेलना
लाभ	लुभाना
लॉस	खोना

व

वक्क	लंगडाना
वठ	अकेला रहना
वद	चर्चा करना
वर	वरण करना
वाक	चलना
वाच	विवेचन करना
वाट	रस्सी आदि बटना
वाद	सिद्धान्त बनाना
वास	बसना
विक्क	चलन में आना
विंक	पलक मारना
विंज	नाल काटना
विंद	गौण बनना
विद	नहाना
विन	हवा चलना
विव	लहराना
विंब	झोंका खाना
विर	पूर्त्ति होना
विश	प्रवेश करना
विंश	ढीला होना
वीत	बीतना
वीन	वायु के समान होना
वीब	झूलना
वुक	कमजोर होना
वुंक	अक्ष भ्रमण के साथ प्रदक्षिणा करना
वुश	साफ होना
वेद	नहलाना
वेन	हवा करना [हवा चलाना]

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वेर	पूर्त्ति करना	शिड	शिकार करना
वेव	लहर पैदा करना	शित	ठंड होना
वेश	प्रवेश कराना	शिथ	शिथिल होना
वोक	कमजोर करना	शिद	सिद्ध होना
वोश	साफ करना	शिन	वेतन लेना
	श	शिम्म	सुखी होना
शंक	शंका करना	शिह	श्रम करना
शड्ड	छेदकर सीना	शीप	नौका आदि बनना
शंज	संस्था बनना	शीम	जातीय दृष्टि से समान-होना
शंत	साधु बनना, निस्वार्थ-सेवा करना	शीर	शुरू करना
शत्त	समन्वय करना	शुंक	ईमानदार रहना
शम	शान्त होना	शुंग	कम्पनी बनाना
शर्त	शर्त करना	शुंच	सन्यास लेना
शंश	कद्र करना	शुच	पवित्र होना
शाक	शोक करना	शुंज	आश्रय लेना
शाग	गुणा करना	शुत्त	सूत्र बनाना
शाट	सपाट होना	शुंद	विश्राम करना
शाड	सीना	शुभ	शोभित होना
शान	प्रतिबिम्बत करना	शूक	खेद होना
शार	सार निकालना	शूट	गोली चलाना
शास	शिष्य बनना	शून	सावधान होना
शाह	मालिक बनना	शूर	वीरता दिखाना
शिक	आधा होना	शूह	अध्यक्ष बनना
शिज	सजना	शेक	आधा करना
शिंज	शृंगार करना	शेज	सजाना
शिट्ट	फर्नीचर बनाना	शेत	ठंडा करना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शेथ	शिथिल करना
शेद	सिद्ध करना
शेन	वेतन देना
शेम्म	सुखी करना
शेह	मिहनत कराना
शैम	राष्ट्र बनाना
शोंच	पवित्र करना
शोंज	आश्रय देना
शोभ	शोभित करना
शोक	खेद प्रगट करना

स

सक	संकोच करना
संग	साथ करना
सग्ग	लक्षणा करना
संच	संचय करना
सट	समटेना
सत	अच्छा होना (भला होना)
सत्य	विश्वकल्याणमय होना
सद	पर्दा करना
सन्त	सभ्यता बताना
सन्द	सन्देश देना
सन	पटरीपर चलना
सन्न	सकरा करना
सप	विलेपन करना
सफ	लाईन लगाना
सम्म	समान या बराबर होना
सर	बेलना
सर्र	सरकना
सस	जगह होना
संस	प्रशंसा करना — तारीफ करना
साच	सघन होना
सात	विश्वकल्याणमय होना
साध	साधना करना
साम	शाला बनना
साव	सेवा करना
सिक	दीक्षा लेना
सिंक	सलाह करना
सिख	सीखना
सिंग	साझा करना
सिच	सिचना
सिंट	आसन लगाना।
सिट	बैठना
सिंड	बिगड़ना
सिड्ड	सड़ना
सिन्न	पेन्शन मिलना
सिप	मालिश करना
सिम	तुलना
सिर	चिकना होना
सिर्फ	अपेक्षा से कम होना
सिस्स	सिसकना
सीन	पाना
सीस	समाना
सुक	सूखना
सुंख	सुखी होना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुग्ग	सीधा होना
सुघ	सूंघना
सुज	सूजना
सुट	उठना
सुंद	भाडा देना
सुन	सुनना
सुप	सोना
सुर	गुरु बनना
सुव	अधिक होना
सुह	अध्यक्षता करना
सूच	सूचना देना
सूत	देव या फरिश्ता बनना
सूय	सुगंध आना
सेक	दीक्षा देना
सेख	सिखाना
सेच	सींचना
सेट	बैठाना
सेंड	बिगाड़ना
सेप	मालिश कराना
सेम	तौलना
सेर	चिकना करना
सैंध	सेंध लगाना
सोक	सुखाना
सोज	सुजा देना
सोट	उठाना
सोंद	भाड़ा लेना
सोन	सुनाना
सोप	सुलाना
सोर	गुरु बनाना
सोव	अधिक करना
सोह	किंग मेकर बनना
सौंग	ताला खोलना
सौंप	सौंपना
सौव	सुहाना
सौंम	विशेष होना

ह

हंक	पूर्ण होना
हंग	हस्ताक्षर करना
हज्ज	हाजिर होना
हंज	तुक मिलाना
हद	सीमा बांधना
हश	विनोद करना
हंद	पर्वाह करना
हप्प	शोषण करना
हंस	फूल आना
हाख	तड़पना
हाज	व्यवहार करना, (शिष्टाचार निभाना
हाद	देश मानना, देश की सीमा बनाना
हान	मायामय होना
हाम	गुदगुदाना
हास	मुसकराना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हाई	जमुहाना
हिच्च	हिचकना
हिज	घबराना
हिंड	बन्द करना
हिड	छिपना
हिन्त	मोर्चा बनाना
हिम्म	साहस करना
हिर	खोजना
हिंस	मांस आदि खाना
हिस	हँसना
हीड	ओट लेना
हीम	चुनौती देना
हीर	अन्वेषण करना
हीस	खिलखिलाना [अट्टहास्य]
हीश	गुलाबी होना
हीह	मजदूरीकरना [शरीर से]
हुक	झोंका खाना
हुंक	प्रतिकार करना
हुंग	कार्रवाई करना
हुच्च	हिचकी आना
हुच	उखड़ना
हुंच	व्यायाम करना
हुज्ज	हिज्जे करना
हुट	खड़ा होना
हुंठ	ठेलना
हुड	हटना
हुंड	हुंडी करना
हुन	जोर लगाना
हुम्प	आन्दोलन करना
हुर	सुडौल होना
हुश	होश में आना
हुंस	हँसी करना
हुस्स	हँसी उड़ाना
हूम	शर्त करना
हूज	ब्यौरा देना
हूर	सुन्दर होना
हेज	घबरा देना
हेड	छिपाना
हेर	खोज करना
हेस	हँसाना
हैद	हांपना
होच	उखाड़ना
होट	खड़ा करना
होड	हटाना
होन	जोर लगवाना
होम्प	आन्दोलन कराना
होर	सुडौल बनाना
होश	होश में लाना
हौस	मैदान बनना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हिन्दी से मानवभाषा

अ	
अकड़ना	अंट
अकस्मात् होना	झप्प
अकेला रहना	चठ
अक्ष भ्रमण करना	चुंक
अक्षभ्रमणके साथ-प्रदक्षिणा करना	बुंक
अखरना	अख
अंक बनाना	गनि
अंग बनना	अंग
अच्छा होना	सत
अचरज करना	दिग
अचरज कराना	देग
अंजलि करना	मंक
अनिवार्य होना	जर
अटकना	गुट
अटकाना	गोट
अँटना-समाजाना	गुंट
अंडादेना	इडु
अड़ना	रुंक
अणुरूप होना	नह
अतिथि बनना	पाह
अर्थकरना	आग
अंदाज बाँधना	कौत
अधिक करना	सोव
अधिक होना	सुव
अध्यक्ष बनना	शूह
अंधेरा करना	थांप
अंधेरा होना	घुप, घूप
अध्यक्षता करना	सुह
अनुकरण करना	लुच
अनुकरण करना	लोच
अनुभव करना	इद
अनुभव कराना	एद
अनुमति देना	ओन
अनुमति लेना	उन
अनुमान करना	डाम
अनुमोदन करना	औन
अनुवाद करना	आच
अनुसरण करना	टिस्स
अन्त पाना	लोस
अंत होना	लुप
अन्तर पड़ना	दूर
अन्वेषण करना	हीर
अन्वय करना	मंड
अपनाना	अम्म
अपलाप करना	मित्थ
अपेक्षा से कम होना	सिर्फ
अपेक्षा करना	टख
अभिसार करना	उंथ
अभिधा करना	अगग
अभ्यास करना	अंज
अमलमें आना	कुब
अर्थ करना	आग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अमल में लाना	कोब
अलग करना	आक
अवसर पाना	चंस
अवस्था होना	जिज्ज
अवनति होना	नूश
अंश बनना	अंश
असर डालना	रंप
असंयमको अज्ञान-बतानेका छलकरना	गून

आ

आकर्षण करना	नुम्म
आकार धारण करना.	अंच
आकाशवाणी करना	गुंग
आक्रमण करना	फिंस
आक्रमण कराना	फैंस
आग्रह करना	टम्म
आचरण करना	नर
आज्ञा देना	जुंग
आज्ञा मनवाना	जोग
आज्ञा मानना	जुग
आतंक छाजाना	डांड
आतंक छादेना	डैड
आतिथ्य करना	पिह
आतिथ्य कराना	पेह
आतुर होना	रात
आदत होना	कंज
आदर्श बनना	चाम
आदि पाना	लेस
आदि होना	लिस
आधार बनना	देय
आधा करना	शेक
आधा होना	शिक
आंधी चलना	फूम
आनन्द करना	नन्द
आना	इन्न
आन्दोलन करना	हुम्प
आन्दोलन कराना	होम्प
आराधना करना	राध
आलस्य करना	मूर
आलिंगन करना	भाम
आशय बनना	उंघ
आशा करना	आश
आश्रय लेना	शुंज
आश्रय देना	शोंज
आसन लगाना	सिंट
आसमानी रंग होना	गिम्म
आंसू बहाना	रुंद
आहें भरना	आह

इ

इकट्ठा करना	ओघ
इकट्ठा होना	उघ
इकाई बनना	कीन
इंजेक्शन देना	मस्प
इठलाना	ईंठ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इतराज होना	नग
इनाम देना	जूम
इन्द्रियों से जानना	इन्द
इलाज करना	थिच
इलाज कराना (अपना	थाच
इलाज कराना (दूसरेका)	थेच
इशारा करना	इंत
ईश्वर होना	एश
ईर्ष्या करना	डाह
ईमानदार रहना	शुंक

उ

उकेलना	लुंख
उखाड़ना	नुग्ग
उगना	उग
उगलना	नैंक
उगाना	ओग
उगाहना	टब्ब
उघड़ना	फाश
उचितहोना	धिख
उच्चारण करना	इक
उछलना	उछ
उजड़ना	खीर
उजेला करना	पेम
उजेला होना	पिम
उठना	सुट
उठाना	सोंट
उड़ना	फुर (पंखों से)
	फिर (बिना पंखों के)
उड़ाना	फोर (पंखों से)
	फेर (बिना पंखों के)
उड़ावनी करना	फूरुर
उत्तर देना	उंड
उत्सुक होना	ईंत
उतरना	उव
उतारना	ओव
उत्तेजित करना	टोर
उत्तेजित होना	ठुर
उत्सव मनाना	होनन्द
उत्साहित करना	जोश
उत्साहित होना	जुश
उदय होना	ऊग
उदार बनना	मंच
उदासीन होना	निंत
उद्देश बनाना—	नीम, लोनीम
उद्धार करना	तार
उद्योग कार्य करना	मुंक
उन्नति होना	तीम
उपकार करना	भत्त
उपदेश दिलाना	देश
उपदेश देना	दिश
उपमा देना	ऊर
उद्योग में आना	उश
उपयोग में आना (दूसरे ढंगसे)	भुश

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उपयोग में लाना	ओश
उपयोग में लाना (दूसरे ढंगसे)	भोश
उपवास करना	नीट
उपसंहार करना	सोसट
उपाय निकालना	रह
उपादान बनना	तीत
उपेक्षा करना	खट
उबलना	बुब
उबालना	बोब
उम्मेदवारी करना	लुंग
उलझना	डिज
उलझाना	डेज
उलटना	उल्ट
उलीचना	गत
उल्टी करना	औक
उसकराना	डोग
उसकाना	डुग
ऊंघना	लंसुप
ऊंचा होना	तिब
ऊधम करना	रंछिम
ऊबना	उब्ब

ऋ

ऋण चुकाना	रुस
ऋण देना	रिप
ऋण दिलाना	रेप
ऋण लेना	रुप्प
ऋद्धि प्राप्त होना	रिद्ध

ए-ऐ

एक तरफ देखना	लक
एड मारना	आड
एनीमा देना	गम्प
ऐंठना	ऐंठ

ओ-औ

ओट में करना	ढेक
ओट में होना	ढिक
ओट लेना	हीड
ओंठ बजाना	पब
ओढ़ना	जिर
ओढाना	जेर
ओले बरसना	तड
ओस पड़ना	झाम
औद्योगिक काम की जगह बनना	याज
औंधा करना	ओंध
औंधा होना	उंध
औषध देना	दूब
औसत निकलना	नप

क

कंघा करना	कंग
कचरा करना	गोक
कचरा होना	गुक
कटना	किट
कठिन होना	खिड
कठोर करना	खोड
कठोर होना	खुड

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कड़ुआ होना	कड्डु
कतरना	कत्त
कत्थिया रंग का होना	कत्थ
कथा करना	कीह
कद्द करना	शंश
कंघा आदि लगाना	ढान
कपड़े धारण करना	जीर
कँपना	थड
कपड़े पहिनना	भीर
कफ बनना	खिंच
कमजोर करना	वोक
कमजोर होना	वुक
कम करना	नोव
कम होना	नुव
कमाना	अर्न
कम्पोज करना	टुप्प
कम्पनी बनाना	शुंग
करण बनना	जेय
करना	कुर
कराना	कोर
कर लगाना	कार
कराहना	ऊँह
कर्तव्यकरना	लंभत्त,
कर्मचारी बनना	भिंत। भिंतो ड्यूटी
कला कार्य करना	चन्न
कल्पना करना	फुंड
कविता करना	भाय

कषाय करना	रंट
कसना	कस
कसम खाना	खुह
कसम खिलाना	खोह
कसायला होना	कुड्ड
कहना	किह
कहाना	केह
काटखाना	कट्ट
काटना	केट
कातना	कात
कानून बनाना	याम
काम करना [उपयोगी]	कज्ज।
कामधंधा करना (आरंभ)	कज
काम पुरुषार्थ सेवनकरना	चिंग
कायर होना	ढिर्र
कारीगरी करना	चान
कार्यालय बनना	श्राज
कार्रवाई करना	हुंग
काला होना	धुम्प
कासनी रंग का होना	रंस
किनारी निकालना	चंच
किरण फेंकना	चिम्म
किला बनाना	ढैम
कीचड़ करना	खेच
कीचड़ होना	खिच
कीमत लगाना	जिंश
कुचलना	फ़िच्च

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुटाना	ठोक
कुटुम्बी बनना	मिम
कुटुम्बी बनाना	मेम
कुड़कुड़ाना	कूड
कुतूहल होना	लह
कुदाना	कोद
कुल्ला करना	ग्रुंक
कुहरा छाना	झास
कूटना	ठुक
कूदना	कुद
केन्द्रबनना	किन्द
केशरिया रंग का होना	हूरुंश
कोड़ा मारना	वंत
कोण बनना	कुन्न
कोशिश करना	वट
क्रम बनाना	पद
क्रिया होना	आत
क्रूर होना	डिट्र
क्रोध करना	रुइग
कुर्की करना	लर्क
क्षार निकालना	खर
क्षीण होना	नुस्स
क्षुब्धहोना	हूबाड

ख

खखारना	खख
खट्टाहोना	खीट
खड़ा करना	होट
खड़ा होना	हुट
खंभा खडा करना	खंभ
खरीदना	जिश
खरीदवाना	जेश
खरोंचना	खुच्च
खर्चकरना	जेह
खर्च होना	जिह
खाकीरंग का होना	फूपीद
खात डालना	खात
खाना	स्वाद
खारा होना	खार
खाली करना	खेर
खाली होना	खिर
खासना	खस
खिंचना	खुम
खिजाना	गेश
खिलखिलाना	ढीस
खिलना	लाफ
खिसकना	खिस्स
खींचना	खोम
खुजली आना	खज
खुजवाना	खेज
खुजाना	खिज
खुदना	डिग
खुरोचना	खुंच
खुलना	लुख
खुशकरना	खोश

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खुश होना	खुश
खून बनना	राग
खेती करना	अन्न
खेद प्रगट करना	शौक्र
खेद होना	शूक
खेना (नौका आदि	छप्प
खेलना	रिम
खेलना (बच्चों की तरह)	रिम्म
खेलाना	रेम
खोदना	डेग
खोलना	लांख

ग

गतिमान करना	एप
गतिमान होना	इप
गंध आना	ऊग्र
गठना	गंठ
गड़ना	उक्र
गद्यबनाना	ताम
गप उड़ाना	गप
गप लड़ाना	लप
गरजना	नद
गर्भ धारण कराना	बंप
गर्भ रहना	गभ
गर्मकरना	तेप
गर्महोना	तप
गलतियों का समर्थन करना	कुंट
गलना	लिग
गलाना	लेग
गवाना	गेम
गवाही देना	ढिप्प
गहना पहिनना	इंज
गहरा करना	डेक
गहरा होना	डिक
गाना	गीम
गाढ़ा होना	थिक
गालीदेना	ट्रुप
गाला दिलाना	ट्रोप
गांठ बांधना	बिंध
गिड़गिड़ाना	नुँह
गिनना	गिन
गिरना	गिर
गिरफ्तार करना	जंट
गिराना	गेर
गींजना	गींज
गीतबनाना	चीम
गुच्छा बनाना	डिंज
गुंजाइश होना	होसीम
गुंजाना	ऑंग
गुण रूप होना	रम
गुणा करना	शाक
गुदा साफ करना	धुंब
गुमजाना	गुप

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

गुमाना	गोप
गुरु बनना	सुर
गुरु बनाना	सोर
गुलामी करना	दास
गुलाबी होना	ढीश
गूंजना	डंग
गूंथना (माला वगैरह	गुंफ
गूंथना [भरत काम आदि]	गूंथ
गेंद बनना	ग्रुंग
गोद लेना	गुंज
गोल होना (गाय रुण)	गंच
गोल होना [थाली की तरह]	गिंच
गोल होना [गेंद की तरह]	गुंच
गोली बनना	गुच
गोली बनाना	गोच
गोली मारना	शूट
गौण बनना	थिंद
गौरव रखना	पंज
ग्रंथ बनाना	गंथ

घ

घटना	मुग
घटाना	मोग
घंटा बजना	टिन
घंटा बजाना	टेन
घड़ी करना	सोलोट
घड़े सरीखा बनना	कुम्भ
घनरूप होना	जूक
घन की चोट करना	घन
घबराना	हिज
घबरादेना	हेज
घमंड करना	मठ
घर करना	रिह
घर कराना	रेह
घायलकरना	घोव
घायल होना	घुव
घाव होना	घाव
घिसजाना	घिस
घिसना	घेस
घिरना	घिर
घुटना	घुट
घुलना	घुर
घुसना	घुप
घुसेड़ना	घोस
घूरना	ग्लुक
घृणाकरना	डस्स
घृणित होना	डाट
घेरना	घेर
घोंटना	घोट
घोलना	घोर

च

चक्र गति करना	चक्क
चखना	रिस
चटकना	चट्ट
चढ़ना	इव

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चढ़ाना	पुत्र
चकराना-चक्करखाना	घूम
चतुराई करना	चन्त
चन्दा करना	यंच
चबाना	चाब
चमकना	चम
चरना	चर
चर्चा करना	वद
चर्या बनाना	पड्ड
चलन में आना	विक्क
चलना	चाक
चहकना	चह
चहलकदमी करना	पाद
चाकरी करना	भुत
चाटना	चाट
चालाकी करना	चुन्त
चाहना	इश
चिकना करना	सेर
चिकना होना	सिर
चिकित्सा करना	थिच
चिकित्सा कराना	थेच
चित्रकारी करना	चित्त
चिन्ह लगना	छित्र
चिन्ह लगाना	छेत्र
चिपकना	चिप
चिपकाना	चेप
चिपटना	चिम्प

चिल्लाना	टर्र
चीत्कार करना	टीर
चीथना	चीथ
चीरना	चिर्र
चीरा लगाना	चीर
चुगना	चुग
चुगाना	चोग
चुगली करना	चार
चुटकी बजाना	चौंट
चुटकी लेना	चुंट
चुनाव करना	चून
चुनौती देना	हीम
चुप करना	चोप
चुप होना	चुप
चुभना	चुभ
चुभाना	चोभ
चुल्लू से उलीचना	वेगत
चुस्त होना	धुंस
चूकना	चुक्क
चूड़ीकी तरह गोलहोना	गंक
चूमना	चूम
चूर्ण करना	चूर
चूसना	चोस
चूसाजाना	चुस
चेतना होना	इम्प
चेष्टा करना	जिच्च
चौंकना	धुक्क

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चोट करना	चोट
चोट खाना	चुट
चोटी रखना	कंच
चोरी करना	चुर
चोरी कराना	चोर
चौक पूरना	फूचाक
चौखटा बनाना	चाक
चौड़ा करना	थोन
चौड़ा होना	थुन
चौंधयाना	चौंध

छ

छक जाना (तृप्त होना)	चिक
छटनी करना	शोनेक
छत तानना	छद
छत बनाना	छद्
छन्द बनाना	तिम
छपवाना	पेंट
छलना	चिंठ
छानना	छान
छाना	छाद
छापना	पिंट
छाप मारना	पाट
छाया करना	छोव
छाया होना	छुव
छिटकना	छिट
छिदना	छिद
छिनकना	छीक
छिनना	छिन
छिपना	हिड
छिपाना	हेड
छिलना	निग
छींकना	छिंक
छीनना	छेनं
छीलना	नेग
छुड़ाना	मोच
छुआछूत मानना	ढश
छूटना	मुच
छूना	टच
छेड़ना	छाड
छेदना	छेद
छेदकर सीना	शड्ड
छौंकना	छौंक
छोटा बनना	नाह
छोड़ना	मुंच

ज

जगना	जिग
जगाना	जेग
जंग लगना	दूह
जचना	जच
जड़जाना	खुच
जड़ देना	खोच
जड़रूप होना	उम्प
जपना	जप
जमजाना	जम
जमाना	जम्म

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जमुहाना	हाह
जरूरी होना	जाज
जलना	दिह
जलाना	देह
जातिकी अपेक्षा समान होना	शीम
जवान होना	यंग
जातिपांति मानना	ज्ञत्त
जादू करना	जंद
जानकारी करना	जान
जाँच करना	दिज्ज
जाना	उन्न
जाल डालना	फुंस
जिलाना	जेव
जिला बनाना	जक
जिल्द बांधना	टाब
जीतना	जय
जीन आदि कसना	कस्स
जीना	जिव
जीविका करना	काज
जुआ रखना	यूक
जुगाली करना	पाच
जुदा होना	भिन्न
जुरमाना करना	डाच
जूआ खेलना	जूथ
जूठा करना	जूठ
जूड़ा बांधना	जूड़
जूता आदि पहिनना	जूत
जोड़ना	याग
जोतना	थाप
जोर लगवाना	होन
जोर लगाना	हुन
ज्ञाता होना	इंग
ज्वार आना (समुद्र में)	घाड

झ

झकोरना	झार
झगड़ना	लूर
झडजाना	झड
झपकी लगना	त्रेसुप
झपट्टा मारना	झुप्प
झरना	झिर
झराना	झेर
झलकना	झक
झांकना	झांक
झाग उठना	झाग
झाड़ना	फट
झाड़फूक करना	फंट
झिड़कना	झीड
झिलमिलाना	झुम्म
झुकना	निव
झुकाना	नेव
झुलसना	दाह
झूठ बुलवाना	मेथ
झूठ बोलना	मिथ
झूमना	बाग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

झूलना	वीब
झूलना	झ्व
झोंकना	झोंक
झोकाखाना	हुक
झोंकाजाना	झुक

ट

टकराना	टक
टकटकी लगाना	लक्क
टक्करलेना	टक्क
टटोलना	टाट
टपकना (चूना)	टप्प
टहलना	टाह
टाइपबनाना	टूप
टाइप करना	टुप्प
टालना	टाज
टिकना [स्थिररहना]	थिर
टिकाना	थेर
टिकिट कटाना	तिद्
टिमटिमाना	झेन
टीका करना	टाग
टुकड़े करना	पीश
टूटना	टट
टेड़ा होना	कुग्ग
टेलीफोन करना	लाय
टोपी आदि ओढना	कैप

ठ

ठगना	चीट
ठंडा करना	शेत
ठंडा होना	शित
ठनकना	ठन्न
ठप्पे मारना	छाप
ठसक बताना	ठाठ
ठहरना [होटलमें]	टूह
ठहरना	टिह
ठहराना	टेह
ठहराव करना	टार्स
ठानना	ठान
ठासना	ठार्स
ठिठकना	ठाक
ठिठुरना	ठक
ठीक करना	टाम
ठुस्सा मारना	ठुस्स
ठेका लेना	ठाप
ठेलना	ठुंठ
ठोकना	ठुक्क
ठोकर मारना	ठक्क
ठोस होना	खूड

ड

डंकमारना	डंक
डब्बा—बनना	डब्ब
डरना	डिड
डराना	डेड

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

डलवाना	थेप
डसना	डस
डसकर खून आदि चूसना	डंस
डांक बटना	डिप
डांक बटवाना	डेप
डांका डालना	रोब
डांका पड़ना	रुब
डाटना	डाट
डालना	थिप
डिक्टेट कराना	सोलेर
डिगना	डग्ग
डिंडोरा पीटना	दिंद
डुपकी लगाना	डप
डुबाना	डोप
डूबना	डुप

ढ

ढकना	ढक
ढकेलना (धक्कादेना)	ठाह
ढलना (एक ओर झुकना)	टिब
ढहना	ढह
ढालदेना (एक ओर झुकाना)	टेब
ढाल करना	ऊब
ढालना	ढाम
ढीलदेना	ढीर
ढीला होना	विंश
ढुंढवाना	हेर
ढुलाना	ढोन
ढूंढना	हिर
ढेर लगाना	चय
ढोना	ढुन

त

तंग करना	तंग
तड़कना	तग्ग
तड़पना	हाख
तंत्र बनाना	तंत
तन्मय होना	ईर
तप कराना	तोप
तप करना	तुप
तमाचा मारना	छंट
तरल होना	पित्त
तरीका निकालना	चंट
तर्क करना	डम्म
तलना	छुन्न
तल बनाना	कान
तह करना	तिह
तह कराना	तेह
ताकना	तक्क
ताकतवर बनना	टुंग
तागना	ताग
तापना	ताप
तार करना [टेली.]	काड
तार खींचना	नंक
तारीफ करना	संस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ताला खोलना	सौग
ताला लगाना	लौग
ताश खेलना	ताश
तिरस्कार करना	छट
तिलक लगाना	मून
तिलमिलाना	झूम
तीखा होना	चूभ
तीर चलाना	गज
तीर्थ [धर्म] बनाना	भन्त
तुक मिलाना	हंज
तुच्छ होना	कीत
तुलना	सिम
तृप्त करना	चेक
तूफान आना	फूम
तैयार करना	एच
तैयार होना	इच
तैरना	तीर
तोडना	टोट
तोडाजाना	टुट
तौलना	सेम
त्याग करना	मिंच
त्यौहार मनाना	हूनंद

थ

थकना	धिस
थकाना	धेस
थाह लेना	थाह
थूकना	पिच्च

द

दंगा करना	लंघात
दंड देना	डेच
दंडित होना	डिच
दतवन करना	तुंश
दबना	दिब
दबा देना	देब
दमन करना	डूच
दया करना	दय
दर्जा बनाना	डिंक
दरार डालना	गेप
दरार-पड़ना	गिप
दर्द होना	इह
दर्शन करना	दीर
दर्शन बनाना धार्मिक दृष्टिसे विश्वकी व्याख्या करना	लिंक
दलना	दर
दलाली करना	झुंश
दस्त लगना	छूर
दान करना	दान
दिखाई देना	लक्ख
दिखाना	लोक
दिग्दर्शन करना	शौर
दिया जलाना	दिम्प
दिलाना	गेव
दिवाला निकालना	चुर्ं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिशामें होना	रस	**ध**	
दीन बनना	नूह	धक्का देना	धक्क
दीक्षा लेना	सिक	धड़कना	धक
दीक्षा देना	सेक	धंधा करना	कुज
दुःखी होना	दुख, दुक्ख	धंधा कराना	कोज
दुःखी करना	दोख	धन बनना	धन
दुतकारना	ढास	धनुषाकार बनना	निब्व
दुश्मनी करना	रूर	धन्यवाद देना	धन्न
दुहाई देना	खूंह	धमकाना	थुप्प
दुहना	छार	धर्म करना	धर्म
दूकान लगाना	यूश	धर्मस्थान बनाना	धम्म
दूत बनना	दूत	धरना देना	धाच
दूध पिलाना (स्तनों से)	छीर	धातु बनना	मिंक
दूर करना	दोर	धारण करना	धर
दूर होना	दुर	धार बनना	फर
दूषित करना	डोश	धीमा करना	धेम
दूषित होना	डुश	धीमा होना	धिम
दृष्टान्त देना	डिम्म	धीरज रखना	धिर
देखना	लुक	धीरज देना	धेर
देना	गिव	धुँआ करना	धोग
देव या फरिश्ता की तरह–		धुँआ होना	धुग
पवित्र बनना; देवरूपहोना	सूत	धुँवा पीना	धंग
दौड़ना	रन	धुनकना	तुन्न
दौरा करना	टार	धुलना	धुव
द्वेष करना	दूश	धूप पड़ना	पिम्म
द्रोह करना	दोश	धूल उड़ाना	फड
द्वीप बनना	घीर	धूल बनना	रिग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धूल बनाना	रेग
धृष्ठता करना	ढीट
धोना	धोव
ध्वनि होना	ईंग
ध्यान लगाना	मुन्न
ध्येय बनाना	नीम

न

नकल करना	नट्ट
नंगा करना	नेंग
नंगा होना	निंग
नचना (घुंघरू आदिकी आवाज-की प्रधानता)	छिम
नचाना ,,	छेम
नजर रखना	तक्क
नजर लगना	तिक
नजर लगाना	तेक
नपना	नुप
नापना	नोप
नपुंसक करना	खेस
नपुंसक होना	खिस
नफा होना	लुंभ
नमूना बनाना	डीम
नम्बर लगना	पिज
नम्बर लगाना	पेंज
नया करना	नूय
नरम होना	फाह
नशा करना	नुंस
नहलाना	वेद
नहाना	विद
नांगरना	द्राप
नाथना	नाथ
नाटक करना	नट
नारंगी रंग का होना	रिंश
नापना	निप
नाम फैलना	होनाम
नाममें महत्ता आना	सोनाम
नामलेना	नाम
नायक बनना	इम्म
नावखेना	नाव
नाल काटना	विंज
नालिश करना	नीश
नाली निकालना	बाह
नाश करना	नोस
नाश होना	नुस
निकट आना	पुट
निकट करना	पोट
निकलना	निक
निकालना	नेक
निगलना	गार
निचुड़ना	निच
निचोडना	नेच
निछावर करना	दक्ष
निन्दा होना	धाए
निन्दा करना	धुप

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निन्दा कराना	धोप
निभना	निभ
निभाना	नेभ
निमित्त बनना	जैंज
नियम बनाना	निम्म
नियंत्रण करना	यम्म
नियुक्त करना	नेत
नियुक्त होना	नित
निरीक्षण करना	दिंज
निर्देश करना	फूजुंग
निर्वाह करना	नाह
निशाना लगना	मुक
निशाना लगाना	मोक
निश्चित करना	नैस
निश्चित होना	निस
नीचा होना	थुम्ब
नीलाम करना	बाफ
नीलाममें बोली बोलना	बैफ
नीला होना	धीम
नीव डालना	नाग
नुकीला होना	नुंक
नुचना	नुच
नृत्यकरना [भावप्रदर्शनके साथ]	नेच
नेग देना	नात
नेतृत्व करना	लीड
नेवता करना	श्रान
नोंचना	नोच
नोंध करना	नुट
नोंध कराना	नोट
नौकरी करना	भित
नौकरी कराना	भेत
नौका आदि बनना	शीप
न्याय करना	डंक

प

पकड़ना	जाट
पंक्ति बनाना	दिक
पकना	पिक
पकाना	पेक
पक्षपात करना	टिप्प
पक्ष में होना	टीब
पखारना	पुंछ
पगना	डिन
पचना	पच
पंचायत करना	जुर
पंचायत कराना	जोर
पच्चर मारना	पच्च
पछताना	सौंर
पछाड़ना	धाड़
पटरी (रेल आदि की) बिछाना	सन
पटिया बनना	पट्ट
पड़ाव डालना	पाड
पढ़ना	रिड
पढ़ाना	रेड
पतला करना	थेन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पतला होना	थिन	पलटना	ठच
पता होना	पात	पवित्र करना	शोच
पत्ते आना	पत्त	पवित्र होना	शुच
पत्र निकालना	लार	पसीना आना	निच्च
पत्र लिखना	लीर	पहरा देना	रीब
पद पाना	पम्म	पहलू पाड़ना	कन्न
पद्धति बनाना	चंक	पहिचानना	भिप
पद्य बनाना	तीम	पहिचान कराना	भेप
पनपना	पाग	पहिनना	बीर
पपडी आना	पप्प	पहुँचना	रिच
पम्प मारना	पंप	पहुँचाना	रेच
परखना	दिंच	पागना	डेन
परिक्रमा करना	गिंक	पागल होना	मैड
परिचय करना	चिव	पाटना	पंट
परिचय कराना	चेव	पाथना	थप्प
परिचर्या करना	चिस	पादना	पर्र
परिचर्या कराना (दूसरेकी)	चेस	पाना	सीन
परिचर्या कराना (अपनी)	चास	पाप करना	पाप
परिपूर्ण होना	पूम	पाप से शर्मिन्दा न होकर-उसकी वकालत करना	रंगूत
परीक्षा देना	दिज	पारदर्शक होना	कांच
परीक्षा लेना	देज	पार होना	पार
परोसना	पैश	पालना	रंब
परेशान या विवश होना	तुद	पाला पड़ना	झाह
परेशान या विवश करना	तोद	पालिश करना	पोत्त
पर्दा घूंघट करना	घुंघ	पालिश होना	पुत्त
पर्वाह करना	हंद	पासंग करना	लूसेम
पलक मारना	विंक		

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाससे निकलना	पास	पुष्ट होना	पुश
पिघलना	पिंग	पुसाना	हूफीश
पिघलाना	पेंग	पूछना	पिछ
पिचकारी मारना	फग	पूजना	पोज
पिंजडे आदि में बन्द होना	किज	पूरना	पूर
पिंजडे आदिमें बन्द करना	केज	पूर्त्ति करना	वेर
पिटना	विट	पूर्त्ति होना	विर
पिंड बनाना	पिंड	पूर्ण होना	हंक
पित्त भड़कना	डीह	पृथ्वीरूप होना	जाम
पिरोना	डार	पलना	नुंच
पिलाना	पेत	पैदल चलना	पाद
पीछे चलना	डुम	पेन्शन मिलना	सिन्न
पीछे चलाना	दोम	पैदा करना	जेज
पीटना	बेट	पैदा होना	जिज
पीना	पित	पैर चलाना	पाय
पीला होना	पीद	पैना करना	किंट । किंटो–धार
पीसना	गरं	पैसा कमाना	गिंग
पुकारना	टेर	पोछना	पुछ
पुचकारना	पुच्च	पोछवाना	पोंछ
पुजना	पुज	पोतना	पोत
पुछवाना	पेछ	पोर बनाना	पिंश
पुण्य करना	पुन्न	पोला करना	ढोब
पुतना	पुत	पोला होना	डुब
पुराना बनना	लूव	पोसना	जाग
पुरुषार्थ करना	वीट	प्यास लगना	पित्त
पुर्जा बनना	यत्त	प्रकरण लाना	पंग
पुष्ट करना	पोश	प्रकाशन करना	पन्न

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रगट करना	पेन
प्रगट होना	पिन
प्रचार करना	रिंच
प्रतिज्ञा करना	पान
प्रतिध्वनि होना	गूंज
प्रतिभाशाली होना	ताभ
प्रतिबिम्बित करना	शान
प्रतिवाद करना	नाड
प्रतिस्पर्द्धा करना	राफ
प्रतीकार करना	हुंक
प्रत्यक्ष जानना	इंद
प्रफर करना	टीप
प्रबन्ध करना	किच
प्रबन्ध कराना	केच
प्रबल होना	टाप
प्रभावशाली होना	रिंज
प्रमादकरना	माद
प्रमाण मानना	नीप
प्रयोग करना	तिंज
प्रलय होना	शोनुस
प्रवेश करना	विश
प्रवेश कराना	वेश
प्रवृत्ति करना	लग्ग
प्रसव करना	जिंज
प्रस्ताव करना	लैद
प्रायश्चित्त लेना	पिम
प्रायश्चित्त देना	पेम
प्रार्थना करना	पाज
प्रेम करना	लव
प्रेरणा करना	धार
प्रोपेगेण्डा करना	रुंच

फ

फटकारना	पट
फटना	चर्र
फटकना	चौस
फड़कना	पंद
फंदा डालना	फंद
फबकना	फफ
फर्नीचर बनाना	शिट
फलना	फाव
फल होना (परिणाम)	फव
फसल आना	भात
फसना	फुस
फसाना	फोस
फहराना पंक । पंकु	झंडा
फांकना	फक्क
फाग खेलना	गुड
फार्म भरना	फर्म
फांसी लगना	ढिस
फांसी लगाना	ढेस
फिकना	खिप
फिट करना	मोट
फिट होना	सुट
फिरकनी खाना	गिक्क

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फिसलना	धस्स	बचना	ब्रिच
फुदकना	फुंद	बचाना	ब्रेच
फुलाना	फोब	बच्चा बनना	ब्रिब
फुसकारना	फूश	बच्चा बनाना	ब्रेब
फुसफुसाना	फस	बजना	टन्न
फुसलाना	फस्स	बटवाना	भोर
फुंसी आदि होना	गब	बड़ा करना	बेग
फूंकना	फुंक	बड़ा होना	बिग
फूटना	फुट	बढ़ना	बिड
फूट डालना	फुंट	बढ़ाना	बेड
फूलना (गुब्बारे वगैरह)	फुब	बताना	बात
फूल आना	हंस	बदलजाना	भुर
फेंकना	खेप	बदलदेना	भोर
फेरी लगाना	फूलंग	बदला चुकाना	लब्ब
फैलना	टिश	बदला लेना	टंब
फैलाना	टेश	बधाई देना	खुश
फोटो खींचना	छिंत	बनना	मिक
फोडना	फोट	बनाना	मेक
फ्रेम बनाना	चव्व	बन्दकरना	हिंड
		बफारा लेना	भाह
व		बरसना	रिन
बकवाद करना	गूभ	बरसाना	रेन
बकालत करना	बार	बराबर होना	सम्म
बखरना	गुड	बर्फ गिरना	थम
बखराना	गोड	बर्फ बनना	थिम
बगीचा लगाना	कुंज	बर्फ बनाना	थेम
बघारना	छौंक	बम फेंकना	ढोम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बलात्कार संभोग करना	थूह
बील चढ़ाना	थूज
बसना	रुह
बसाना	रोह
बहकना	बिज्ज
बहकाना	बेज्ज
बहना	बिह
बहाना	बेह
बहलाना	चुस्व
बहादुरी दिखाना	शूर
बाजार करना	जाश
बाजी लगाना	बैंट
बाट देखना	लुग्ग
बांटना / वितरण करना	फ़ुर
बातचीत करना	बित
बातचीत कराना	बेत
बांधना (लड्डू आदि)	पिंड
बांधना (पोटली आदि)	बंध
बाधा डालना	बाध
बाल आना	कच
बालक बनना	बाव
बिकवाना	झोस
बिखरना	छुर
बिगड़ना	सिड
बिगाड़ना	सेड
बिचकना	बीज
बिछना	बिछ
बिछाना	बेछ
बिजली चमकना	चम्म
बिदा देना	जेत
बिदा लेना	जित
बिलाना	बुप्प
बिहार करना	बीह
बीचमें आना	कूँक
बीड़ा देना	लाट
बीतना	बीत
बीनना	बीन
बीमा करना	बेम
बीमा होना	बिम
बीमार होना	रुग
बीमार करना	रोग
बुखार आना	फ़ीव
बुझना	फुह
बुझाना	फोह
बुद्धिमान होना	बान
बुनना	बुन
बुनवाना	बोन
बुरा मानना	ईख
बुराहोना	कत
बुलकना	बुक्क
बुलाना	काश
बूढा होना	थीम
बूंद बनना	टप्प

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बेगार करना	धुच	भनभनाना	भुन्न
बेगार कराना	धोच	भभकना	भब्भ
बेचना	झुस	भरना	भार
बेधना	बिद्ध	भला करना	भत्त
बेलना	सर	भविष्य बताना	बौड
बेलबूटानिकालना	चुंच	भस्म होना	राख
बेलेंस सम्हालना	लंथोम	भाग देना	भाग
बैठना	सिट	भाग करना	भंग
बैठाना	सेट	भागना	भिग
बोना	बप	भागजाना	भिग्ग
बोलना	इक	भाग्यवान होना	रान
बोलवाना	एक	भाडा लगना	थिंद
बौछार पड़ना	रीन, सोरिन,	भार उठाना	जाड
ब्याज देना	थुद	भारी करना	जेड
ब्याज लेना	थुंद	भारी होना	जिड
ब्यौरा देना	हूज	भावना रखना	भाव
		भाषण देना	भिश
भ		भाषण दिलाना	भेश
		भासना	भास
भक्ति अर्थात् श्रद्धापूर्वक-सेवा करना	भक्त	भिड़ना	भिड
		भिड़ाना	भेड
भगवाँ रंग का होना	हूपीद	भीख मांगना	भिक्ख
भगाना	भेग	भींगना	तर्र
भंग निकालना	बंग	भुगतना	ड्डुंड
भजन करना, भजना	भज	भूख लगना	इंट
भटकना	याट	भूनना	भून
भड़कना	फिंग	भूलना	भूस
भड़काना	फेंग	भेजना	भेज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भेजा जाना	भिज
भेंट देना	मिच
भेंट दिलाना	मेच
भेंट लेना	मैच
भेद करना	श्रक
भौंकना	भोंह
भोगलेना (कष्ट आदि)	घीश
भोग करना [इन्द्रिय विषय]	जूश
भोजन करना	इट
भ्रम होना	भूह
भ्रमण करना	लंग

म

मकान आदि बांधना	बिल्ड
मंगलाचरण करना	नम्म
मचलना	ठम्म
मजदूरी (शरीर से) करना	हीह
मंजूर करना	मंज
मजबूत बनाना	थीर
मटकना	माट
मढ़ना	मत
मड़राना	लंघूम
मंत्र पढना	मंत
मथना	मथ
मत देना	दीद
मध्यस्थ बनना	कुंक
मना करना	नुग
मना कराना	नोग
मंत्रित्व करना	मिन्त
मनुष्य बनना	मात
मयूर की तरह बोलना	कैक
मल्ल युद्ध करना	जंग
मर्यादा रखना	राम
मरना	मिट. मर,
मरोड़ना	टुंट
मसलना	मस्स
महकना	मह
महान बनना	ब्रीग
मांगना	याच
मात्रा पाड़ना	डंट
माध्यम बनना	तेजेय
मानना	माय
मानलेना चर्चामें-Suppose)	माश
मापना	मिप
माफ करना	माफ
मायाचार करना	कूट
मायामय होना	हान
मारडालना	मेट
मारना (पीटना कष्ट देना)	घात
माला बनाना	गुम्प
मालिक बनना	शाह
मालिश करना	सिप
मालिश कराना	सेप
मालूम होना	ढूंज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मांस आदि खाना	हिंस
मांस बनना	मंस
मिटना	लुप
मिटाना	लोप
मिलना	युग
मिलाना	योग
मिलाकर रखना	युंग
मिश्रित करना	मीश
मिस्त्रीका काम करना	चुन्ब
मीठा करना	मिस्म
मुकरना	मित्थ
मुक्कामारना	ढुस्स
मुकुट धारण करना	ताज
मुखशोधक वस्तुखाना	ग्रुंग
मुख्य बनना	चिन्द
मुड़ना	मुड
मुंडन करना	मुंड
मुद्रा बनाना	चंप
मुरझाना	मड
मुसकराना	हास
मुँह पीला पड़ना	फक
मूतना	मूत
मूरख बनाना	औत
मूरख होना	ऊत
मूर्च्छित करना	गेश
मूर्च्छित होना	गिश
मूर्ति बनना	मुम
मूर्ति बनाना	मोम
मूलरूप होना	मिम्म
मेवा आदि बनना	पाव
मैदान बनना	हौस
मैला होना	गुक
मोलपाना	जिन्न
मोटा करना	थेक
मोटा होना	थिक
मोड़ना	मोड
मोथला होना	मुत्थ
मोर्चा बनाना	हिन्त
मोहित करना	मोह
मोहित होना	मुह
मौन लेना	चुंप

य

यशस्वीहोना	फिम
यशस्वीकरना	फेम
यात्राकरना	यात
यादकरना	मिज
याद कराना	मेज
यादरखना	मिज्ज
युद्ध करना	ढीम
युवक बनना	यंग
योग धारण करना	जिम्म
योग्य करना	ओड्ड
योग्य होना	उड्ड

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

र

रक्षण करना	रक्ष
रखना	जग्ग
रगड़ना	रैंक
रँगना	रंग
रंगभरना	रिंग
रंगबिरंगा करना	गोन
रंग बिरंगा होना	गुन
रचना	रच
रजस्वला होना	जूज
रटना	रिट
रटाना	रेट
रमजाना	बाभ
रवाना करना	फेन
रवाना होना	फिन
रस आना	नुन्द
रसनिकालना	रीश
रसायन बनाना	जिन्द
रस्सी बनाना	त्रूत
रहना	रीह
राज करना	राज
राष्ट्र बनाना	शैम
राह चलना	राह
रिकर्ड तोड़ना	बिडविड
रिकार्ड बनना	ब्रिड
रिजर्व करालेना	रूझ
रिझाना	रेझ

रितना	रित
रियायत करना	दुम्प
रिवाज पालना	लुट्ट
रिश्वत खोरी होना	गेंट
रिश्वत देना (लुभाकर)	गूंक
,, ,, (समझौतेसे)	गांक
,, ,, (विवशहोकर)	गेंक
रिश्वत लेना (लुभाकर)	टेंक
,, ,, (समझौते से)	टांक
,, ,, (विवश होकर)	टूंक
रिसाना (रूठना)	रुश
रीझना	रिझ
रुई आदि बनना	फह
रुकना	रुक
रुख करना	मुख
रुचिकर [पसन्द] होना	रुच
रुचिकर बनाना	रोच
रुँधना	रुंध
रुलाना	रोद
रूंधना	रौंध
रूप चलाना	पर्द
रूपलेना, रूपबनाना	सेहंज
रेतना	रेत
रैपर करना	रेप
रोकना	रोक
रोटी बनाना	कुक
रोटी बनवाना	कोक
रोना	रुद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रोपना	लैग
रोम खड़े होना	कुंच

ल

लकड़ी बनना	ठुंड
लकीर खींचना	दीन
लक्षण करना	भिंप
लक्षणा करना	सग्ग
लगना	लग
लंगड़ाना	वक्क
लचकना	लिच
लचकाना	लेच
लचीला होना	लिच्च
लज्जित करना	लेज
लटकना	वाग
लड़खड़ा जाना	खिड
लड़खड़ा देना	खेड
लड़ना	लुर
लड़ाना	लोर
लथड़ना	लथ
लदना	लुड
लपिटना	लुट
लपेटना	लोट
लम्बा करना	क्षोम
लम्बा होना	तुम
लय लेना	लीम
ललकारना	भीम
ललचाना	लाम
लहरा देना	वेव
लहराना	विव
लहलहाना	ह्विव
लाइन लगाना	सफ
लांघना	लंघ
लाज आना	लिज
लाटरी भरना	तूय
लादना	लोड
लाना	बिंग
लाभ होना	लुम्ब
लाल होना	रंश
लाश बनना	मुर्द
लिखना	लिर
लिखाना	लेर
लिटाना	लेट
लिपना	लिप
लिस्ट बनाना	लिस्ट
लीनकरना	लेन
लीन होना	लिन
लीपना	लेप
लुटाना	लिंट
लुड़कना	डुड
लुडकाना	डोड
लुभाना	लौभ
लुवाना	टेक
लूटना	लुंट
लेटना	लिट
लेना	टिक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लौटना	लिट्ट
लोथ बनाना	लोथ
लोथ होना	लुथ
लोभ करना	लुभ
लौटना	गूर

व

वकालत करना	बार
वचन देना	कव्य
वटना	वाट
वरण करना	वर
वर्ग करना	यून
वर्ग बनाना	जेप
वर्गी बनना	जिप
वर्णन करना	पंत
वर्तन बनाना	अंड
वशीभूत करना	टेम
वश में होना	टिम
वंश चलना	जेज
वसना	वान
वाक्य बनाना	पून
वाणिज्य करना	जेग
वात्सल्य दिखाना	निज
वापस करना	ढिव
वापस कराना	ढेव
वापस लेना	ढुच
वापसलिवाना	ढोच
वापस होना	ढाच
वायव्य [वायुमय] होना	वीन
विकल करना	भोज
विकल होना	भुज
विकास होना	लंतीम
विखरना	छरं
„ (हवा में उड़ जाना)	टिंप
विघ्न आना	सेबाध
विचलित होना	वश
विचारना	इंक
विज्ञापन करना	टिज
विज्ञापन कराना	टेज
विदूषकी करना	नंट
विद्वान बनना	बुध
विद्वान बनाना	बोध
विधान करना	धान
विनय करना	नाथ
विनिमय करना	लान
विनोद करना	हश
विपदा आना	मुस
विपदा लाना	मोस
विरला होना	दुर्र
विलमना	रुम
विलमाना	रोम
विलाप करना	रुद
विलेपन करना	सप
विवाद करना	रद
विवेक रखना	अंक
विवेचन करना	वाच
विशेष होना	सौमं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विश्राम करना	शुंद
विश्लेषण करना	शेआक
विस्फोट होना	फौट्ट
विश्वकल्याणमय होना	सत्य, सात
विश्वप्रेमी बनना	मम्म
विश्वास करना	यास
विषैला करना	डुंश
वेतन देना	शेन
वेतन लेना	शिन
वेदना होना	तुंद
वेषलेना	रुंज
वैभव मिलना	भून
वैर करना	डुश
वैर कराना	दोश
व्यभिचार करना	ठूम
व्यवस्था करना [संचालनकरना]	क्रिम्प
व्यर्थजाना	नक
व्यवहार कराना	हाज
व्यसन लगना	रुंग
व्याख्यान दिलाना	भेश
व्याख्यान देना	भिश
व्यापना	आप
व्याप्ति होना	डुम्म
व्यायाम करना	हुंच

श

शंका करना	शंक
शब्द कहना	ईंक
शरणदेना (जीतकर)	लोन
शरणलेना (प्रेमसे)	लम्ब
,, [पराजयसे]	लुन
शरीर बनना	मूम
शर्त करना	हूम
शादी करना	मीन, मिकिन
शान्त होना	शम
शारीरिक कृत्य करना	बूश
शाला बनना	साम
शासन करना	रोज
शासित होना	रुज
शास्त्र बनाना	ईम
शिकायत करना	भाक
शिकार करना	शिंड
शिखर आदि बनना	क्रिंच
शिला बीनना	उंछ
शिल्प कार्य करना	मुम्म
शिष्टाचार पालन करना	नुम
शिष्टाचार पालन कराना	नोम
शिष्य बनना	शास
शीलसे रहना	मिख
शुद्ध करना	शोध
शुद्ध होना	शुध
शुरु करना	शीर
शुल्क लेना	गीब
शेखी मारना	मठ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शैतान बनना	कून
शोक करना	शाक
शोभित करना	शोभ
शोभित होना	शुभ
शोषण करना	हप्प
शौक होना	इंश
श्रद्धा करना	आश
श्रम करना (तनमन या वचन का)	शिह
श्रमकराना	शेह
श्रृंगार करना	शिंज

ष

षड्यंत्र करना	फोह्व
षड्यंत्र में फसना	फुह्व

स

सकरा करना [अक्ष सहित]	सक्ष
सकरा कराना (कम चौडा)	नोथ
सकरा होना	नुथ
संकल्प करना	कप्प
संकोच करना	सक
संगठन करना	कून
सघन होना	साच
संचय करना	संच
सजना	शिज
सजाना	शेज
सट्टा खेलना	झुब
सट्टा आदिकी दुकान लगाना	चिट्ट
सड़ना	सिड्ड
सताना	छट्ट
सदस्य बनना	युज
सदस्य बनाना	योज
सदाचार का पालन करना	धर्म
सन्तान होना	जिज
सन्तान पैदा करना	जेज
सन्तुष्ट करना	तोश
सन्तुष्ट होना	तुश
सन्देश देना	सन्द
सन्देह करना	मच्च
सम्मानित होना	मुन
सम्मानित करना	मोन
सपना आना	ख्वाब
सपाट करना	शाट
सफलकरना	फोन
सफलहोना	फुन
सफेदहोना	पीभ
सभा बनाना	ठंज
सभ्यता बताना	सन्त
समझना	बुंज
समझाना	बोंज
समन्वय करना	शत्त
समय होना	लल
समय देना	लाक
समर्थन करना	दाद
समवेदना प्रगट करना	सेंतुद
समाचार देना	नुज
समान होना	सम्म

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समाना	सील
समाप्त करना	चोक
समाप्त होना	चुक
समास करना	युग
समेटना	सट
सम्पादित करना	एड
सम्बन्ध होना	पेय
सम्भावना करना	माच
सम्भोग करना (सामान्य)	कम, कूम
सम्भोग करना [पुरुषोचित]	काम
सम्भोग करना [स्त्रियोचित]	कीम
सम्भोग करना (उल्टा)	वूड़
सम्हलना	थुम
सम्हालना	थोम
संयोजना करना	थंज
संयम रखना	धाम
सरकना	सर्र
सरल होना	फीह
सलाह करना	सिंक
सवार होना	जुट
सवार करना	जोट
सवार कर लेजाना	यान
संवदन करना	मन
संस्कार डालना	ढम्प
संस्थापना करना	क्रिश्च
संस्था बनना	शंज
सहन करना	फीश
सहारा देना	टेग
सहारा लेना	टिग
सहयोग करना	माज
सहायता करना	मिच्च
साझा करना	लिंग
साथ करना	संग
साधना करना	साध
साधारण होना	पौम
साधु होना [निःस्वार्थ-सेवक होना]	शंत
साफ करना	बोश
साफ होना	बुश
सामग्री जोडना	रंच
सामना करना	फिस
सामना कराना	फस
सार निकालना	शार
सावधान होना	शून
सांस लेना	दम
साहसकरना	ठाम
साहुकारी करना	ब्रिंक
सिकुडना	कुच
सिकोड़ना	कोच
सिक्का बनाना	मिंड
सिखाना	सेख
सिगनल देना	नींब
सिचना	सिच
सिझाना	पेग
सिद्ध करना	शोद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्ध होना	शिद
सिद्धान्त बनाना	वाद
सिसकना	सिस्स
सीखना	ग्मिख
सींग मारना	नुंख
सींचना	मेच
सीझना	पिग
सीधा होना	सुग्ग
सीढ़ी चढ़ना	टौंप
सीना	शाड़
सीमा बांधना	हद
सुखाना	सोक
सुखी होना	शिम्म, सुंख
सुखी करना	शेम्म
सुगन्ध आना	सोय
सुंघाना	सोंढ
सजाना	सोज
सुडौल होना	हुर
सुडौल बनाना	होर
सुधारना	मिक्क
सुन्दर होना	हूर
सुनना	सुन
सुनाना	सोन
सुन्न करना	नुन
सुन्न पड़ना	नोन
सुभीता करना	टिम्र
सुलझना	निढ
सुलझाना	नेड
सुलाना	सोप
सुहाना	सौन
सूखना	सुक
सूंघना	सुंघ
सूचना देना	सूच
सूजना	सुज
सूझना	लुक्क
सूत्र बनाना	शुत्त
सूराख करना	कीर
सेक्रेटरी बनना	झुंव
सेंधना	सैंध
सेंकना	तिम्प
सेवा करना	सिव
सेवा कराना	सेव
सैर करना	गाद
सोना	सुप
सौंपना	सौंप
स्तुति करना (गुणगान)	पज्ज
स्थानगृद्धि लेना	शंसुप
स्थान होना	सस
स्थगित होना	लेलंट
स्थानान्तर करना	मोब
स्थानान्तर होना	मुव
स्थानापन्न होना	भाद
स्थापना करना	थास
स्थिर करना	धार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्थिर रखना	थेर
स्थिर रहना	थिर
स्पर्श ज्ञान होना	टंच
स्पष्ट करना	लुंक
स्याही लगाना	रंग
स्वर निकालना	टुन्न
स्वतन्त्र होना	मुच्च
स्वागत करना	मन्न
स्वाद लेना	रिस
स्वाद आना	रिस्स

ह

हकलाना	गिग्ग
हगना	गुव
हगाना	गोव
हजामत करना	छुर
हजामत कराना	छोर
हटना	हुड
हटाना	होड
हठकरना	ठम्भ
हड्डी बनना	ठुड
हरना	नीर
हल करना	लेह
हल होना	लिह
हवाई यान बनना	फीर
हवाचलना	विन
हवा चलाना	वेन
हँसना	हिस
हस्ताक्षर करना	हंग
हंसाना	हेस
हँसी करना	हुंस
हँसी उड़ाना	हुस्स
हाँकना	लाड
हाजिर होना	हज्ज
हानि होना	मुग्ग
हांपना	हेंह
हारना	छय
हिचकी लगना	हुच्च
हिचकना	हिच्च
हिजरत करना	लोयात
हिज्जे करना	हुज्ज
हिम्मत करना	हिम्म
हिसाब पूरा या ठीक करना	चौक
हिंसा करना	डिंड
हुंडी करना	हुंड
हुलिया करना	पंत
हल्लड मचाना	हुम
होना	लस
होना (है)	अस
होश में आना	हुश
होश में लाना	होश

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आचो-अनुवाद

सत्यसमाजपे औनर-युजो

अमपे पानोखे

१—अम सत्यसमाजपे पुम-धर्म-सम्मभावोगे मायल। अम धर्मपेर टिप्पोजे शुम धर्मगे नुगं धुपले, टुंगोमारं शत्तोगे घटले।

२—अम पुम मानफे कन जिजोजिपो-लोशिदोगे यासल। मीनोते मीनोउड रमखे, इटोते इटोउड रमखे, शोबिंडं शेन गइंकल, नुगं जिजोजिपो। चुम मानखे जिजोजिपो-हिंडोगे नुगं माग्रू उडइटो-मीनो-हाजोगे कुरले, अम उमघे दादले।

३—अम रुलुट्टोफे दासोगे नुगं दादले। सत्यसमाजपे फूनुगोपे सारं मिक्रोगे रम्बले। चं शुम रुलिट्टोमिंचो जाजगे लसोल भं अमटे खिडले तं उमगे एमपे ब्रुकोगे मायले।

४—अम सत्यसमाजपे गाजीन जित्रोशुत्तोघे यासल। अम उमफे दादर। अम टुंगोपारं उमफे नरोगे घटले।

५—अम अंकोगे पुम ईनोफे डेगं सुवत्रीगगे मायल। तकं चुसं अमपेर अंको नुगं कज्जले, जुसं सत्यामृतगे (सत्यशोमिससगे-जिम्मर सत्यभक्त रचगेलर मानधर्मीनगे-) नीपले।

६—अम पुमधर्मपे धर्मरीहघे टुंगोसारं मोनले, तकं पुमधर्म शत्तोपे भं इंकोपे लुकोरसं सत्यसमाजपेर धर्मरीहगे सौमं मायले।

७—अम एमगे धर्मपेरो भं समाजपेरो लुकोरसं सत्यसमाजपेरगे मायल; टेटं सत्यसमाजपेर मानघे सौमामिमं ग्रं सौमसमाजं मायले, भं जाजोसारं अम एमगे सत्यसमाजपेरं चेवले।

कोलो — हंगो

पातो — चिवो

युजो मंजो

इमपे सत्यसमाजयुजो गेमजल।

कोलो — सत्यभक्त

ससो — सत्यसमाज-शोशिरर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सत्यसमाज की अनुमोदक सदस्यता

मेरी प्रतिज्ञाएँ

१—मुझे सत्यसमाज का सर्वधर्म-समभाव सिद्धान्त मान्य है। मैं धार्मिक पक्षपात से किसी धर्म की निन्दा न करूंगा, यथाशक्य समन्वय की कोशिश करूँगा।

२—मुझे सब मनुष्यों की एक जातीयता के सिद्धांत में विश्वास है। विवाह में विवाहयोग्य गुणों का, भोजन में भोजन योग्य गुणों का अधिक से अधिक विचार होना चाहिये जातिपांति का नहीं। जो लोग जातिपांति के बन्धन न मानकर योग्य रोटी बेटी व्यवहार करेंगे उनका मैं समर्थक रहूँगा।

३—मैं कुरूढ़ियों की गुलामी का समर्थन न करूंगा, सत्यसमाज के निर्देश के अनुसार सुधारकता का परिचय दूंगा। अगर किसी कुरूढ़ि का छोड़ना आवश्यक होनेपर भी मेरेलिये कठिन होगा तो मैं इसे अपनी कमजोरी मानूंगा।

४—सत्यसमाज के चौबीस जीवन-सूत्रों में मुझे विश्वास है। मैं उनका समर्थक हूँ। यथाशक्य उनके पालन की कोशिश करूंगा।

५—मैं विवेकको सब शास्त्रोंकी अपेक्षा अधिक मानता हूँ फिर भी जहां मेरा विवेक काम न देगा वहां मैं सत्यामृत—सत्यसमाज संस्थापक स्वामी सत्यभक्त विरचित मानवधर्मशास्त्र—को प्रमाण मानूंगा।

६—सब धर्मों के धर्मस्थानों का मैं यथाशक्य आदर करूंगा फिर भी सवधर्म-समन्वय और परिपूर्णता की दृष्टि से सत्यसमाज के धर्मालय [सत्यमन्दिर] को विशेष रूप में मानूंगा।

७—मैं अपने को धार्मिक और सामाजिक दृष्टि से सत्यसमाजी मानता हूँ इसलिये सत्यसमाजी लोगों के साथ विशेष कौटुम्बिता या सामाजिकता रक्खूंगा और आवश्यकतानुसार सत्यसमाजी के रूप में अपना परिचय दूंगा।

तारीख हस्ताक्षर उम्र

पता परिचय

सदस्यता स्वीकृति

आपकी सत्यसमाज-सदस्यता मान्य की गई है।

तारीख सत्यभक्त

सत्याश्रम संस्थापक—सत्यसमाज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीमो-पद्य

गेगे (बत्तीस मात्रिक)

हे सत्येशा हे मम्मेशी; सत्योजीमा मम्मोजीमी ।
हे शोममा शोममी पुमपे, हे शाहीमा हे शाहीमी ॥
इमफे नामो अमफे मनुधे शोचू नेपापोल समिम्मं ।
मिकू मानधे सत्यभक्तछे सोभत्तोगे गिवोल जिम्मं ॥१॥

हे सत्येश्वर, हे विश्वप्रेम की ईश्वरी, हे सत्यदेव, हे विश्वप्रेम की देवी, हे सबके परमपिता, हे सबकी परममाता, हे सब से महान स्वामी, हे सब से महान स्वामिनी, तुम्हारा नाम हमारे हृदयों को पवित्र करके जड़मूल से निष्पाप करदे ! मनुष्यों को सत्यका भक्त बनाकर योगीजीवन के साथ कल्याण दे ।

टीकि (१६+११ मात्रिक)

हे सत्येशा हे मम्मेशी मनुते सोइन्नोल ।
केमंचू शोचोल जिवोगे जीव जिवं जिन्नोल ॥२॥

हे सत्येश्वर, हे विश्वप्रेमेश्वरी (भगवती अहिंसा) मनमें पधारो । जीवन को उदार बनाकर पवित्र करो । प्राणी जीवन्मुक्ति प्राप्त करें ।

चीकि (१३--११ मात्रिक)

सोभत्तोगे चं इशल मिको-इशल नन्दंक ।
तं भजोल सत्येशगे मिकोल मनुके अंक ॥ ३ ॥

यदि कल्याण चाहते हो, यदि देवता बनना चाहते हो तो सत्येश्वर को भजो, जिससे मन विवेकी बनजाये ।

अंको मानोगे असल पुम धर्मोंफे मिम्म ।
चुम अंकोगे डानलू जुम मिकलू बोधिम्म ॥ ४ ॥

विवेक मनुष्यता है और सब धर्मों का मूल है । जिसने विवेक पालिया वह विद्वानों का शिरोमणि बनगया ।

चुलं मान अंकीरगे जुलं ओम अंकाम ।
नंगं अंकोपे चुलं जुलं ओम ऊतांम ॥ ५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जब मनुष्यविवेक से भरा हुआ है तब इन्सान है, जब विवेक से हीन है तब हैवान (पशु) है ।

मनु मिकोल अंकीरगे मान पुलं धामोल ।
जाम लुकसदे तं उवू सूतलुकस लक्खोल ॥ ६ ॥

हृदय अगर विवेक से भरा हुआ हो, और मनुष्य सदा संयम का पालन करे तो स्वर्गलोक नीचे उतरकर पृथ्वीतलपर दिखाई देने लगे ॥

डीडि (सोलह मात्रा का छंद)

पुम धर्मों छम्पो सन्तोफे । पुम किंजो पोजो पंतोफं ।
कन शारोके पुम पे शिम्मौ । दुख घूपोदे शिम्मो चिम्मौ ॥ ७ ॥

सब धर्मों, संस्कारों और सभ्यताओं का, सब साम्प्रदायिक नियमों पूजाओं, और वर्णनों का एक ही सार है सब का सुखी होना, दुख रूपी घोर अन्धकार पर सुख की किरणें फेंकना ॥

चीक्रि (१३-११ मात्रिक)

कन अंचो पुम मानफे झत्तोगे मुंचोल ।
पुमते शीमोगे भिपू मसिं पुलं लवोल ॥ ८ ॥

सब मनुष्यों का आकार एक है, जातिपांति मानना छोड़ो ।
सब में जाति की दृष्टि से समानता पहिचानकर सदा परस्पर प्यार करो !

नारानारी कन असल नंगमठो नोधिन्न ।
वेरोजे मीसं पुलं पुमंगान नोभिन्न ॥ ६ ॥

नर और नारी एक हैं । लिंगमद अनुचित है ।
सदा परस्पर पूर्त्ति करने से [पूरक होने से] दोनों अभिन्न हैं ॥

इक दाद [अष्टाक्षरी-श्लोक]

सोपापघे मिथो डिंडो चुरो अं धर्मनोसघे ।
उमझे पुमठे दुक्खो उमखे मानफोसघे ॥ १० ॥

झूठ, हिंसा और चोरी ये बड़े पाप हैं और धर्म का नाश करने वाले हैं, इनसे सभी के लिये दुःख है, ये मनुष्य को फसानेवाले हैं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गीदि [गीति आर्या]

रूजूशो मेजूशो गुशो रुश्रनों सपापकज्जोखे ।
सोपापढे दुरौंटे पेलं मुंचोल पाप मिम्मोवे ॥ ११ ।

दुर्भोग, अतिभोग, अतिसंग्रह, दुरर्जन, ये ऐसे कार्य हैं जिनमें पाप होता है [सपापकार्य] बड़े पापों से बचने के लिये इन पापमूलों को जल्दी छोड़ो ।।

डिंडो मिथो चुरो अं गुशो रुभनों रुजूश मेजूशो ।
अमब्रुम सोभत्तोटे चोकं मुंचोल तेन पापोवे ॥१२॥

हिंसा झूठ चोरी, और अतिसंग्रह दुरर्जन [अनुचित तरीके से धन पैदा करना] दुर्भोग (बुरेभोग) अतिभोग ये सात पाप, अपने और दूसरों के कल्याण के लिये, पूरी तरह छोड़ो ॥

कनं दूदू [२८ मात्रिक–हरिगीतिका]

मूगो मरोपे सम्मके मुंचोल मूरोगे पुलं ।
नुंगं शिहांपे तीमलू लंगेतते कुमके कुलं ।
अर्नू शिहोजे शैन खादल नुसल अंकामो नुकं ।
मनजे इकोजे मूमजे कज्जोल रूनामो नुकं ॥१३॥

आलस्य मौत के समान है । सदा आलस्य छोड़ो ! परिश्रम के बिना संसार में कब किसने उन्नति की है ? परिश्रम से पैदा करके खाना चाहिये, नहीं तो मनुष्यता नष्ट होजाती है । मनसे वचन से शरीर से उपयोगी काम करो, नहीं तो बदनामी है ।

बूबू [तीस मात्रा का छन्द]

धीरोल पुलं शूरोल पुलं टुंगोल पुलं मानोटे ।
फीशोल पुलं मिंचोल पुलं मंचोल लवो-आनोटे
ढिरोंल नुगं भिग्गोल नुगं हीडोल नुगं ठानोटे ॥
रामोल पुलं धामोल पुलं आमोल जिवोचानोटे ॥१४॥

मनुष्यता के लिये (यदि मनुष्यता चाहते हो तो) सदा धीरज रक्खो ! सदा वीरता दिखाओ ! सदा ताकतवर बनो ! प्रेम को बुलाने के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लिये, सदा सहन करो ! सदा त्याग करो ! उदार बनो ! अपनी आन (टेक) रखने के लिये कायर मत बनो ! भाग मत जाओ ! छिपकर न रहो जीवन की कारीगरी करने के लिये मर्यादा की रक्षा करो ! संयम रक्खो ! आदर्श बनो !

गूगू (२२ मात्रा का छन्द)

घीटिर मिकोल बाधोखे फिरले नूनं ।
मूरोजे पुम बाधोखे फिरले थूनं ॥
आशोल नुगं रानोगे चिंठल रानो ।
घीटोजे इम टेमोल ऊमगे वानो ॥ १५ ॥

पुरुषार्थी बनो, बाधाएँ अवश्य उड़जायँगी, आलस्य से सब बाधाएँ वर्गाकार [गुणाकार] रूपमें बढ़ जायँगी। भाग्य की आशा न करो, भाग्य तो ठगता है, पुरुषार्थ से तुम भाग्य को वश में करो, यही बुद्धिमानी है।

टूटू (२५ मात्रा का छन्द)

लंगेतके लंतमिले आशोल तमिोगे ।
लंगेत लसले शिम्मतर सीनेल जीमोगे ॥
पुम मानखे धामिर मिकू मीसं सुकन्दीले ।
लंगेत कनमिमगे मिकू सूतं सुनन्दीले ॥ १६ ॥

संसार का विकास होगा, उन्नति की आशा करो । संसार [आज की अपेक्षा] अधिक सुखी होगा उसे दिव्यता प्राप्त करना है। सब मनुष्य संयमी बनकर परस्पर सदुपकार किया करेंगे, संसार एक कुटुम्ब बनकर देवों की तरह अच्छा आनन्द किया करेगा।

गीदि (गीति आर्या)

सिवेर धामिर बुधखे नायं रोजोल मानघे शंतं ।
डेगं सूतंतोपे सूरोजर पुलं लसल सुवसतगे॥ १७ ॥

सेवा करना जिनका स्वभाव है, जो संयमी हैं विद्वान हैं वे विनय के साथ साधुता (निस्वार्थता) से मनुष्य पर शासन करें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अच्छे शासनतंत्र की अपेक्षा सुशासक अधिक अच्छा होता है।

शैन लुपल ढीमोख डंजो चोकोल पुलं लूरोवे।
शोडंकाज लुकसपे मिकोल टुंगिर लसोल नेटिप्पिर ॥१८॥

युद्धों को मिटना चाहिये। न्याय सदा झगड़ों का अंत करे। जगतका सर्वश्रेष्ठ न्यायालय बलवान बने, और पक्षपातरहित हो।

गानं डीडि (१६ मात्रा का दूसरा छन्द)

लसोल धामो लसोल धूनो। धर्मोधनफे लसोल कूनो।
सुवतम धूनो बिडोल दामं। सूत जामगे लुकोल लामं॥ १६॥

संयम हो, वैभव हो, धर्म और धन का संगठन हो। नीति के अनुसार अधिक से अधिक वैभव बढ़े! देव ललचाते हुए पृथ्वी को देखें।

गूगू (२२ मात्रा का छन्द)

मेकोल कन इको मानलुकसते पुमपे।
मेकोल शैम कन मानलुकसते पुमपं।
मेकोल कन मिमो मान लुकसते पुमपे।
सूतमजिन्नो इन्नोल जिवोते पुमपे ॥२०॥

मानव जगत में सब की एक भाषा बनाओ! मानव जगत में सब का एक राष्ट्र बनाओ! मानव जगतमें सबका एक कुटुम्ब बनाओ। जिससे सबके जीवन में स्वर्ग मोक्ष आजायें।

वीथि (२० मात्रा का छन्द)

पुम मिकोल कज्जजिस्म-सत्यभक्तगे।
पुम मिकोल नेमठगे एग्रायत्तगें॥
सजुमं कज्जोल पुलं शिम्मरिनोटे।
जिज्जसम्मभावोजे जिन्नडिनोटे॥ २१॥

सब लोग कर्मयोगी, और सत्यकी श्रद्धापूर्वक सेवा करने वाले बनो! सब लोग अहंकार शून्य, ईश्वर के औजार या पुर्जा बनो! सुख की वर्षा करने केलिये, अवस्था समभावसे मोक्ष पुरुषार्थ में पगजाने के लिये, उत्साह के साथ काम करो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

टीडिंतू (१५-१६-२७ मात्रा का गीत)

मिकले शिम्मिर मानसमाज
मानो वानो नुगं चुरंले मिकले शिम्मोयाज ।
मिकले शिम्मिर मानसमाज ॥ १ ॥
चकं कलं आपिल पापामो ।
मूरीहमं असल ऊतामो ॥
तकं राजले पेलं ढेलं मानो सुमिकू राज ।
मिकले शिम्मिर मानसमाज ॥ २ ॥
पुम मानखे सीनले धामो ।
कुमलं नुगं मुंचले रामो ॥
मानलुकसगे मेकू कनमिम मिकले सूतं हाज ।
मिकले शिम्मिर मानसमाज ॥ ३ ॥
सत्यभक्त यामदे इन्नले ।
सिन्दोघे यामटे बिंगले ॥
अंकामो-तारोटे घटले मिकले भत्तोपाज ।
मिकले शिम्मिर मानसमाज ॥ ४ ॥
मूमेकुंजं मूलंवासं ।
किलों कुलों मेतपू सहासं ॥
पुम तुंदोघे पितू एँजले मानोगे जथताज ।
मिकले शिम्मिर मानसमाज ॥ ५ ॥

मानव समाज सुखी बनेगा ।
मानवता और बुद्धिमत्ता का दिवाला न निकलेगा ।
वे सुख के कारखाने बनेंगे । मानव समाज सुखी बनेगा ॥ १ ॥
यद्यपि आज शैतानियत सब जगह भर रही है ।
हैवानियत घर घर में मौजूद है ।
फिर भी जल्दी या देर से मानवता अच्छी रानी बनकर राज्य करेगी ।
मानव समाज सुखी बनेगा ॥ २

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सब मनुष्य संयम पायेंगे।
कभी भी मर्यादा का त्याग न करेंगे।

मानव जगत को एक कुटुम्बी बनाकर दिव्यता का व्यवहार करनेवाले बनेंगे। मानव समाज सुखी होगा ॥ ३ ॥

सत्यभक्त (सत्येश्वर की श्रद्धापूर्वक आज्ञा मानने वाले) पृथ्वी-पर आयेंगे। पृथ्वी के लिये सन्देश लायेंगे। मनुष्यता के उद्धार के लिये कोशिश करेंगे, भलाई के प्रार्थी बनेंगे। मानव समाज सुखी बनेगा ॥ ४ ॥

हर एक जंगल में, हर एक बस्ती में, मुसकराते हुए रातदिन घोर तपस्या करके, सम्पूर्ण वेदनाओं को पीकर, वे मानवता को विजय मुकुट पहिनायेंगे। मानव समाज सुखी बनेगा ॥ ५ ॥

गीदुंदू (१२-२८-२८ मात्रा का गीत)

मानइको कन मिकले।
सनगे मूमनचे योगोटे कनं मानखे इकले।
मानइको कन मिकले ॥ १ ॥

कनमानोटे शिहो मानफे इको कनोजे शिकले।
मनफे दूरो दुरले पेलं लवोसुकात सिथिकले।
मान इको कन मिकले ॥ २ ॥

मनंचिवो बेडले लवोगे भूहदुशोखे निकले।
मनफे पुम घुम्पोखे थुवले मनके वुशले झिकले।
मानइको कन मिकले ॥ ३ ॥

ल्यासिचोजे जिवोकुंजते सूतसाजिनो पिरले।
ऊमं कनं इकौजे पुमखे शोनन्दोजे चिकले।
मानइको कन मिकले ॥ ४ ॥

मानव की भाषा एक बनेगी।

हृदय को प्रत्येक हृदयसे मिलाने के लिये मनुष्य एक तरह से बोलेंगे। मानव की भाषा एक बनेगी ॥ १ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक मनुष्यता के लिये कियेजाने वाला श्रम मनुष्यों की भाषा की एकता से आधा रहजायगा रहजायगा । हृदयों का अन्तर जल्दी दूर होजायगा, प्रेम की सुन्दर डोरी ठीक तरह से मोटी होजायगी । मानव की भाषा एक बनेगी ॥ २ ॥

दिली जानपहिचान प्रेमको बढ़ायगी, भ्रम और द्वेष निकल जायँगे, हृदय की सारी कालिमाएँ धुल जायँगी, हृदय स्वच्छ होजायगा, सफेद होजायगा । मानव की भाषा एक बनेगी ॥ ३ ॥

प्रेम के सिंचनसे जीवन के कुंज में स्वर्ग और मोक्ष पकेंगे । इसप्रकार एक तरह से बोलनेसे सब लोग सर्वोत्कृष्ट आनन्दसे छक जायँगे-तृप्त होजायँगे । मानव की भाषा एक बनेगी ॥ ४ ॥

शुद्धि अशुद्धि

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६	१७	ओ ओ	ओ औ
२६	१६	गुममा	शुममा
४१	६	कोन	कन
,,	७	गोन	गान
,,	१०	कोलें	कलें
,,	,,	कोलूं	कलूं
,,	११	गोलें	गालें
,,	,,	गोलूं	गालूं
,,	१२	चोलें	चिलें
,,	,,	चोलूं	चिलूं
,,	१३	जोलें	जलें
,,	,,	जोलूं	जीलूं
,,	१४	कोलं	कलं
,,	२५	अलो	आलो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पृ.	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४२	१३	बोन	बौन
,,	१४	बोडेलो	बौडेलो
,,	,,	फोडेलो	खंडेलो
,,	,,	भोडेलो	घांडेलो
,,	१५	होडेलो	छिंडेलो
४४	२७	ऐलिरसं	सलिरसं
४६	१	डसे	इसे
,,	१८	कोन	कन
,,	,,	कोनं	कनं
४९	२४	नुकं	नुक्कं
५०	१६	ते	तं
,,	२२	अर्थ	आगं
५१	१८	ढे	ढो
,,	२४	सिनलवं	मिनलवं
५५	१	इर	ईर
,,	२	रसिर	रसीर
,,	३	हठिर	हठीर
,,	६	कोनप	कनप
,,	,,	गोनप	गानप
,,	,,	चोनप	चिनप
,,	,,	पोधोनप	पोपोनप
,,	१०	फोनप	पोवौनप
,,	,,	सोनोप	झौंनेप
,,	११	साथ लगाने	साथ प लगाने
,,	१३	करनेके	करने आदिके
७९	९	कपीत	कपीत, झास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पृ.	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७२	१०	चिपीत	चिपीत, थमु
,,	,,	जीपीत	जीपीत, थिम
,,	,,	टुपीत	टुपीत, थेमग
७३	१०	स्मिट	उगिट
७४	१०	इटत	इटेत
,,	,,	थली–गइट	थाली–गाइट
७५	३	रीहम, वास	रीहम
७२	१८	कीकाद	कीकुरद
८३	२	बिह	बिह, फर,
,,	२१	पह	फह
८४	१	गिमसूत	गीमसूत
,,	४	पाद	पादवाक
,,	५	गोपाद	गानपाद
,,	,,	जोपाद	जीनपाद
,,	,,	डोपाद	डूनपाद
,,	१२	सिडु	सिडुज
१०१	१३	चमि	चीम
१०२	२०	टीडिंगू	टीडिंगे
१२२	२५	शास	झास
१२४	१६	गाली देना	गाली दिलाना
१२८	५	निन्दा करना	निन्दा होना
१३०	६	कम करना	कम कराना
१४१	२९	लाभ	लोभ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूर्ति [जोड़ तोड़]

पृ. २०-पुरुषवाची सर्वनाम में जोड़िये—एम—निज, स्व।

पृ. २६ की १२ वीं पंक्ति के आगे जोड़िये--

कोई— शुम शुमा शुमी

१४ वीं पंक्ति के आगे जोड़िये—

पर इससे दूसरा अर्थ होता हो तो ऐसा प्रयोग न करना चाहिये।

पृ. ३८-अत्यन्तार्थक का छेदक (पैरा) निकाल दीजिये।

पृ. ४१ की १६ वीं पंक्ति के आगे निम्नलिखित वाक्य जोड़िये।

काल की निरन्तरता के लिये कालवाची 'ल, को द्वित्व कर लेना चाहिये। लल्लं—लगातार निरन्तर। आदि।

,, २४ वीं पंक्ति के आगे जोड़िये—

अलो—काल की सब से छोटी मात्रा

२८ वीं पंक्ति के आगे जोड़िये—

कोलों—तारीख। इलो—जमाना।—

ऊल्लो—युग। रिनूलो—वर्षा का एक झला।

पृ. ४३— १५ वीं पंक्ति के आगे जोड़िये-

ससं -लगातार (क्षेत्रकी दृष्टि से)

पृ. ४५— पृष्ठ के अंतमें जोड़िये

उघं-थोक। छर्र-फुटकर। कुमं-किस तरह।
कुमयं-किसी तरह। ऊमं-इसतरह। ओमं-उस तरह।
चुमं-जिसतरह। वुमं-दूसरी तरह। आदि।

पृ. ४७ आठवी पंक्ति में से निकालिये!

चं--भी, पं--ही, रं--सिर्फ।

जोड़िये—नूंन - निश्चय से। सिर्फ--सिर्फ

पृष्ठ के नीचे जोड़िये!

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्मूरं--करीव करीव । नातिं- इत्यादि ।
नूकनं--प्रत्येक ! खनं-वार ।

पृ. ४६ सातवीं पंक्तिमें जोड़िये !
कूंकं--मध्यमें । एटं--काम से निकट ।
१८ वीं पंक्ति के बाद जोड़िये-भं-भी । दं-ही ।

५१ छट्ठी पंक्ति के बाद जोड़ये-
प्रकरणान्तर सूचक--लसं

५२ उपसर्गों में जोड़िये ।
स-सहित । र-रहित । मे-अति ।
हु-अनु । नू-प्रति । फू-उप । हं--फिर, दुबारा ।
रं-विकार । लू-पहिले । मू-प्रत्येक ।
लं-पारि, आसपास । नि-गैरबराबर ।
शं--विचित्रता ।

पृ. ५३— २० वीं पंक्ति के आगे जोड़िये
कर्ता में विभक्ति चिन्ह अलग भी किया जासकता है।
खादलेर-जो खायगा वह । खादर खानेवाला ।
विशेष काल के प्रयोग भी इसी तरह बनाये जासकते हैं—
खादीलेर -- जो खाया करेगा वह ।
२५ वीं पंक्ति के आगे जोड़िये ।
अगर अर्थभ्रम न होता हो तो 'ए' को विकल्प से हटाया जासकता है ।
गुवेतु, गुवतु । लिरेदु, लिरदु । आदि ।

पृ. ५५ सातवीं पंक्ति के बाद जोड़िये —
संख्यावाचक शब्दों के पीछे अगर 'उर' प्रत्यय लगाया जाय तो उसका उतने गुणा अर्थ होजाता है । जैसे-गानुर--दूना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

,, १६ वीं पंक्ति के बाद जोड़िये—

(ओ) समुदाय अर्थमें 'ऊघ' प्रत्यय लगाते हैं। मान+ऊघ=मानूघ=जनता ।

(औ) दो पदार्थों की तुलना में किसी एक को अधिक बताना हो तो 'तर' प्रत्यय, और दो से अधिक पदार्थों की तुलना में किसीको अधिक बताना हो तो 'तम' प्रत्यक लगाते हैं। कततर—उससे बुरा। कततम—सब से बुरा।

[अं] कोई खास काम करने के अर्थ में यर प्रत्यय लगाते हैं। धनयर—खजाने का काम करने वाला-खजानची ।

पृ. ६१— प्रारम्भकी ६ पंक्तियाँ निकालिये।

पृ. ७२— यथास्थान ये शब्द जोड़िये।

भाफ—डूपीत । शहद—भन्नामिस्स ।

अमृत—जेवामिस्स, शोमिस्स ।

मसाला —रिस्सट, रिस्सेट ।

पृ. ७३— नववीं पंक्ति के आगे जोड़ये।

सिमइयाँ टैसरग। फरा—टासरग

अंतिम पंक्ति में जोड़िये। वर्तन—भंड

पृ. ७४ अंतिम पंक्तिमें जोड़िये। वलन—सर, सरेज

पृ. ७५ छट्ठी पंक्ति के आगे जोड़िये—घोंसला—फुररीह

अन्तिम पंक्तिमें जोड़िये-टावर—मोछद

पृ. ७६— पहिली पंक्तिमें जोड़िये-मीनार-मोकिंच

,, १६ वीं पंक्ति में जोड़िये—

घासका छप्पर—कूछाद। टीन आदि की चादर—कोछाद। पाटिया—चीरग, कंछाद।

,, २६ वीं पंक्ति के दूसरे कालम के बाद जोड़िये--

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पेंचकस—इककसज। बरमा—शेछेउज। बोरिंग—होछेदो।

पृ. ७६ पहिली में जोड़िये! दर्पण—शानेत। खोखा—टोहिन्ड।

छट्टी पंक्तिमें जोड़िये—रिम्मु—खिलौना रिम्मी—गुड़िया।

पृ. ८० २६ वीं पंक्तिमें जोड़िये—काइट—साधारण मुँह।

चाइट—चोंच

पृ. ८३ २४ वीं पंक्तिमें अंकेत के आगे

मान लिखो। ऊतेत के आगे ऊत

२५ वीं पंक्ति में पौमंत के आगे रेजीव

चिंठाम के आगे कूत जोड़िये!

पृ. ८६ में वायुलोक आदि पूरी पंक्ति निकालिये

,, ९० जोड़िये—आवृत्ति—इन्नूरो

९१ २१ वीं पंक्ति के बाद जोड़िये—

विवरण—शेहूजो। कुतुबनुमा-औरेक

,, अन्तमें जोड़िये—जनता—लोमान।

जनतन्त्र—जोमानतन्त। वर्गतन्त्र—जिपतन्त्र।

अधिनायकतन्त—मुक्चिमतन्त।

९६ १३ वीं पांक्ति में जीवोटेरो के बाद जोड़िये—

चीटो। स्वर्ग—सूतस

१४ वीं पंक्ति में भाग्य के पहिले जोड़िये—दैव।

पृ. ९९ की ८ वीं पंक्तिमें—परिस्थिति—लंलिज्जो।

,, १४ वीं पंक्तिमें जोड़िये—सूत्र—शुत्त

पृ. १२७ ५ वीं पंक्ति के दूसरे कालम में जोड़िये—

दाम—नीति का पालन करना

१२८ दूसरे कालम की १९ वीं पंक्ति के बाद जोड़िये—

नीम—ध्येय बनाना

१३० दूसरी पंक्ति के बाद जोड़िये—नुन—सुन्न पड़ना।

नोन—सुन्नकरना।

१३४ १५ वीं पंक्ति के बाद जोड़िये—बूड—दैवमानना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पृ. १२७ के दूसरे कालमकी १२ वीं पंक्ति के आगे जोड़िये—
यश—विश्वास रखना। युंश—वफादार रहना
१३८ दूसरे कालमकी १९ वीं पंक्ति के बाद जोड़िये—रीज—अधिकार करना।
१४० के दूसरे कालम की २० वीं पंक्तिके बाद जोड़िये
लुम्भ—स्वार्थी बनना।
पृ. १४६ २९ वीं पंक्ति के बाद जोड़िये—
अधिकार करना—रीज
१५१ में दसवीं पंक्ति के आगे जोड़िये
कृतघ्नबनना—सत्तनोस। कृतज्ञरहना—सत्तजेव।
१५३ से दूसरे कालम की २३ वीं पंक्ति के आगे जोड़िये-
चकचौंधआना—मेरेचम
पृ. १६० २२ वीं पंक्ति के बाद जोड़िये-दैवमानना—बूड।
पृ. १६२ १० वीं पंक्ति के बाद जोड़िये-निर्णयकरना—सेनेस।
१६ वीं पंक्ति के बाद जोड़िये—नीतिका पालन करना-दास
दूसरे कालम की ९ वीं पंक्ति के बाद—नौबत आना—रेचंस
पृ. १६६ दूसरे कालम की ८ वीं पंक्ति के बाद जोड़िये-
बढ़ईगिरी करना—खुड
१२ वीं पंक्ति के बाद जोड़िये—वफादार रहना-युंश
पृ. १७४ से दूसरी पंक्ति के बाद जोड़िये-विश्वास रखना—यश
पृ. १७८ —१० वीं पंक्ति के आगे जोड़िये—स्वार्थी बनना—लुम्भ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

[शेष पृष्ठ २ से आगे]

विन्दृत सिन्धू [मराठी]	॥।)	मुसलिम भाइयों से	≡)
लिपिसमस्या	।)	भावना गीत	=)।।
बोधगीत	॥)	ईसाई धर्म	।–)
नईदुनिया का नया समाज	।=)	वन्दना	॥=)
		सूरज प्रश्न	॥।=)
अनमोलपत्र	।≡)	विवाह पद्धति	≡)
मानवभाषा	२)	क्यों सलाम करूं	≡)
क्या संसार दुःखमय है	।)	सुलझी हुई गुत्थियाँ	।=)
सत्यसमाज और विश्वशांति	=)	शीलवती	=)।।
आत्मकथा	१।)	कुरान की झांकी	।)
म. राम	।)	सत्यभक्त सन्देश	=)

इन पुस्तकों का तथा अन्य पुस्तकों का विवरण जानने के लिये सूचीपत्र मंगाइये।

सङ्गम [मासिक पत्र] वार्षिक मूल्य ३)

धार्मिक सामाजिक राजनैतिक आर्थिक सांस्कृतिक आदि सभी समस्याओं पर अनुभव और तर्कपूर्ण सन्देश देनेवाला पत्र।

सत्याश्रम वर्धा